# मुल्ला वजही

●

# कुतुब मुशतरी

सम्पादक
विमला वाघ्रे
नसीरुद्दीन हाशमी

दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद

प्रकाशक :
विमला वाघ्रे एम्. ए.
मन्त्री दक्खिनी प्रकाशन समिति
बशीरबाग रोड, हैदराबाद (दक्षिण.)

प्रथम संस्करण १००० दिसम्बर १९५४

मूल्य ५-०-० रुपए

मुद्रक : हिन्दी प्रेस
हिन्दी प्रचार सभा, हिन्दी भवन, हैदराबाद (दक्षिण)

# विवरण

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा इदारे अदबियाते उर्दू, हैदराबाद के संयुक्त प्रयत्नों से दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति की स्थापना ६ अक्तूबर १९५३ को हुई। समिति के पदाधिकारी तथा सदस्य निम्न प्रकार हैं :—

(१) डाक्टर बी. रामकृष्णराव
(मुख्य मन्त्री हैदराबाद राज्य) अध्यक्ष

(२) श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त आई. ए. एस.
(शिक्षा सचिव, हैदराबाद राज्य) उपाध्यक्ष

(३) डा० एस. एम. क़ादरी ज़ोर एम ए. पी. एच. डी.
(मन्त्री इदारे अदबियाते उर्दू) उपाध्यक्ष

(४) श्रीमती विमल वाघ्रे एम-ए. मन्त्री

(५) श्री श्रीराम शर्मा (मन्त्री हिन्दी प्रचार सभा)
(लेक्चरार गवर्नमेण्ट कॉलेज गुलबर्गा) सदस्य

(६) श्री गोपालराव अपर्सिंगीकर
(लेक्चरार लॉ कॉलेज, हैदराबाद) ,,

(७) श्री वंशीधर जी विद्यालङ्कार
(अध्यक्ष हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(८) श्री राजकिशोर पाण्डेय एम-ए.
(लेक्चरार निज़ाम कॉलेज, हैदराबाद) ,,

(९) श्री जितेन्द्रनाथ वाघ्रे बी-ए. एल-एल. बी.
(एडवोकेट, हाईकोर्ट, हैदराबाद) ,,

(१०) श्री श्रीनिवास लाहोटी ,,

(११) प्रोफेसर अब्दुल क़ादर सरवरी एम-ए. एल-एल. बी.
(अध्यक्ष उर्दू विभाग उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(१२) प्रोफेसर मजीद सिद्दीक़ी एम-ए. एल-एल. बी.
(प्रो. इतिहास और राजनीति, उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(१३) प्रोफेसर हुसेन अली खाँ
(भूतपूर्व डीन, आर्ट्स कॉलेज, उस्मानिया विश्वविद्यालय) ,,

(१४) श्री हमीदुद्दीन शाहद एम-ए.
(लेक्चरार चादरघाट कॉलेज) ,,

(१५) फजलुर्रहमान एम-ए.
(भूतपूर्व शिक्षा संचालक, हैदराबाद) ,,

**इस समिति ने निश्चय किया है :—**

(१) प्रति वर्ष दक्खिनी की पाँच उत्कृष्ट रचनाएँ, आवश्यक टिप्पणियों और सम्पादन के साथ नागरी लिपि में प्रकाशित की जाएँ।

(२) दक्खिनी की जो उत्तम पुस्तकें अब तक फ़ारसी लिपि में नहीं छपीं उन्हें नागरी के साथ साथ फ़ारसी लिपि में भी छपाया जायेगा।

(३) दक्खिनी के सम्बन्ध में जो लोग शोध-कार्य करना चाहते हैं उन्हें आवश्यक सहायता दी जायगी।

समिति की प्रार्थना पर केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने साहित्य प्रकाशन के लिए ७५०० रु० की एक कालिक सहायता दी है। हैदराबाद राज्य ने समिति को ३५०० रु० वार्षिक की सहायता प्रदान की है। केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार की सहायता प्राप्त कराने में राज्य के मुख्य मन्त्री डा० बी. रामकृष्णराव ने सहायता की।

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद ने समिति को सहायता के रूप में ३००० रु० दिए हैं और इदारे अदबियाते उर्दू ने ७५० रु.। श्री लक्ष्मीनारायण जी गुप्त ने समिति की बैठकों का संचालन तथा समय समय पर समिति के कार्यों का उचित रूप से निर्देशन किया।

समिति की पुस्तकें हिन्दी प्रेस, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद से प्रकाशित हो रही हैं। प्रेस के कार्यकर्ताओं ने पुस्तकों को समय पर प्रस्तुत करने में पूर्ण योग दिया है।

इन पुस्तकों का सम्पादन कर के तथा आवश्यक सुझाव दे कर जिन लोगों ने सहायता पहुँचाई है—और जिन लोगों ने जिस रूप में भी सहयोग दिया उन सब के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

**विमला वाघ्रे,** मन्त्री
दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति
मार्गशीर्ष कृ. ४' २०११
१४-११-'५४

बशीरबाग़ रोड
हैदराबाद (दक्षिण)

# भूमिका

भारतीय भाषाओं के विकास के इतिहास में हिन्दी और उर्दू का विकास एक उल्लेखनीय अध्याय है। यह बात इसलिए नहीं कही गई है कि हिन्दी तथा उर्दू एक दूसरे के अत्यन्त निकट हैं—सच बात तो यह है कि व्याकरण के नियमों और दूसरी बहुत सी बातों में दोनों अभिन्न हैं—इन दोनों भाषाओं ने अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली तथा विन्यास से बहुत कुछ ग्रहण किया है। हिन्दी तथा उर्दू की एक मिली जुली पुरानी शैली दक्खिनी का निर्माण करती है। इसमें दक्षिणी भाषाओं ने भी अपना योग दिया है, हालांकि इन भाषाओं को एक दूसरे ही कुल की भाषा माना जाता है।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने के बाद यह ज़रूरी हो गया है कि भाषा-विज्ञान के विशेषज्ञ तथा विद्यार्थी हिन्दी भाषा और उसके विकास में योग देने वाले उन अन्य साधनों का वैज्ञानिक अध्ययन करें जिन के कारण हिन्दी को वर्तमान रूप प्राप्त हुआ है। १४ वीं शती से अब तक दक्खिनी शैली में जो साहित्य निर्मित हुआ वह इस अध्ययन में बहुत सहायक तथा मूल्यवान सिद्ध होगा।

वर्तमान हिन्दी तथा उर्दू के अध्ययन के लिए दक्खिनी साहित्य बहुत महत्वपूर्ण है। इस तथ्य को हिन्दी और उर्दू के चिन्तक और विशेषज्ञ उत्तरोत्तर स्वीकार करते जा रहे हैं। हैदराबाद में दक्खिनी पुस्तकें बड़ी मात्रा में उपलब्ध हैं। विशेष कर आसफिया पुस्तकालय, विश्वविद्यालय, इदारे अदबियाते उर्दू, सालारजंग पुस्तक संग्रहालय तथा बहुत से निजी संग्रहालयों में दक्खिनी साहित्य की अनेक हस्तलिखित पुस्तकें हैं। कुछ समय पूर्व स्वर्गीय नवाब सालारजंग बहादुर के संरक्षण में प्रसिद्ध साहित्य सेवियों की एक समिति ने हैदराबाद में प्राप्त दक्खिनी के महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रन्थों को फ़ारसी लिपि में प्रकाशित करने का यत्न किया था। इस समिति की ओर से कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ प्रकाशित भी हुए जो इस समय सालारजंग सम्पत्ति की ट्रस्ट के पास भण्डार में हैं।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि "दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति" नाम से हैदराबाद में एक व्यवस्थित संगठन बना है जो इस काम को आगे बढ़ाएगा। इस संगठन का उद्देश्य है—भारत तथा भारत के बाहर अन्य देशों में उपलब्ध दक्खिनी पुस्तकों और हस्तलिखित ग्रन्थों का सर्वांगीण पर्यवेक्षण करना, दक्खिनी के सभी उपलब्ध मुद्रित तथा हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह करते हुए एक अच्छे पुस्तकालय का निर्माण, दक्खिनी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का नागरी तथा फ़ारसी में प्रकाशन तथा यथा सम्भव दक्खिनी साहित्य का अनुसन्धान।

इस समिति को केन्द्रीय सरकार और हैदराबाद राज्य की सहायता प्राप्त है।

इस समय समिति ने हैदराबाद में उपलब्ध दक्खिनी की १५ अत्यन्त महत्वपूर्ण पुस्तकों को नागरी लिपि में प्रकाशित करने का कार्य प्रारम्भ किया है। इस कार्य में हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद तथा इदारे अदबियाते उर्दू का सहयोग उपलब्ध है। दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति का निर्माण इन दोनों संस्थाओं के प्रतिनिधियों से हुआ है। जो हस्तलिखित ग्रन्थ अब तक फ़ारसी लिपि में प्रकाशित नहीं हुए हैं उन्हें इस लिपि में भी प्रकाशित किया जाएगा।

इन हस्तलिखित पुस्तकों के प्रकाशन से हिन्दी तथा उर्दू गद्य के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ेगा तथा दोनों भाषाओं की शब्दावली में भी वृद्धि होगी। दक्खिनी साहित्य भाषा सम्बन्धी दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं है अपितु उस की कुछ रचनाएँ साहित्यिक दृष्टि से भी अत्यधिक उत्कृष्ट कोटि की हैं, अतः मुझे आशा है जहाँ समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तकें अनुसन्धान करने वाले विद्यार्थियों के लिए बहुमूल्य सिद्ध होंगी, वहां उन से विशेषज्ञों और साहित्य प्रेमियों का मनोरंजन भी होगा।

मार्गशीर्ष कृ. ४' २०११
१४-११-'५४

डाक्टर बी० रामकृष्णराव
अध्यक्ष
दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति

# निवेदन

वजही, दक्खिनी साहित्य के निर्माताओं में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों में असाधारण प्रतिभा का प्रदर्शन किया। अपनी साहित्य रचना और असाधारण विद्वत्ता के कारण वजही मृत्यु पर्यन्त कुतुबशाहों का प्रशंसा पात्र रहा।

इस ख्यात नामा साहित्यिक के विषय में अब तक विशेष सामग्री प्रकाश में नहीं आई है। कुतुबशाहों के इतिवृत्त से केवल इतना ही ज्ञात होता है कि इस वंश के चार शासकों का समय वजही ने देखा। इब्राहीम कुली कुतुबशाह के समय वह जनता के सामने आता है। धीरे धीरे वह दरबार में प्रवेश पाता है। कुतुब वंश का साहित्य प्रेमी शासक मुहम्मद कुली कुतुबशाह गद्दी पर बैठा और ३७ वर्ष की आयु में ही उसका निधन हो गया। मुहम्मद कुतुबशाह के पश्चात् अब्दुल्ला कुतुबशाह गद्दी पर बैठा। अब्दुल्ला कुतुबशाह के समय में वजही का देहान्त हुआ।

वजही की तीन पुस्तकें उपलब्ध हैं—कुतुब मुश्तरी, ताजुल हक़ायक़ और सबरस। इनके अतिरिक्त एक छोटा सा रिसाला "रिसाला अलीफ़ बे" नाम का मिला है, जिसे पं० श्रीराम जी शर्मा ने नागरी में प्रकाशित किया है। "सबरस" वजही की सब से श्रेष्ठ रचना है। यह कहने में अत्युक्ति नहीं होगी कि उस समय तक हिन्दी गद्य की इतनी अच्छी पुस्तक नहीं लिखी गई थी। यदि हिन्दी का प्राचीन तम विकसित गद्य हमें कहीं मिल सकता है तो केवल 'सबरस' में। 'सबरस' सब से पहले डाक्टर अब्दुलहक़ के प्रयत्नों से सन् १९२४ में 'रिसाला उर्दू' में क्रमशः प्रकाशित हुआ। डा० अब्दुलहक़ ने इसे सम्पादित करके पुस्तकाकार में भी प्रकाशित किया है। अब दक्खिनी साहित्य प्रकाशन समिति इसे नागरी लिपि में प्रकाशित कर रही है। 'सबरस' के प्रकाश में आने से उर्दू के विद्वानों का ध्यान वजही की ओर गया। लेखक ने सबरस को सन् १६६३ में समाप्त किया। इस से यह ज्ञात होता है कि वजही १६६३ के बाद भी कुछ दिन जीवित था। इब्राहीम कुतुबशाह २० वर्ष की आयु में १६०७ में गद्दी पर बैठा और १६३७ में उस का देहान्त हुआ। वजही इब्राहीम का सामन्त था। उसने इन्हीं दिनों कुतुब मुश्तरी की रचना आरम्भ कर दी थी। अनुमान लगाया जाता है कि वजही का जन्म १५८८ और १५९१ के लगभग हुआ होगा। इस की मृत्यु १६६३ के बाद हुई अतः वजही १०० वर्ष से कुछ अधिक जीवित रहे।

"कुतुब मुश्तरी" कालक्रम से वजही की पहली रचना है। यह इब्राहीम कुतुबशाह के समय में लिखी गई। कवि को राज्याश्रय प्राप्त था अतः उसने युवराज मुहम्मद कुली को अपने ग्रन्थ का नायक चुना। जब यह पुस्तक लिखी गई उस समय युवराज यौवन के प्रथम सोपान में पग रख चुके थे। उन का समय विलासिता में बीतने लगा

था। इस पुस्तक पर वजही को युवराज से कोई पुरस्कार मिला या नहीं, यह ज्ञात नहीं किन्तु इस में सन्देह नहीं कि वजही को इस पुस्तक के कारण समकालीन साहित्यिकों का आदर प्राप्त हुआ।

वजही को अपनी प्रतिभा और कला पर काफ़ी अभिमान था। क़ुतुब मुश्तरी में एक स्थान पर कवि ने स्वयं लिखा है :—

न मुंज जोड़ ना थाँव असमान कूँ,
अजब कुच पहुँच है मेरे ज्ञान कूँ।
हुनर कियाँ हैं यो बारीकियाँ लाफ़ नईं,
वो आदमी नहीं जिस में इन्साफ़ नईं।
हरेक कह के देकने होर ज़ोर,
हमीं इस ते भी ढूँडते कुच होर।

वजही को दक्खन से विशेष प्रेम था। उसने इस पुस्तक में एक स्थान पर लिखा है :—

दखन सा नईं ठार संसार में,
पंच फ़ाज़िलाँ का है इस ठार में।
दखन है नगीना अंगूठी है जग,
अँगूठी कूँ हुरमत नगीना है लग।
दखन मुल्क कूँ धन अजब साज है,
के सब मुल्क सर होर दखन ताज है।
दखन मुल्क भोतीच ख़ासा अहै,
तिलंगाना इस का खुलासा अहै।

दक्खिनी के अन्य कवियों ने फारसी के प्रेम काव्यों का अनुवाद किया है। बहुत कम ऐसे कवि हुए हैं जिन्होंने अपनी रचना के लिए मौलिक कथा चुनी हो। वजही ने क़ुतुब मुश्तरी के लिए स्वतन्त्र कथानक चुना। इस पुस्तक का सारांश इस प्रकार से है :—

आरम्भ में कवि ने ईश्वर की स्तुति की है—उस के बाद हज़रत मुहम्मद की प्रशंसा में कुछ पद हैं। इस के बाद कवि ने अपने आश्रयदाता इब्राहीम क़ुतुबशाह की तारीफ की है। ईश्वर, हज़रत मुहम्मद और आश्रयदाता की प्रशंसा के बाद कथा शुरू होती है।

कवि ने अपने नायक मुहम्मद क़ुली के बचपन से कथा शुरू की है। मुहम्मद क़ुली के बाल्यकाल का वर्णन करते हुए कवि ने बताया है कि कैसे मुहम्मद क़ुली पढ़ने लिखने में बहुत चतुर था, यहाँ तक कि वह अपने बाप से भी बढ़ कर था।

कहानी का आरम्भ कवि ने उस समय किया है जब एक दिन राजकुमार मुहम्मद कुली एक महफ़िल बुलाता है। सामन्तों के साथ राजकुमार नृत्य और मद्यपान में पूरी रात बिता देता है। आधी रात बीतने पर युवराज की कुछ आँख लगी ही थी कि उस ने स्वप्न में एक सुन्दर स्त्री को देखा। स्वप्न में उसकी सुन्दरता को देख कर मुहम्मद कुली मुग्ध हो गया। जब नींद खुली तो उस की विकलता का ठिकाना नहीं था। युवराज की इस विकलता का पता जब इब्राहीम को चला तो वह बहुत चिन्तित हुआ। सामन्तों के मशिवरे से इब्राहीम ने एक प्रसिद्ध चित्रकार अतारिद को बुलवाया। अतारिद ने युवराज के स्वप्न का वर्णन सुन कर—बंगाल की राजकुमारी मुश्तरी का चित्र दिखाया। मुहम्मद कुली चित्र को देख कर, अपनी स्वप्न की प्रेमिका को पहचान लेता है और तत्काल उस की प्राप्ति के लिए जाने को उत्सुक होता है। इब्राहीम और उस की पत्नी मुहम्मदकुली को बहुत समझाते हैं पर वह नहीं मानता और अतारिद को साथ ले कर बंगाल यात्रा के लिए चल देता है। मार्ग में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मार्ग में उस की भेंट एक राजकुमार मिरींख़ ख़ाँ से होती है जो मुश्तरी की छोटी बहन ज़ुहरा को प्राप्त करने के लिए अपने घर से निकला था किन्तु मार्ग में एक जिन का क़ैदी हो गया था। युवराज मुहम्मद कुली उस जिन को मार कर मिरींख़ ख़ाँ की रक्षा करता है और दोनों एक ही मंजिल पर पहुँचने के लिए बढ़ते हैं। आगे बढ़ने पर उनकी भेंट राजकुमारी महताब से हुई। महताब राजकुमार को अतिथि बनाती है। अतारिद अकेला ही बंगाल पहुँचता है और मुश्तरी के महल की सजावट करता है। महल की सजावट करते समय वह एक स्थान पर राजकुमार कुली कुतुब शाह का चित्र भी बनाता है। उस चित्र को देख राजकुमारी मोहित हो जाती है। यह समाचार जब युवराज को मिला तो वह तुरन्त बंगाल चला जाता है। यहाँ वह मुश्तरी के प्रेम में अपनी सुध-बुध भूल जाता है। अतारिद उसे समझाता है। मुहम्मद कुली मुश्तरी से सलाह कर मिरींख़ ख़ाँ का विवाह ज़ुहरा से करा देता है और बंगाल का शासन मिरींख़ ख़ाँ को दे कर वह मुश्तरी के साथ गोलकुण्डा लौटता है और आनन्द से रहने लगता है।

मुहम्मद कुली कुतुबशाह का प्रेम बहुत ही दृढ़ और अविचल था। उस का पिता इब्राहीम कुतुबशाह अपने युवराज के मनोरंजन के लिए अनेक रूपवती स्त्रियों को भेजा करता था। इस का जिक्र कवि ने अपनी मसनवी में इस प्रकार से किया है :—

ब्राहीम कुतुबशाह मजलिस सिंगार,
किए मुस्तइद मो पै इशरत अपार।
जितियाँ ख़ूब ख़ुश शक्ल थियाँ सुन्दरियाँ,
सो करनाटक होर गोर गुजरात कियाँ।

जो चीन होर माचीन के थे बुताँ,
सो खुशलबा खुशफ़हम खुश सूरताँ।
हर यक खूब महबूब बुत फ़ारसी,
बदन ज्यूँ जलती अछे आरसी।

इन हूर परियों में एक भी ऐसी नहीं निकली जो मुहम्मद कुली का मन जीत सके:—

सो नेह शाह कूँ एक का सद हुआ,
मंतर था उनो का सो सब रद हुआ।
के उस शह के दिल में सुधन महर था,
न था महर तो बातिलुस्सहर था।
जो एकस कूँ जिस दिल मने ठार अछे,
ज़रूरत है जो दूसरा वहाँ भार अछे।

जहाँ तक 'कुतुब मुश्तरी' की कथा का सम्बन्ध है वह इतिहास से मेल नहीं खाती। मुहम्मद कुली कभी बंगाल गया यह प्रमाणित नहीं है। मुश्तरी के विषय में भी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। कवि ने सारी कथा काल्पनिक ढंग से उपस्थित की है। केवल मुहम्मद कुली ऐतिहासिक व्यक्ति है और सारे पात्र कल्पना के आधार पर तैयार किये गये हैं।

जहाँ तक इतिहास का सम्बन्ध है मुहम्मद कुली का प्रेम दरबार की एक नर्तकी भागमती से था। भागमती, गोलकुण्डा से कुछ दूर चेचलम ग्राम में रहती थी। इब्राहीम के जीवन काल में मुहम्मद कुली अपनी प्रेमिका से चोरी छिपे मिलने जाया करता था। किन्तु जब वह सिंहासन पर बैठा उसने भागमती से विवाह कर लिया। अपनी इस प्रेयसी के नाम से उस ने मूसा के उस पार एक नगर बसाया जिस का नाम 'भागनगर' रखा। भागनगर शीघ्र ही दक्षिण का बड़ा नगर बन गया। मुहम्मद कुली ने इस नगर के बीचों बीच चारमीनार नाम की इमारत बनवाई जो आज भी अपनी सुन्दरता तथा विशालता के कारण प्रसिद्ध है। मुहम्मद कुली भागमती से कितना प्यार करता था यह इसी से प्रमाणित होता है। कुछ दिन बाद भागमती को "हैदर महल" की उपाधि दी गई, तब भागनगर का नाम भी बदल कर हैदराबाद कर दिया गया। कवि ने "कुतुब मुश्तरी" की नायिका, मुश्तरी को चित्रित करने में इस ऐतिहासिक कथा का आधार कहाँ तक लिया पता नहीं। यह सन्देह होता है कि कवि ने अपनी कल्पना से काम लेते हुए भागमती को ही मुश्तरी के रूप में चित्रित किया हो।

वजही ने इस पुस्तक में अपनी प्रतिभा का परिचय स्थान स्थान पर दिया है।

उस की उपमाएँ देखने लायक हैं। कथानक को वह बड़ी खूबी से आगे बढ़ाता है। पाठक को इस पुस्तक के पढ़ने से काव्य और उपन्यास का आनन्द साथ साथ मिलता है। पुस्तक से उस समय की अनेक सामाजिक रूढ़ियों का पता चलता है।

कुतुब मुश्तरी १६६६ ई० १०१८ हि० में समाप्त हुई। कवि ने अन्त में लिखा है:—

तमाम इस किया दीस बारा मने,
सन यक हज़ार होर अठारा मने।

कुतुब मुश्तरी की दो हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हैं। एक प्रति इण्डिया आफ़िस, लन्दन में और दूसरी डाक्टर अब्दुलहक़ के पुस्तकालय में है। लन्दन वाली प्रति का विस्तृत विवरण श्री नसीरुद्दीन हाशमी ने अपनी 'यूरोप में दक्खिनी मखतूतात' नामक पुस्तक में दिया है। डाक्टर अब्दुलहक़ ने इण्डिया आफिस की प्रति के आधार पर १६३६ में फारसी लिपि में "कुतुब मुश्तरी" को प्रकाशित किया। प्रस्तुत पुस्तक इसी आधार पर तैयार की गई है। इस में कुछ अंश बाद में जोड़ा गया है। डा० अब्दुलहक़ ने यह अधिक अंश, अपनी निजी प्रति से लिया है। इस अधिक अंश का सम्बन्ध वहाँ से है जब युवराज मुहम्मद कुली मिर्रीख़ खाँ की रक्षा करता है और उस के साथ आगे बढ़ता है। आगे शहज़ादा दरया की खोज में निकलता है। इस अधिक अंश के पश्चात ही कथा का सम्बन्ध महताब की भेंट से पुनः जुड़ता है। इस अधिक अंश में कई स्थानों पर डा० अब्दुलहक़ साहब ने रिक्त स्थान छोड़ दिये हैं। आप की निजी प्रति में यह अंश स्पष्ट नहीं है। अतः हमने भी वैसे ही, रिक्त स्थान छोड़े हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के तीन शब्दों के विषय में यहाँ स्पष्टीकरण करना आवश्यक है। पुस्तक के कई स्थानों पर उर्दू के 'लाम' और 'ए' से बना हुआ शब्द आया है जिस का उच्चारण 'ली' होता है। हम ने सभी स्थानों पर इसे 'ली' ही लिखा है। पुस्तक के छपने तक यह पता नहीं चल सका कि 'ली' किस भाषा का शब्द है। जब पुस्तक छप गई तो पता चला ग्रामीण मराठी में 'लइ' शब्द का व्यवहार होता है जिस का अर्थ है 'बहुत'। इस पुस्तक में भी जहाँ जहाँ 'ली' शब्द आया है वहाँ बहुत के अर्थ में ही प्रयुक्त है। अतः पाठक सर्वत्र 'ली' के स्थान 'लइ' समझें।

इसी प्रकार से पुस्तक में प्रयुक्त होने वाले राजवट और दुराई शब्द भी मराठी के हैं। मराठी में राजवट का अर्थ है शासन काल अथवा शासन। दुराई का अर्थ हिन्दी के दुहाई शब्द से मिलता जुलता है। मराठी के कोषकारों ने उसे दुर+हार से बनाया है।

हो सकता है इसी प्रकार की कुछ त्रुटियाँ और रह गई हों जिन के लिए

हम क्षमा प्रार्थी हैं ।

अन्त में श्री श्रीराम शर्मा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिन्होंने, व्यस्त रहते हुए भी पूरी पुस्तक का अवलोकन किया और आवश्यक सुझाव दिये ।

फ़ारसी लिपि से नागरी लिपि में किसी पुस्तक का रूपान्तर करते समय अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । इसी लिए पुस्तक में कुछ स्थानों पर जाने अनजाने कुछ त्रुटियाँ रह सकती हैं ।

बशीरबाग़ रोड़
हैदराबाद दक्षिण.

विमला वाघ्रे
नसीरुद्दीन हाशमी
मार्गशीर्ष कृष्ण १ संवत २०११
११-११-५४

# सूची



## हम्द

तूँ अव्वल तूँ आख़िर तूँ क़ादिर[1] अहै,
तूँ मालिक तूँ बातिन[2] तूँ ज़ाहिर अहै।

तूँ मुहसी[3] तूँ मब्दी[4] तूँ वाहिद[5] सच्चा,
तूँ तव्वाब[6] तूँ रब[7] तूँ माजिद[8] सच्चा।

तूँ बाक़ी तूँ मुक़सिम[9] तूँ हादी[10] तूँ नूर,
तूँ वारिस[11] तूँ मुनइम[12] तूँ बिर[13] तूँ सबूर।

तूँ सत्तार[14] होर तूँ सो ज़ब्बार[15] है,
तूँ वहहाब[16] होर तूँ सो कह्हार[17] है।

तूँ रज़्ज़ाक़[18] है होर तूँ ही अज़ीम[19],
तूँ फत्ताह[20] है होर तूँ ही अलीम[21]।

तूँ कुद्दूस[22] है होर तूँ ही समी[23],
तूँ क़य्यूम[24] है होर तूँ ही बदी[25]।

तूँ राफ़े[26] अहै होर तूँ ही अली[27],
तूँ जामे[28] अहै होर तूँ ही वली[29]।

तुँ हीं है मालिक[30] होर तुँ हीं सलाम[31],
तुँ हीं है मुहिमिन[32] तुँ हीं नेक नाम।

तुँ हीं है मुइज़्ज़[33] होर तुँ हीं बसीर[34],
तुँ हीं है मुज्जिल[35] होर तुँ हीं ख़बीर[36]।

१ बनाने वाला २ गुप्त ३ गिनने वाला ४ सृजनहार ५ एक ६ पश्चाताप को स्वीकार करने वाला ७ पालनहार ८ श्रेष्ठतम ९ बटवारा करने वाला १० मार्गदर्शक ११ परम्परा को बनाए रखने वाला १२ नेकी देने वाला १३ चमकना १४ अपराध क्षमा करने वाला १५ सख्ती करने वाला १६ दाता १७ ग़ालिब, सब से बढ़ कर १८ अन्नदाता १९ श्रेष्ठतम २० प्रकट करने वाला २१ जानकार २२ पवित्र २३ श्रोता २४ क़ायम रहने वाला २५ आविष्कारक २६ उन्नति करने वाला २७ उन्नतिशील २८ जमा करने वाला २९ सहायक ३० बादशाह ३१ रक्षक ३२ निगाहबान, नज़र रखने वाला ३३ इज़्ज़त देने वाला ३४ देखने वाला ३५ ज़लील करने वाला ३६ ख़बर रखने वाला।

तुँ हीं हाफ़िज़[१] है होर तुँ हीं हबीब[२],
तुँ हीं हक़[३] है होर तुँ हीं मुतीब[४]।

तुँ हीं है खलील[५] होर तुँ हीं करीम[६],
तुँ हीं है अज़ीज़[७] होर तुँ हीं हकीम[८]।

तुँ ही बासिल[९] है होर तुँ ही क़रीब,
तुँ ही क़ाबिज़[१०] है होर तुँ ही मुज़ीब[११]।

तुँ ही है लतीफ़[१२] होर तुँ ही ग़फ़ूर[१३],
तुँ ही है हफ़ीज़[१४] होर तुँ ही शुकूर[१५]।

तुँ ही है हलीम[१६] होर तुँ ही शदीद[१७],
तुँ ही है कवी[१८] होर तुँ ही मजीद[१९]।

तुँ ही हई[२०] होर तूच सत्तार[२१] है,
तुँ ही मुही[२२] होर तूँच गफ़्फ़ार[२३] है।

तुँ ही वाहद है होर तुँ ही अहद,
तुँ ही मुक्क़सित[२४] है होर तुँ ही समद।

तुँ ही है वकील होर तुँ ही शहीद,
तुँ ही है मुईद होर तुँही हमीद।

रूफ़[२५] होर रशीद[२६] होर माने[२७] तुँ ही,
वदूद[२८] होर ग़नी होर नाफ़े तुँ ही।

कबीर होर वासद है सुभान तूँ,
करीम होर रहीम होर रहमान तूँ।

१ देखने वाला २ मित्र ३ जाहिर और बातिन की खबर रखने वाला ४ अमर ५ मित्र ६ दाता ७ ग़ालिब ८ हुकुम करने वाला ९ अन्नदाता १० परेशान करने वाला ११ दुआ को स्वीकार करने वाला १२ दूरदर्शी १३ बख़शने वाला १४ नज़र रखने वाला १५ शुक्रगुज़ारों की इज्ज़त करने वाला १६ सहनशील १७ विशेषतया अधिक करने वाला १८ शक्तिवान १९ ऊँची ज़ात वाला २० अमर २१ गुनाह क्षमा करने वाला २२ ज़िन्दा करने वाला २३ बख़शने वाला २४ ताक़तवर २५ महरबान २६ नेक राह पर चलने वाला २७ मना करने वाला २८ मित्र।

मुमीत[1] मतीं[2] मुग़नी[3] होर ज़ार[4] तूँ,
मुक़द्दम[5] मुअख़्ख़र[6] करतार तूँ।

अहै तूँ अथा तूँ अछेगा तुँ ही,
रचे तूँ रच्चा तूँ रचेगा तुँ ही।

हमीं ऐन तूँ इस में है ऐन नूर,
तूँ नज़दीक हमारे हमी तुज ते दूर।

रमे रात दिन यूँ हमन संग तूँ,
कि जू नीर मिल कर अछे रंग सूँ।

तूँ अछता अहे जीव ज्यूँ दिल भित्तर,
हमीं ढूँढ़ते तुज किधर का किधर।

यता तूँ है नज़दीक जाने ना कोय,
क़दीम आशना होर. पछाने न कोय।

तुजे फ़ाम[7] नईं फ़ाम का काम नईं,
तेरे काम कुछ फ़ाम कूँ फ़ाम नईं।

यहाँ इश्क़ दायम[8] परेशान है,
यहाँ ख़्याल होर वहम हैरान है।

समा[9] सात मुद सट परेशान हो,
तुजे धूंढ़ते फिरते हैरान हो।

ज़मीन सुस्त हुई यूँ जो हिलती नहीं,
हुए पाँव माँदे जो चलती नहीं।

सूरज चांद तारे ना चुक[10] ठैरते,
तूँ काँ है तुजे ढूडते फेरते।

१ मारने वाला २ दृढ़ ३ निश्चिन्त ४ कष्टदायक ५ अनादि ६ अनन्त ७ समझ ८ सदा ९ आकाश—सातों आकाश में १० थोड़ा।

वले कौन जाने के तूँ काँ अहै,
हुँ ही जानता है अपै जाँ अहै।

तेरी कुदरत आँगे है ज़र्रे ते कम,
अर्श[1] होर कुर्सी व लोह[2] व कलम।

अछै तुज समद[3] बीच सीप्याँ समाँ,
धरत[4] सात बुलन्द नौ आसमाँ।

बनाया घराँ इस में बेघात[5] के,
सितार्यां ते आले उत्तम ज़ात के।

अपै पारकी होर अपै मुशारी,
अपै है ग़वास होर अपै जौहरी।

अपै शहर आपीच बाट ज़ार है,
अपै बेच, आपी खरीदार है।

वही एक करता है भोत घात भेस,
कधीं रात होवे कधी होवे दीस[6]।

अपै दीस होर आपीच रात,
अपै झाड़ है होर आपीच पात।

अपै फूल, अपै फल अपै बन अहै,
अपै चाँद अपै सूर अपै खन[7] अहै।

गर्ज़ एक आपीच सब टार है,
इसी नूर का सब में झलकार है।

खुदा या बड़ा तूँ, बड़ाई है तुज,
हमीं सब बन्दे है खुदाई है तुज।

बनाया तूँ आदम कूँ भोत चाव सूँ,
सो खाक होर अगन पानी होर बाव[8] सूँ।

---

१ ईश्वर का निवासस्थान २ तख्ती, स्लेट ३ समुद्र ४ धरती ५ कई प्रकार के ६ दिन ७ खण्ड, पृथ्वी ८ हवा।

मिलनहार यक ठार नईं है यू चार,
तेरे डर ते मिल कर रहे एक ठार।

करे आग कूँ पानी-पानी कूँ आग,
कवे कूँ सो हंस होर हंस कूँ सो काग।

खुदा है तूँ यो काम तुज को सुहाय,
कि जीवते कूँ मारे मुवे[1] कूँ जिवाय।

के बिस देके नईं मारता नाग कूँ,
रख्या है तूँ पानी मने आग कूँ।

बनाया मिश्क[2] मिरग की नाफ़ में,
दिया रिज़्क[3] सीमुर्ग़ कूँ क़ाफ़[4] में।

भूँक कूँ खुरश[5] जब तूँ बारा[6] किया।
समुन्दर के तईं आग चारा किया।

भले होर बुरे कूँ दिया रिज़्क अपार,
के ज्यूँ नीर बरसे बदल ठार-ठार।

वले मेंहूँ[7] बी कईं पड़े ना पड़े,
तेरा रिज़्क सब कूँ सदा आँपडे।

बन्दयाँ कूँ किसी बात का ग़म नहीं,
भर्या है खज़ाना तेरा कम नहीं,

तूँ झाड़ाँ कूँ कपड़े दिया सब्ज़ पान,
मुअल्लक़[8] रख्या हैं ज़र्मीं आसमान।

दीवा कर चन्दर शमा कर भान कूँ,
दिपायाँ दो जग के शबिस्तान[9] कूँ

१ मृत २ इत्र ३ रोज़ी ४ कोहे क़ाफ़ में परियाँ रहती थीं। उस बन में परिन्दों को खाने के लिए कुछ नहीं होता था। वहाँ भी ईश्वर ने सीमुर्ग़ को रोज़ी प्रदान की। ५ दुःखी होना ६ पानी ७ वर्षा ८ निराधार ९ संसार।

पतंग कूँ दिये का पिरत लाया,
कमल पर तूँ भौरे कूँ लुब्दाया[१]।

दिया बीतें बिज बिजन नार कूँ[२],
छिपा कर रख्या बीज में झाड़ कूँ।

हरेक बन के दुरजक कें तईं जगाधार,
खिज़ाँ[३] कुफ्ल कीता है केली बहार।

तू आदम के फ़र्ज़न्द कूँ खाने मुदाम[४],
धरत होर अम्बर दिया खुश इनाम।

अजब तेरी कुदरत केरे काम है,
समझने वो कुदरत किसे फाम है।

तेरा शुक्र वाजिब है दर हम अपार,
किया नेमताँ जग पो नाज़िल[५] हज़ार।

सके कौन तेरा शुक्र सारने[६]
है कुदरत किसे याँ जो दम मारने[७]।

जकुच्छ है सो तेरी छुपी हिकमताँ,
सके फाम नईं अक्ल सूँ कोई कहाँ।

अगर जो करम[८] होय तेरा किस उपर,
छुपी हिकमताँ होय अयाँ[९] उस उपर।

सकत है तुजे तूँ जगत का धनी,
किया जाय तुज कूँ धनी होर ग़नी[१०]।

निजा दिल की अँखियाँ सूँ देखूँ जिधर,
के तुज बिन नहीं कुच पड़ता नज़र।

---

१ लुब्ध किया २ गर्भ में नार को छिपा रखा है ३ पतझड़ ४ सदा ५ देना ६ तेरा अहसान मानना जरूरी है ७ ईश्वर के खिलाफ़ कहने का साहस नहीं है ८ कृपा ९ प्रकट १० सम्पन्न।

जे चीज़ अपनी कुदरत ते परगट किया,
सो रहने अपस ठार हर घट किया।

तेरा मारिफत[1] जग में भरपूर है,
हरेक ठार रोशन तेरा नूर है।

के तू नईं सो कोई ठार दिसता नईं,
ना यक ठार है तूँ अहै हर कहीं।

बन्दयाँ पर है तेरा करम एक धात,
है तेरी नज़र सब पै हर एक सात।

करम सब बन्दयाँ पर करनहार तूँ,
मया[2] सब पै यक रंग धरनहार तूँ।

किया है तु हीं कर करीमा[3] करम,
बक़ा[4] कूँ बक़ा होर अमद[5] कूँ अदम।

दिखाया बक़ा कूँ अदम में थे तूँ,
बनाया है शादी कूँ ग़म में ते तूँ।

तूँ साहब हुकम सब पै धरता अहै,
जकुछ करन मँगता सो करता अहै।

मुँजे बेनियाज़ी[6] दे दो जग मने,
मुजे सरफ़राज़ी[7] दे दो जग मने।

---

१ इल्म, ज्ञान २ प्रेम ३ कृपा करने वाला ४ अमर ५ नश्वर ६ किसी के आगे हाथ न फैलाने वाला ७ मुझ पर कृपा कर।

## दर मुनाजात बारी ताला[1] जल जलालहु

महरबान साहब ग़नी एक तूँ
करम की नज़र सूँ मुंजे देक तूँ।

कमीना बन्दा सब ते कमतर हूँ मैं,
गुहर[2] कर मुंजे तूँ के कंकार हूँ मैं।

अगर नूर तेरा सटे चक पै शाब[3]
अजब नईं जो कंकर होय आफताब।

अरे दिल कूँ रौशन कर अप नूर ते
तजल्ली[4] दे अगला चन्दर सूर ते।

नही मुज कूँ आधार तुज बाज[5] कोय,
मयावन्त[6] दाता तुज बाज कोय।

खुदाया मुंजे खैर दे शर सतं,
निडर कर बड्याँ के बड़े डर सते।

निडर सबते कर डर तूँ अपना दिला,
दो जग में मुंज अपना तूँ जपना दिला।

इलाही इलाही गुनागार हूँ,
गुनाहाँ में अपने गिरफ्तार हूँ।

गुना की गिरफ्तारी थे दूर कर,
सवाबाँ सूँ तूँ मुंज कूँ पुर नूर कर।

असल का तो नईं गंज कुछ मेरे पास,
वले तेरी बक़शीश की है भोत आस।

गुनागार बन्दे हमीं थार थे,
भर आयें क्यों तेरे उपकार थे।

---

१ ईश्वर से प्रार्थना करना २ मोती ३ 'शहाब' अरबी का शब्द है, चमकने वाला ४ चमकनेवाला ५ तेरे सिवा ६ माया युक्त, ममतावाला।

जो तूँ बोल भेज्या सो सब साच है,
हमीं नई सुने चूक[1] हमराच है,

खलासी[2] दे मुज जग के जंजाल ते,
तूँ ग़ाफिल नको अछ मेरे हाल ते,

गुनागार हमीं सब गुनागार है,
जकुच तूँ करे सो सज़ावर[3] हैं।

सचा एक साहब है सुभान तूँ,
के माँ बाप थे है महरबान तूँ।

गुनाहाँ ते मेरे मुँजे रुच[4] नहीं,
जो तूँ बख्शने आय तो कुच नहीं।

जो जोश आय दरया तेरे प्यार का,
गुना धो सटे तिल में संसार का।

हमन पाप ते पुन तेरा ज्यास्त है,
नहीं शक कुच इस में के यो रास्त[5] है।

खुदा कूँ जकुच काम भाता अहै
सो मुँज हात ते नई हो आता अहै।

तूँ बख्शयाँ है भी होर बख्शाएगा,
गुनागार कूँ बहिश्त में ल्याएगा।

मुराद है हरेक खूब[6] होर जिश्त[7] का,
के देखें तमाशा तेरी बहिश्त का।

दिला मुँज मेरे दिल के मकसूद[8] तूँ,
के मौला सचा होर माबूद[9] तूँ।

तेरा शुक्र हमना ते क्या होएगा
तू धोया गुनाहाँ सो भी धुएगा।

---

१ त्रुटि २ छुटकारा ३ लायक़ ४ इच्छा ५ सत्य ६ अच्छे ७ ख़राब ८ इच्छाएँ
९ पैदा करनेवाला ।

तु ही एक आपीच सब का अधार,
तु ही एक साचा है परवरदिगार।

तु ही एक प्रगट है हर शै मने,
तु ही एक अछुता[1] अहै लई[2] मने।

रह्या यूँ तूं आदम के दिज तंग में,
कि ज्यूँ आग पिनाहाँ[3] अछे संग[4] में।

इबादत की चकमक वक्फ़ सिद्क़ अपार,
मिला क़ल्ब के संग सूँ एक टार।

जो तीनो यो मिल कर अछे ढंग सूँ,
छुपी आग परगट दिसे संग सूँ।

दीवा दिल, बत्ती दम, मन्धिर[5] जिस्म है,
अगन जीव होर तेल तुज इस्म[6] है।

बुरी बाव ते यक कथन[7] रख इसे,
जतन रख जतन रख जतन रख इसे।

के सब कूँ सम्भालनहारा है तूँ
दो जग जीव का पीव प्यारा है तूँ।

खुश आवाज़ नई कूँ किया है तु ही,
सो निर्जीव कूँ जीव दिया है तु ही

अगर नई कूँ जीव नई तो क्यों बोलती,
छुपे राज़ के पर्दे क्यों खोलती।

समज देक ऐ दिल तूँ टुक फिक्र सूँ
नको गाफिल आछ उस केरे जिक्र सूँ

किसे जियूँने का नित पितयारा[8] अहे,
के जियू जिस कूँ कहते सो चारा अहे।

---

१ सजता है २ चन्द्र के चारों ओर की गोलाई ३ गुप्त ४ पत्थर ५ मन्दिर ६ नाम ७ आग्नी ८ विश्वास।

नको भूल तूँ जग के इस चाव पर,
पितयारा किया नईं कने बाव उपर।

दग़ा देने शैतान इस शहर में
शकर कूँ मिला कर रख्या ज़हर में

भुलाती है दुनिया भोत साज़ सूँ,
नको जीव ला इस दग़ाबाज़ सूँ।

वफ़ा नईं करे यो अछों किस सते।
के हर्गिज़ वफ़ा नईं हुआ इस सते।

दाग़ देगी तुज कूँ दग़ा कूँ खान को
मुसल्लम[1] उसे सोंच जीव ला नको।

जो जीव लायगा तू खुदा सूँ लगा।
मुहम्मद नबी मुस्तफ़ा सूँ लगा।

दो दिन इस दुनिया में तूँ अच्छ इस उसूल,
के तुज ते खुदा खुश अछै होर रसूल।

अरे दिल तूँ ग़फलत में ते भार हो,
केता सोयगा टुक तूँ हुश्यार हो।

तुज इस पन्त[2] में क्यों नींद आती अहै,
दुनिया रह गुज़र उम्र जाती अहै।

तूँ मस्त है दुनिया का खबर नईं तुजे,
खबर ले खबर यो अगर नईं तुजे।

तूँ गाफ़िल है आ चल मेरी बात में,
सँपड़ता है की हिर्स[3] के हाथ में।

हवा हिर्स जो दूर करते अहै
बड़ा मर्तबा सब में धरते अहै

१ पूरा २ मार्ग ३ स्वार्थ।

जो तुज हुक्म महताबेमा है अछे,
सुलेमान[1] की पादशाही अछे।

नको तूँ ग़रूरी से मग़रूर हो,
हवा हिर्स के हाथ ते दूर हो।

हमीं बाटसारन निमन याँ अहै,
रनावाँ हमारे घराँवाँ अहै।

बिकट घाट सँन्भाल उस घट में,
कने घर किया नई अभू बाट में।

दुनिया बाट माया सो ईमान है,
वहाँ बाट पाड़ो सो शैतान है।

छुपा कर जतन रख तूँ ईमान कूँ,
सँचरने नको वाँ दे शैतान कूँ।

तूँ वो काम कर जो तुज काम आय,
के पछता कर जो आख़िर तूँ हैफी[2] न खाय।

दुनिया में तूँ आया तो कुछ काम कर,
ख़ुदा कूँ जो भाता है सो काम कर।

के दायम[3] रहने का नई ठार याँ,
नहीं कोई आया है दो बार याँ।

जकुच याँ ते संगात ले जाएगा,
दुगन तिर्गुन उसका तूँ वाँ पाएगा।

सकेगा तूँ कोशिश कर उस बात में,
जकुच ख़ूबी आवे तेरे हात में।

तूँ उसकी इबादत में दिनरात अछ,
तूँ उसका च हो उसके च संगात अछ।

---

१ सुलेमान एक पैग़म्बर थे जो इन्सानों के साथ जानवरों पर भी हुकूमत करते थे २ अफ़सोस
३ सदा।

नको छोड़ साहब की ख़िदमत तूँ कर,
के ख़िदमत ते होता है प्यारा नफ़र[१]।

मुशारे[२] कूँ हाज़िर हो नौबत चुकाय,
नफ़र चाकरी छोड़ क्या काम आय।

खुदा हक़ है हक़ कूँ नको तूँ विसार,
के मरना है हक़ होर जीना उधार।

खुदाया तूँ मुंज पर दया दिश्ट[३] धर,
तेरा प्यार यक धात है सब उपर।

सरफ़राज[४] सब कूँ करनहार तूँ,
के धरता मया[५] होर धनहार तूँ।

तु ही हुस्न कूँ जग में नियजाय कर,
कर्या इश्क़ कूँ आशिक़ उस उपर।

छुपाया है यो दो में अपना तूँ राज़,
यकस कूँ दिया नाज़ यकस कूँ नयाज़[६]

जो आशिक़ सच्चा होर जाँ बाज़ है
अयाँ उस उपर यो छुपा राज़ है।

दे मुँज इश्क़ मजनूँ से दीवाने का,
पिला मय मुहब्बत के मयख़ाने का।

मुहब्बत केरा मय जो पीता अहै
मर्ग उसकूँ नईं जम[७] व जीता अहै।

मुहब्बत के मय कूँ पिला तूँ मुँजे,
नको मार दायम जिला तूँ मुँजे।

जो जग में सदा काल जीता अछूँ,
मुहब्बत केरे मय कूँ पीता अछूँ।

---

१ फौज का सिपाही २ तनख़ा ३ नज़र ४ दान ५ स्नेह ६ नाज़ नख़रे ७ जमशीद से जम लिया गया है। ईरान का बादशाह जमशीद था जिस का जामेजम मशूर है।

## नात

मुहम्मद नबी नाँव तेरा अहै,
अर्श के उपर छाँव तेरा अहै।

के चौदा मुलक का तूँ सुलतान है,
अली सा तेरा घर में परधान है।

असी होर यकलाक पैगम्बर आए,
वले मर्तबा कोइ तेरा ना पाए।

छुप्या नूर सब काँ तेरे नूर अंगे,
के ज्यूँ तारे छुपते अहै सूर अंगे।

मसीहा बन्दा आज तुज राज़ का,
मुअल्लिमनम[1] अहै नूह[2] तुज भाज़ का।

ख़ुदा सें गुमे तूँ जहाँ से ख़लील,
ना ईसा वहाँ आये ना जिब्रील।

अर्श कुर्सी तुज घर है दर आसमाँ,
तूँ सूरज है बादल तेरा सायेबाँ।

मलायक[3] अहैं जितने आसमान में,
रहें रात दिन सब तेरे ध्यान में।

तूँ सुलतान मुसहफ़ इल्म है तेरा,
नबियाँ होर वलियाँ सब चश्म है तेरा।

अवल होर था दीन अब होर हुआ,
मुहम्मद ते यो दीन वर जोर हुआ।

१ गुरु २ कहा जाता है कि एक बार प्रलय आया था। समस्त संसार नष्ट हो गया था और चारों ओर जलराशि ही थी। उस समय नूह नामक पैग़म्बर जिन्हें आदम के बाद दूसरा पैग़म्बर मानते हैं शेष रह गए थे और नाव में बैठ कर बच गए थे। उन्हीं से दूसरी सृष्टि का संचार हुआ ३ फ़रिश्ते।

बन्दे हो के खिदमत करे तेरे घर,
अज़ल[1] होर अबद[2] होर क़ज़ा[3] होर क़दर[4]।

तेरा दीन जिस दिन ते परगट हुआ,
सो उस दिन ते सब कुफ़र तलपट[5] हुआ।

मुहब्बत मुरव्वत वफा होर हिलम[6]
हलीमी[7] सलीमी[8] अमल होर इलम।

तूँ पैदा हुआ यो हवैदा[9] हुए,
अवल यो न थे तुज ते पैदा हुए।

पतयाँ खसलताँ खूब है किस मने,
गज़ब होर गुस्सा नहीं जिस मने।

नवद नौ[10] हैं तुज नाँव यक नाँव नईं,
तूँ रब[11] छाँव है छाँव कूँ छाँव नईं[12]।

तूँ नूर होर नूरिच तेरा नाँव है,
तूँ चँदना तुज चन्दर केरा छाँव है।

जो दिन छाँव तेरा उजाला अछै,
ना निस तूँ के तुज छाँव काला अछै।

के तूँ नूर तुज छाँव भी नूर है,
अंधारा उजाले सते दूर है।

उजाला सो दीस होर रात अन्दकार,
नहीं मिल कर अछते यो दो एक ठार।

उजाला है जाँ, वाँ अंधारा नहीं,
अंधारा है जाँ उजाला नहीं।

१ सृष्टि २ प्रलय ३ तदबीर ४ तक़दीर ५ नष्ट ६ दया ७ कृपा ८ नेकी ९ जाहिर १० ९९ नाम हैं ११ ईश्वर १२ मुहम्मद स्वयं ईश्वर की परछाईं है, अतः परछाईं की फिर छाया कैसे होगी ? कहा जाता है कि मुहम्मद की छाया नहीं होती थी। हिन्दुओं में भी विश्वास है कि देवताओं की छाया नहीं पड़ती।

तेरा छाँव वो है जो कुहतूर[1] ते
निकलते झमक्य अधिक सूर ते।

तेरी छावँ का नूर जग देक कर,
ख़बर सुन के मूसा हुआ बेख़बर।

जो देखे तेरी छाँव का ज़र्रा नूर,
पड़े मस्त हो भुँई पो अंबर ते सूर।

उमीद्वार है जग तेरे प्यार का,
बख्शाये[2] तूँ पाप संसार का।

शफ़ाअत[3] करन हार सब को तुँ हीं,
अपैं लाड़ला एक रब का तुँ हीं।

१. मूस ने इच्छा प्रकट की थी कि वे ईश्वर को साक्षात् देखना चाहते हैं। ईश्वर के 'ना' करने पर भी वे ज़िद करते रहे। अन्त में ईश्वर उन्हें तूर के पहाड़ पर आने की आज्ञा देते हैं। मूसा जब पहाड़ पर पहुँचते हैं तो ईश्वर के प्रज्ज्वलित प्रकाश से बेहोश हो जाते हैं और तूर पहाड़ भस्म हो जाता है २ क्षमा करे ३ ईश्वर से सिफ़ारिश करनेवाला।

## जिक्र मेराज़[1]

सिफत कर तूं मेराज की रात का,
के जाग्या अहै बख़्त[2] तुज बात का।

अथा उस रैन कूं अजब कुछ नूर,
के लाखाँ ते चंदाँ करोड़ाँ ते सूर।

मुल्क ज़रगराँ[3] ज़र ले कर सूर का,
मुलम्मा[4] अम्बर कूँ किए नूर का।

नबी आते हैं कर सुने जब या बात,
सँवारन लगे नौ अम्बर धात धात।

मलायक मिले थे नौ असमान के,
मुक़रब[5] बडे पाक भूमान[6] के।

जो जिब्रेल ते पाये खुश यो खबर,
बजाने लगे सब तबल अर्श पर।

नबी थे अभूँ आपने घर मने,
जो ग़ोग़ा[7] किये क़ुदसी[8] अम्बर मने।

नबी आज हमारे यहाँ आयेंगें,
हमें सब उनों का दरस पायेंगें।

मलायक उछलने लगे जौक़ सूँ,
सो हज़रत के दीदार के शौक़ सूँ।

फ़रिश्ते सूरज चाँद तारे तमाम,
नौ असमान के रहन हारे तमाम

क़दम बोसी के शौक़ ते धाय कर,
रहे पैले असमान में आय कर।

१ सीढ़ी। यहाँ मुहम्मद का ईश्वर के पास जाने से भाव लिया गया है २ भाग्य ३ सुनार ४ सोने का पानी ५ इज्जतवाले ६ मर्यादा के ७ शोर ८ अफसरा।

जुदा थे मिल कर सभी एक ठार,
खुशियाँ ऐश करते अथे बेशुमार।

जो वैसे में जिब्रेल[१] उतर आय कर,
बशरत[२] सो हज़रत कने ल्याय कर।

बग़ल म्याने ग़ाशा[३] ले कर खासेदार,
हुआ जिब्रेल होर पाकड्या तखार।

नबी कूँ सारा कर भोत धात सूँ,
नज़ीक आकर बोल्या मिठी बात सूँ।

कहा तुज खुदा ने किया है सलाम,
बुलाया तुजे आज अपने मुक़ाम।

बड़ी रात है आज मेराज की,
मुबारक अछो रात तुज आज की।

नवी बात यो सुन कहे जायाँ चल,
छुप्याँ नेमताँ ग़ैब[४] कियाँ पायँ चल।

सवारी के खातिर नबी की वसाक़[५],
ले कर आए संगात तेज़ी बुराक़[६]।

बुराक़ आज खुश गर्म ज्यूँ बर्क़ है,
के सर पाँव लग नूर में ग़र्क़[७] है।

चड्य पीट पर उस की वो माहताब[८],
लग्या उड़ने असमान पर ज्यूँ शहाब[९]।

फरिशते यकायक उठे देख कर,
खुदा के नबी कूँ वो सब नेक कर।

१ एक फरिशते का नाम जो मुहम्मद को ईश्वर का सन्देश देता था २ खुशखबरी ३ क़ालीन ४ गुप्त ५ साथ ६ घोड़े और ऊँट की शक्ल का एक पशु जो बहुत तेज़ जाता है ७ डूबा हुआ ८ चाँद पर यहाँ मुहम्मद से भाव लिया गया है ९ टूटता हुआ तारा।

अवल बेग जा पाँव पड़ने के तईं,
आपस में अपै लागे पड़ने के तईं।

जो एकाएक आकर पड़े पाँव सब,
खड़े रहे अदब सात एक टाँव सब।

नबी खिंग[1] कूँ वाँ ते आगे चलाय,
मलक सब नबी सात अम्बराते आय।

मलायक सभीं आए थे हाल में,
सो वैसे पड़े फिर को ग़ल ग़ाल[2] में।

पड़ी किस की छाँव जूँ फर्श पर,
उछलती वो जा कर खड़ी अर्श पर।

शफ़क़ गाशिया होर तुरंग बंज है,
तुरंब बीच हुआ सार सो रंज है।

न रहे टैर नौ आसमाँ में नबी,
गसे लाम काँ के मकाँ में नबी।

खड़े रहे वज़ाँ जिब्रेल होर बुराक़,
न था ज़री इतना उनों में निफाक़[3]

निदा[4] ग़ैब[5] ते आके हज़रत कनें,
बुला ले गया वाँ ते ख़िलवत[6] मने।

किसे फ़ाम[7] खिलवत में वाँ क्या हुआ,
ख़ुदा होर हज़रत में वाँ क्या हुआ।

मुहम्मद कूँ जिस रात मेराज हुई,
न था दूसरा वाँ अली बाज कोई।

उनो तीनों कूँ बात यो फ़ाम है,
समझना वो चौथे का नईं काम है।

१ घोड़े २ गड़बड़ ३ जुदाई ४ आवाज ५ आकाशवाणी सी ६ राज की जगह
७ मालूम।

## मक़बात[1]

तूँ जग का प्यारा तूँ जग का अधार,
ख़ुदा का तूँ हमदम, नबी का तूँ यार।

तूँ हत खड्ग ले जब किता कुफ्र धोय,
तूँ मसजिद मने दीन की बांग होय।

किया मोमिनाँ काफिराँ मार मार,
कुफ्र का दंदी दीन का दोस्तदार।

मुसलमां के सफ़[2] कूँ तुज ते है नाम,
वो सफ़ जूं है तस्बीह तूँ ज्यूँ इमाम[3]।

खबर सब अहै नेक होर बद की तुज,
सुहाती है जागा मुहम्मद की तुज।

छुड़ाया अहै दीन का बन्द तूँ,
ख़ुदा की खलक़[4] कूँ दिया पन्द[5] तूँ।

अथे यार सब यार बन्द भोत कर,
भरोसा नबी का अथा तुज उपर।

किया कुफ्र सब खार[6] पामाल[7] कर,
नबी का रख्या दीन सँभाल कर।

मुहम्मद की जागा किने पायेना,
तुज अछुतें किसी होर कूँ आयेना।

बड़ा यार याराँ मने यार तूँ,
के पाया मुहम्मद केरे[8] ठाँव तूँ।

---

१ प्रशंसा करना २ जमात, गिरोह ३ तजबी के समय जो दानों की माला फेरते हैं उसके अन्त में एक लम्बा दाना होता है उसे इमाम कहते हैं भाव है कि सब मुसलमान उन छोटे दानों की तरह हैं और ईश्वर इमाम की तरह ४ ख़ुदा की पैदा की हुई सब चीजें ५ शिक्षा ६ काँटे ७ खराब चीजों को समाप्त कर देना ८ के पास।

ख़ुदा रहम तुज पर है रहमान का,
तूँ प्यारा है प्यारा है सुभान का।

नौ असमान सारे की हस्त है तारे,
ज़बर्दस्त सब ज़ेरदस्त[1] है तेरे।

रहे घर में छुप रुस्तमाँ से सवार,
निकलते नहीं कोई दर[2] ते बहार।

किसे है कलेजा तेरे सम होने,
किसे ज़ोर है तुज सूँ हम तुम होने।

तूँ एक है तुजे कोई जोड़ा नहीं,
के ली है शुजाअत[3] यो थोड़ा नहीं।

जो कामाँ किया है शुजाअत के तूँ,
ख़बर नईं है रुस्तम कि अरवाह[4] कूँ।

गनी दीन सब कुफ्र क़ल्लाश[5] हुआ,
शुजाहत तेरा जग में यूँ फ़ाश[6] हुआ।

के रुस्तम कि अरवाह तुज धाक ते,
उछल कर पड़ी मार आ ख़ाक ते।

तूँ मारा है कुफ्फ़ार[7] कूँ आ के जाँ,
झड़ी लहू की अजूँ उबलती है वाँ।

तेरा खड्ग मुर्ग में अजब रीज़[8] का,
के धारा चढ़े दंद[9] के सीस का।

दँद्या पर जो तूँ खड्ग जो खींच धाय,
छुटे जल कूँ थंड आग कूँ ताप आय।

अजब अज़दहा है तेरा जुल्फक़ार[10],
एक दम सूँ जाल्या है सालिम[11] कुफ़ार।

---

१ अधिकार में हैं २ द्वार ३ वीरता ४ रूह का बहुवचन, आत्मा ५ फ़क़ीर ६ प्रकट हुआ ७ क़ाफ़िर की जमा ८ मैदान ६ शत्रु १० हजरत अली की दोधारा तलवार का नाम ११ सब।

हुआ कुफ़र काला इसी दम सते,
के मार्या अहै दम उने हम[1] सते।

जो ख़ूँरेंज़[2] तुज हात में खड्ग है,
सो वो खड्ग कुफ़्फ़ार का मर्ग है।

जो चक तुजे ग़जब[3] बहर[4] ऊपर होय,
तो ख़ुश्क होय कर बहर ज्यूँ बर[5] होय।

बड्या है तेरा धाक नौखनी[6] मने,
तूँ वो शेर दिल है के नईं बन मने।

जो आया नज़ीक अज़दहा चौक कर,
सट्या दो तरफ़ उस कूँ दो टूक कर।

अगर अर्श कूँ कोई सटे ठेल कर,
तूँ ज्यूँ गेंद अमानत लेवे झेल कर।

जो सीमुर्ग़ सम[7] होय ढीनाइ ते,
करे टुकड़े बारीक तूँ राइ ते।

अगर नारा मारे तूँ ऐ शेर जान,
इदर कर जमीं पड़े आसमान।

सूरज कूँ जो घूरे तूँ टुक डाट कर,
चढ़े अर्श पर धाक तें न्हाट[8] कर।

जो कुल्लाब अछता ज़मीं के दुम्बाल,
तो असमान पर उस को सटता उछाल।

लहा तुज अंगे मोम ज्यूँ नर्म है,
के ग़ुस्सा तेरा आग ते गर्म है।

जो उलठे हो नौ खम पड़े पुश्त सूँ,
रखे थाँब कर एक अंगुश्त सूँ।

---

१ मुक़ाबले २ ख़ून करने वाला ३ क्रोध ४ दरिया ५ पृथ्वी ६ नौ आसमान ७ सम्मुख ८ दौड़ कर।

अम्बर धरत[1] ने हाल तुज ज्यास्त दाव,
के गेंदाँ सो बहुराँ हैं चौगान बाव।

अगर ज़ोर वो ज़ोर मंद शह करे,
घड़ी कर नौ असमान कूँ तह करे।

इसी धाक ते शाह मरदान के,
पड्या लहू कलेजे में असमान के।

जो हँस ले सटे तेग़[2] तूँ ढेर कर,
ज़मीं कूँ दो वसली[3] करे चीर कर।

अगर हाक मारे तूँ आ हाल[4] में,
छुपे अर्श जा डरते पाताल में।

किया रद सर्मा कुफ्र के काम कूँ,
दिया जोर फिर कर तूँ इस्लाम कूँ।

क्यों मौतक़द[5] होय सब जग तेरा,
के हज़रत खवे पर लिए पग तेर।

खुदा जानता हक़ के यो रास्त[6] है,
के तुज हिल्म[7] तुज गुसे ते ज्यास्त है।

सिफ़त क्या करूँ मैं तेरे हिल्म का,
शुजाअत अमल[8] बख़्शिश होर इल्म का।

लग्या तुज हुकम बीच जल थल होने,
तूँ आख़िर हुआ सब ते अव्वल होने।

वही बल है आख़िर जो कुछ बल होवे,
जो आख़िर हुआ वोच अव्वल होवे।

ख़िलाफत ते ऊँचा तेरा टार था,
ख़िलाफ़त तुजे बैसना आर[9] था।

१ पृथ्वी २ तलवार ३ एक प्रकार का चिकना काग़ज़ जिस पर लिपिक लिपि सुधारने को लिखता है ४ क्रोध सें ५ श्रद्धालू ६ सत्य है ७ शान्ति ८ अच्छे काम ९ बेकार।

बड़ा तूँच आख़िर बड़ा तूँ असल,
तूँ ज़ाहिर में आख़िर है बातिन अवल।

न था दिल तेरा खुसरवी[1] पालने,
ख़िलाफ़त किया दीन सँभालने।

तेरा मरतबा ऊँच ते ऊँच है,
अवल तूँ है आख़िर कूँ बी तूँच है।

बड़ा तूँ बड़े है तेरे सब यो काम,
ख़िलाफत हुई खत्म तुज पर तमाम।

अली का मुहब नईं जकोई सच तूँ जान,
हरामी पने का वही है निशान।

१ बादशाही

## दर सिफ़ते[1] इश्क़ गोयद

बड़ा इश्क़ का सबते दर्जा अहै,
के यक जा नहीं इश्क़ हर जा अहै।

अगर इश्क़ कुछ बिलबिलाँ कूँ जो नईं,
तो की आह नाले करे फूल तईं।

अगर इश्क़ नईं है तो की शमा पर,
पतंगा अपसे जाले सितम आय कर।

अगर नईं है आशिक़ चकोर चांद का,
तो रातां कूँ क्या सब्र जागला।

के लैला व मजनूँ जो कहवाये हैं,
सो इस इश्क़ ते नाँव यूँ पाये हैं।

जो यूसुफ की आशिक़ ज़ुलेखा न हुई,
ना करता उसे आज लग याद कोइ।

अयाज़ होर महमूद जो वो अहैं,
सो मशहूर इस इश्क़ तें वो अहें।

जहाँ दो हैं वाँ इश्क़ बिन कुच नहीं,
नहीं इश्क़ कुच जिसमें वो कुच नहीं।

इसी इश्क़ ते आशिक़ है सरफ़राज़[2],
पछे या हक़ीक़त अछो या मजाज़[3]।

१ प्रशंसा २ प्रसन्न होना ३ मजाज़ी।

## दर शरह शेर गोयद

कता हूँ तुजे पन्द[1] की एक बात,
के है फायदा इस मने धात[2] धात।

जो बेरब्त[3] बोले तूँ बेताल पचीस,
भला है जो यक बैत बोले सलीस।

सलासत[4] नहीं जिस केरे बात में,
पड्या जाय क्यों जुज़[5] ले कर हात में।

जिसे बात के रब्त[6] का फ़ाम नईं,
उसे शेर कहने सूँ कुछ काम नईं।

नको कर तूँ लट्ट बोलने का हवस,
अगर ख़ूब बोले तो यक बैत बस।

हुनर है तो कुछ नाज़ की बत्तियाँ,
के मोटाँ नहीं बांदते रंग कियाँ।

वो कुच शेर के पन में मुश्किल अछे,
के लफ्ज़ होर माने यो सब मिल अछे।

उसी लफ्ज़ कूँ शेर में ल्याएँ तूँ,
कि ल्याया है उस्ताद जिस लफ्ज़ कूँ।

अगर फ़ाम है शेर का तुज कूँ छन्द,
चुने लफ्ज़ ल्या होर माने बुलन्द।

रख्या एक माने अगर ज़ोर है,
बले भई मज़ा बात का होर है।

अगर ख़ूब महबूब ज्यूँ सूर है,
संवारे तो नूराँ[7] अली नूर[8] है।

१ नसीहत २ प्रकार-प्रकार के ३ विना अभ्यास ४ सुन्दर पद ५ पुस्तक ६ सलीका
७ चमकने वाला ८ ज्यादा चमकदार।

अगर लाक ऐबाँ अछे नार में,
हुनर हो दिसे खूब सिंगार में।

हुनर मुश्किल उस शेर में योच है,
के थोड़े अछें हर्फ़ माने सो ले।

जो माने हैं माशूक़ भोत धात का,
पनाया हूँ किसवत उसे बात का।

न निपजे न निपज्या है गुन ग्यान में,
सो तूती मुँज ऐसा हिन्दुस्तान में।

के बाताँ यो सुन कर मेरी ज्ञान कियाँ,
रह्या ठक् हो कुमर्याँ[1] खुरसान[2] कियाँ।

जिते शायराँ शयर हो आयेंग,
सो मुँचते तर्ज़ शेर का पायेंग।

के फ़ेरोज़[3] महमूद[4] अछते जो आज,
तो इस शेर कूँ भोत होता रिवाज।

के नादिर थे दोनों बी इस काम में,
रख्या नईं किने बोल अभूँ फ़ाम में।

यो सब शेर कहते यो सब शेर नहीं,
के बोलाँ किंधर होर माने कहीं।

शेर गरचे ली[5] लोग जोड़े अहैं,
बुरे भोत होर खूब थोड़े अहैं।

दो जग जिस उत्तम हीरे का मोल है,
वो हीरा सो हरएक मेरा बोल है।

रतन बे बदल यो मेरे जाँ बिकायँ,
वहाँ चाँद सूरज दलाली न पायँ।

---

१ कबूतर की तरह का एक पक्षी २ स्थान का नाम ३ प्रसिद्ध बहमनी शासक फेरोज शाह
४ प्रधान मन्त्री महमूद गवाँ ५ बहुत।

अवन मोती यो देक निपट लाजते,
समद पानी गुल कर हुआ लाजते।

के मानक मोती यो उत्तम ज़ात के,
नहीं देख्या मैं कहीं उस धात के।

जो कोई जौहरी है सो पैछान कर,
मँगेगा रतन कूँ क़दर जान कर।

परख देक तूँ काच होर पाच कूँ,
बराबर न कर दूध होर छाच कूँ।

जहाँ पाच अछेगा वहाँ काच क्या?
जहाँ दूध अछेगा वहाँ छाच क्या?

न यो बात हर एक के सात है,
ज कोई आरिफ़ है उस सूँ यो बात है।

तू फल चाख देख होर लज्ज़त कूँ फ़ाम,
न कर मोल सब का सगट[१] तीन दाम।

जो करता यकस का हुनर देख कर,
हुनर बन्द उसे नईं कते हैं हुनर।

नवा दिल से ल्याना है मुश्किल कना,
के आसान है देक कर बोलना।

जकोई यूँ करे इस में कुच फ़ाम नईं,
हुनर देक सकता बड़ा काम नईं।

हुनरवन्द उस कूँ कह्या जायगा,
जकोई अपने दिलते नवा ल्यायगा।

फ़र्क़ है अवल होर आखीर में,
तफ़ावत[२] अहै नीर होर शीर[३] में।

१ एक साथ २ फ़र्क ३ दूध।

हुनर देख सकता है उस्ताद का,
फ़हम[1] खोर है आदमी जाद का।

कहीं पन्द की बात इस धात में,
यू पन्द है यहाँ करने की बात नई।

अगर किसते तिल खास कुच जानता,
उसे दिल में उस्ताद कर मानता।

न होसी हुनर इस वज़ा किस सते,
न कुर्सी क़दम कोई अंगे इस सते।

अगर कोई ज्ञानी चतुर ज्ञान है,
बदी याँ च गो[2] याँ च मैदान है।

दिसे परगट हो इज्ज़त इस बात का,
के दर्पन मिझाये कंगन हात का।

दखन में जो दखिनी मीठी बात का,
अदा नईं किया कोई इस धात का।

अदा यूँ अताल होय तो क्या अजब,
के आलम सुन्या है यो चौफेर[3] सब।

जो आक़िल है यो बात माने वहीं,
क़दर इस अदा की पछाने वही।

दिवाना हूँ मैं इस रँगी बात का,
के हर दिल में जो हो करे टार आ।

कहाँ बात वो चंचल होर चुलबली,
के दिल कूँ नहयाँ सू करे गुदगुदी।

मेरी बात सुन बात इस धात बोल,
के जीव कूँ खुशी हो होर दिल कूँ कलोल।

१ शक २ गेंद, गोला ३ चारों तरफ

यो निर्मोल है बात उसे मोल नईं,
हरेक बोल है वही[1] यो बोल नईं।

सुख़नगो[2] वही जिस की गुफ्तार ते,
उछल कर पड़े आदमी ठार ते।

यो बोल्या हूँ सब गंज[3] ना रंज है,
अभूँ मेरे दिल में बहुत गंज है।

जो लग बरस कोई सर लेवे रंज कूँ,
न पावें कधीं इस छुपे गंज कूँ।

हुआ जीव जब शेर यू बोलने,
ख़ज़ीने[4] लग्या ग़ैब के खोलने।

रतन यो अथे दिल केरे खान में,
वहाँ ते ले आया हूँ दुक्कान में।

गुहर यू मेरे यूँ लगे झमकने,
के पानी हो गए मोती सीप्याँ मने।

अगर ग़ोते लग[5] बरस[6] ग़व्वास खाय,
तो यक गौहर इस धात अमोलक[7] न पाय।

यो मोती नईं वो जो ग़व्वास पाय,
यो मोती नहीं वो जो किस हाथ आय।

ग़व्वसाँ किते ग़ोते खा खाय कर,
मुए[8] हैं सो इस समर में आय कर।

अपी हो के ल्याना सो है झूट सब,
ख़ुदा ग़ैब ते देवे तो क्या अजब।

के हंस नमने बिच समद यक जाय तूँ,
मरे डूब तल सिर उपर पाँव हो।

१ ईश्वर की दी हुई जानकारी २ बात कहनेवाला ३ खज़ाना ४ खज़ाना ५ एक ६ वर्ष ७ अमूल्य ८ मरे।

नको बोल मज़मून तूँ होर का,
के काला है दो जग में मूँ चोर का।

जिता चोरी कर चोर अपै साव होय,
दग़ाबाज़ उचक्के कूँ माने न कोय।

चुरा कर चुराता न की चोर कोइ ?
यो बाताँ समजते सो हैं होर कोइ।

न मुँज कुच बड़ाई न मुँज लाफ़ है,
वले आरिफ़ाँ पास इंसाफ़ है।

जनम गर दंदी[1] रश्क ते तलमले,
इनायत के कामाँ सते क्या चले।

दखन में अथ्या लप लै तरह होर मैं,
दिया यूँ सलासत[2] कूँ भी ज़ोर मैं।

के फ़ेरोज़[3] आ ख़ाब में रात कूँ,
दुआ दे कर चूमे मेरे हात कूँ।

कहया है तू यूँ शेर ऐसा सरस,
के पढ़ने को आलम करे सब हवस।

तूँ यू कर के खसलत[4] यू तुज आय ना,
के तूँ खुश अछे होर किसे भाय ना।

तूँ ऐसी तरज़ दिल ते निपंजा[5] नवी,
के दुसरे करें तेरी पैरवी।

'वजही' तेरा ज़हन ज्यूँ बर्क़[6] है,
तुजे होर बाज्याँ में ली फ़र्क़ है।

तेरा शेर सुन दिल पिगलता है यूँ,
के पानी ते अबलोज[7] गलता है ज्यूँ।

---

१ शत्रु २ ठीक-ठीक शब्दों का प्रयोग ३ एक प्रसिद्ध कवि ४ स्वभाव ५ पैदा किए
६ बिजली ७ मिश्री।

तूँ 'वजही' कह्या शेर कइ धात का,
हुआ ज्यास्त तुज ते मज़ा बात का।

शेर बोलना गरचे अपरूप[1] है,
वले फ़ामना कहने ते ख़ूब है।

१ जिस की बराबरी का कोई न हो।

## वजही तारीफ़ शेर खुद गोयद

कता हूँ सुनो कान धर लोग हो,
कहावत मने बात जो आप सो।

अगर शेर कोई कहे नवा कर जो ल्याय,
तो खावाँ कूँ सुन रश्क अलबत्ता आय।

अपस में अपे देख सकते नहीं,
यकस का सो यक मान रकते नहीं।

अगर कुच का कुच किधर का किधर,
कहे तो कते हैं इसी हीच कर।

उड़ाने मिले उस कूँ चौंघेर ते,
फ़ज़ीहत[1] करें पाँव लग सीर सते।

अगर खूब जो बोले तो वो अहै,
वगर जो बुरा बोले तो यों अहै।

हुआ शेर का इस वज़ा काम जब,
तो अब शेर कहना छुटे क्या सबब।

वले जीव रहता नई कहे बाज यो,
अजब सरकश है अब जो दे राज यो।

शेर खूब कह कर जो ल्याना अहै,
अपस पर बला एक बिसाना अहै।

हुनर में हुनर कोई जोता[2] नहीं,
तरक करने गए तो भी होता नहीं।

यू बलवन्द बचन इस में बलभोत है,
समज थोड़ी लोगाँ में छुल भोत है।

१ बुराई करना २ खोजना।

जिते अक्ल दौड़ाए अंदाज़ सूँ,
क्या नई किने[1] बात इस नाज़ सूँ।

तूँ भूटे ते भूटे नको अछ शाद[2],
के भूटे में अछसी[3] न हर्गिज़ सवाद।

न कई देख कर किसतें पाया हूँ मैं,
यो ताज़ा तरह[4] दिल ते ल्याया हूँ मैं।

जकोई फ़हम[5] में टुक हपनाँ[6] (?) अहें,
सो दुसर्या के वो खुश चैनाँ अहें।

न मुँज जोड़ ना थाँब[7] असमान कूँ,
अजब कुच पहुँच है मेरे ज्ञान कूँ।

अगर टुक जो दौड़ूँ बलन्द धाँव कूँ,
उड़ूँ जग कूँ सब बांध कर पाँव कूँ।

हुनर कियाँ हैं यो बारीकियाँ लाफ़[8] नईं,
वो आदमी नहीं जिस में इन्साफ़ नईं।

के इन्साफ़ देवे वही रास्त[9] है,
के इन्साफ़ ताअत[10] ते बैख्यास्त है।

न कर बात तूँ ना समज आमना,
बहुत मुश्किल है बात कूँ फामना।

हरेक कह के देकने होर ज़ोर,
हमीं इसतें भी ढूँडते कुच होर।

भुतें ना समज भुंजत्या[11] शोर क्या?
समभने जो समजे के है होर क्या?

अता[12] कुतुब की मदह[13] कर अख्तियार,
जो रहे यो क़यामत तलक यादगार।

१ कहे २ प्रसन्न ३ होता ४ प्रकार ५ अक्ल ६ नया (?) ७ स्तंभ ८ भूठी प्रशंसा
९ सही १० ताईद में ११ क्रोध १२ अब १३ प्रशंसा।

## मदह इब्राहीम कुतुबशाह गोयद

इब्राहीम कुतुबशाह राजाधिराज,
शहंशाह है शाहशाहाँ में आज।

अदल बख़्शिश होर दाद[1] उसते अछे,
सदा ख़ल्क़[2] सब शाद[3] उसते अछे।

जिते पादशाहाँ हैं संसार के,
भिकारी हैं सब उसके दरबार के।

सुलेमाँ[4] ते फ़ाज़िल है उस बख़्त[5] बल,
परी, देव, जिन, सब हैं उस हुक्म तल।

अपस अदल[6] के बल ते वो जग अधार,
रख्या बाग बकरी मिला एक ठार।

धरे हुक्म हिक्मत सूँ चौंधेर से,
जहाँ सब ल्या वो जहाँगीर[7] से।

तो यूँ अदल अब जग में होने लग्या,
के भुई का भूँक भार डूले लग्या।

ऐसे शाह आदिल के गुस्से ते डर,
लिया है गगन कूँ पौन पीट पर।

यता बल है उस अदल के फ़न मने,
के बिजल्याँ खड्याँ काँपतियाँ खन मने।

अम्बर ते हैं यूँ बिजलियाँ ज़र बन्द,
तो बरसाते हैं महूँ बदल रंग खण्ड।

यता दाद इन्साफ़ होर अदल था,
के मुर्ग़ा बी कूँ बाज़ का डर न था।

१ इन्साफ़ २ जनता ३ प्रसन्न ४ कुरान में जिक्र मिलता है कि सुलेमान एक ऐसे पैगम्बर हुए हैं जो मनुष्य के साथ देवों और जिन्नों पर भी शासन करते थे ५ भाग्य ६ इन्साफ़ ७ संसार भर का विजेता।

कबूतर अव्वल के दन्दाँ[1] सारने
सो बहरी[2] कूँ लाताँ लगे मारने।

अगर राजोट[3] चक फरिश्त्याँ सूँ लाय,
तो नौखन की गुडक्याँ सो केल्याँ मंगाय।

सदा पादशाही वो धरत है शै,
अनन्द ऐश, इशरत जो करता है शै।

सो मोतेक उमीद होर आस ते,
मेग्या एक फ़र्ज़न्द ख़ुदा पास ते।

के फ़र्ज़न्द ते नावँ अछता अहै,
अपै गए तो भी नावें अछता अहै।

यही बात फिर-फिर के कहता अछे,
इसी ध्यान में नित वो रहता अछे।

जो एक दीस उस शह को फ़र्ज़न्द हुआ,
वो फ़र्ज़न्द उसका सो दिलबन्द[4] हुआ।

इने तेज़ ल्याया वो अपने संगात,
सिकन्दर के ताले ख़िज़र[5] की हयात।

बदन सीम[6] क़द सरो ज्यूँ रास्त है,
के सूरत में युसुफ[7] ते कई ज्यास्त हैं।

१ शत्रु २ एक पक्षी ३ हुकुमत ४ स्नेही ५ खिज्र सिकन्दर की फौज का एक सिपाही था। कहा जाता है एक बार सिकन्दर अपनी सेना के साथ आबेहयात पीने जाते हैं और मार्ग में ही सेना तितर-बितर हो जानी है। तब खिज्र को भाग्यवश आबेहयात मिल जाता है, जिससे वे आज तक जीवित हैं। मुसलमान विश्वास करते हैं कि खिज्र अमर हैं ६ चाँदी ७ मिश्र के एक पैगम्बर हुए हैं। आपकी सुन्दरता सर्वप्रसिद्ध है। युसुफ जुलेका की अनेक कथाएँ फारसी में प्राप्त होती हैं।

## तारीफ़ सिफते फर्ज़न्द गोयद

छुप्या सू यो उसके मुखनूर अंगे,
के ज्यूँ चांद छिपता अहै सूर अंगे।

ज़ुल्फ़ लाम अलिफ क़द दहन[१] मीम है,
यो खूबी सो उसकी च तकसीम है।

उजाला पड्या आज यूँ नूर का,
के हाजत[२] नहीं चांद होर सूर का।

दो जग आज नूरन अलोनूर[३] है,
ज़मीं चांद असमान सो सूर है।

जो नादान बालक नहना लाड़ का,
नवा फूल अहै शाह के झाड़ का।

लग्या देखने फ़ाल अम्बर रमाल[४],
सूरज चाँद के फाँसे[५] नियत[६] सूँ घाल।

कह्या इल्म में देकना वो आप ते,
के फर्ज़न्द यो बख़्तवर बाप ते।

रखे नाँव करतार[७] कर्न[८] मँग पनाह,
मुलक्खन मुहम्मद कुली कुतुबशाह।

पड़े हाथजाँ इस बख़्तवार का,
सुना होय माटी सो उस ठार का।

सितारे जड्या सर शफ़क़ रंग कुला[९],
हुआ भुनभुना खेलने सुंबला[१०]।

दिसें नकश ज्यूँ नज्म चन्द होर भान,
के दूरांही कहकशा[११] करे आसमान।

---

१ मुख २ आवश्यकता ३ बहुत ज्यादा प्रकाश मय ४ ज्योतिषी ५ किरण ६ शोभायमान ७ ईश्वर ८ से ९ मिला कर तेलुगु शब्द 'कल्पू' से १० एक नक्षत्र ११ आकाश गंगा।

सुरज आप होर चाँद सो माय हो,
गँवारा[1] अम्बर होर बदल दाय हो।

अर्श कुर्सी कुलाबरे[2] ये थीर कर,
के कुदरत कूँ बादे हैं ज़ंज़ीर कर।

तरफ चारपाई तरफ़ चार हैं,
मलायक[3] उसे जर्म[4] झुलनहार हैं।

सो पखवे[5] में शह दाय की यूँ अछे,
कचा मोती सींपी मने ज्यूँ अछे।

अजब दूध उस दाय मन मीत का,
के हर बुन्द कूँ तासीर है अमरोत का।

सदा जग में बालक वह जीता अछे,
के इस धात का दूद पीता अछे।

जो भुईं पर सटे दूद चख पीव कर,
अजब क्या जो मुर्दे उटें जीव कर।

जकोई दूद इस धात पीता अछे,
सदा जग में वो क्यों न जीता अछे।

बड़े कोई दिस होर कोई मास कूँ,
बड़े शह हरेक तिल हरेक तास कूँ।

करो जम दुआ जीव सूँ जग मिल उसे,
हयात होती है ज्यास्त तिल-तिल[6] उसे।

---

१ झूला २ जंजीर, कोई भी ऐसी चीज़ जिससे किसी चीज़ को लटकाया जाय ३ फरिशते ४ सदा ५ गोद में ६ क्षण-क्षण में।

## सिफ्ते मेज़बानी

खुशियाँ सूँ जो शह मेज़बानी किनाय,
सो तिरलोक के लोग महमान आय।

अजब तुहफ़े कुदरत ते आने लगे,
के देक इस मुल्क रश्क़ खाने लगे।

छुपा था जकुच ग़ैब[1] में आज लग,
सो परगट लग्या देखने अब दो जग।

नवियाँ नेमताँ नौ फ़लक बीच भर,
ले कर आये ढो कर मलिकशह के घर।

के शह कूँ खुशी यू बड़ी आज है,
अनन्द पर अनन्द काज पर काज है।

म्या पंजतन[2] का मदद ल्याय कर,
सो तौफ़ीक़[3] करतार[4] ते पाय कर।

महल शह सिंगारे यूँ उस काज कूँ,
सँवारे थे ज्यूँ अर्श मेराज कूँ।

हरेक महल का जो छजा अर्श है,
बदल बाज़ असमान सो फर्श है।

महल ज्यूँ है काबा धरे जोत साफ़,
नौ असमान करता है निस दिन तवाफ़[5]।

अजायब तबक़[6] है धरत बान का,
के ढाँके है सरपोश असमान का।

तेरी बज़्म[7] में शह अजब नूर है,
के किरनाँ बत्तियाँ, शमां सो सूर है।

---

१ गुप्त २ पाँच तन मुहम्मद, अली, फातेमा, हसन और हुसैन ३ मदद ४ ईश्वर
५ चक्कर करना ६ तशतरी ७ महफिल।

जो शह शमा रोशन किये सूर का,
मलिक तेल ल्या कर सटे नूर का।

सूरज शमा होर थाल घन हफ्त[1] रंग,
दिवा[2] चंद पुनम का सितारे पतंग।

कलंक चाँद में है सो दिस्ता है यूँ,
के सुन्ने की प्याली में हैं मिश्क[3] ज्यूँ।

दुनिया में दो कन[4] लोग फिरने लगे,
सिफ़त शह की सब जग में करने लगे।

के महमानी इस धात की आज कोय,
न कर सके दुनिया शहबाज़[5] कोय।

---

१ सात २ दीपक ३ कस्तूरी ४ हर तरफ़ ५ बादशाह की तरह।

## बख़्शीश करदन[1] इब्राहीम कुतुबशाह

मलायक जो ख़िदमत करन आए थे,
नवियाँ नेमताँ ग़ैब कियाँ ल्याये थे।

मदन भोगी शह मस्त मतवाला हो,
ख़ुशियाँ पर ख़ुशियाँ देख ख़ुशहाल हो।

यता कुछ दिये शह फ़रिश्ताँ कूँ दान,
के बाँदे मुने काँ नवा आसमान।

खुल्या नईं यो हद का मेरी जान कूँ,
दिए शह कड़क हस्त असमान कूँ।

अम्बर दान पाया है ज़र बेशुमार,
तो ढूँढता है रखने कूँ दिन रात टार।

भरे बदरे[2] शह जो दिए माल भर,
सो धरती उचाले[3] चली पीट पर[4]।

दिए धरत कूँ दान यूँ प्यार ते,
के गुडग्याँ पे आया भूक भार ते।

यता कुछ शहंशाह बख़्शे हैं धन,
ज़मीन टार मंगती है असमान कन[5]।

दिए दान सब जग कूँ दिए मान अनन्त,
जवाहर सूँ खेले शहंशा बसन्त।

करम की नज़र कर मिठी बात सूँ,
हरेक आदमी कूँ हरेक धात सूँ।

किए कोट बख़्शिश अदिक लाक तें,
तो अरज़ाँ[6] हुआ यूँ सुना ख़ाक तें।

१ करना २ मुट्ठी भर-भर कर ३ उठा कर ४ शाह के दान के भार से धरती पीठ के बल गिर पड़ी ५ से ६ सस्ता।

जगत अब गुहर यो बिखरने लग्या,
के ख़ुश्की में हंस आके चरने लग्या।

बख़्शने लगे शाह यूँ हम सते,
तो पीला हुआ सब सुना ग़म सते।

ख़यालाँ यो देक शह तेरे दान के,
हुए लोग हैरान असमान के।

घरे घर ख़ुशी होर अनन्द काज हुआ,
के फ़रज़न्द इस राज कूँ आज हुआ।

यती दास हुआ दीस होर रात का,
अनन्द ऐश इशरत देख इस धात का।

ख़ुशियाँ यूँ लगे करने आकाश पर,
के पाताल के लोग पाए ख़बर।

नको जानो झाड़ाँ कूँ है झाड़ कर,
के पाताल लोग आए हैं फाड़ कर।

तमाशा देखे शह के घर आज का,
अनन्द सुख बधावे ख़ुशियाँ काज का।

किए ऐश यूँ शह हरेक बात में,
के देखा नहीं कोई अभूँ ख़ाब में।

जो पड़ने सटे शह कूँ मकतब मने,
हुनर सीक हुनरवन्द हुआ सब मने।

जो वस्ताद देवे सबक़ बे तलक,
पड़े ज़हन मूँ शह अपी ते तलक।

यता[१] ज़ोर था ज़हन शहज़ाद कूँ,
के तालीम फिर देवे उस्ताद कूँ।

१ इतना।

जो अवल ल्या शह अलिफ़ का सबक़,
धरत सात हुए कशफ़[1] होर नौ तबक़[2] ।

सो वो जान सुभान अपस ग्यान ते,
हुआ ज्यास्त हिकमत में लुक़मान[3] ते ।

अम्बर नईं सिक्या शह के चक धाँवँ[4] कूँ,
वो उस्ताद-उस्ताद था नाँवँ कूँ ।

के मक़तब में शह बैट सब देस बीस,
हुआ आलिम व शायर व खुशनवीस ।

---

१ प्रकट होना २ जमीन के नौ भाग ३ कुरान में लुक़मान का जिक्र है जो सर्वज्ञानी बताया गया है। यहाँ कवि कहता है कि शाह लुक़मान से भी अधिक ज्ञानी हो गया था ४ तरीक़ा।

## सिफ्त शबाब[1] शहज़ादा

जवानी के दरया कूँ आया अधान,
मुहम्मद कुतुबशह हुआ अब जवान।

यता ज़ोर था उसके यक दस्त[2] सूँ,
उचा कर पछाड़े मते हस्त कूँ।

अजब जान मैमन्त माता है वो,
के बागा सूँ पंजा मिलाता है वो।

चले ज़ोर कर हम सूँ जिस नीत उन,
ज़मीं में धुँसे पाँव गुडग्याँ लगन।

दोनों खेज़ औतार भुज-बल ग़रूर,
मुक्कियाँ सूँ पहाड़ाँ करें चूर-चूर।

अगर शाह खंजर लेवे हात में,
उबेड़ पकड़ बाग कूँ बात में।

अगर सख़्त पौलाद तें हुए झाड़,
सटे पेड़ ते उस कूँ नहाँ[3] सूँ उपाड़।

करे ज़ोर तालीमख़ाने[4] मने,
वा तन्हाच[5] था उस ज़माने मने।

शहनशाह कूँ ज़ोर पर लाफ़[6] है,
के खन[7] नाल[8] होर नील[9] कुहकाफ़[10] है।

जिते लाफ़ धरते अथे बल मने,
हुए आजिज़ उसकी सँपड़ गल मने।

---

१ जवानी २ हाथ ३ नख, अर्थात् झाड़ों को भी कोमल नख की तरह उखाड़ फेंकता है ४ मल्लशाला ५ अकेला ६ गर्व ७ आकाश ८ जूते के बराबर ९ पानी (तेलुगु 'नील्लु' से) १० बड़े-बड़े पहाड़।

## सिफ्त मजलिस तर्ब[1]

शहंशा मजालिस किये एक रात,
वज़ीराँ के फ़रज़न्द तें सब संगात।

हरयक ख़ूब सूरत हर एक ख़ुश लक़ा[2],
सो हर एक दिलकश हर एक दिल रुबा।

महाबत[3] के सामाँ में जम-जम है ज्यूँ,
शुजाअत[4] के कामाँ में रुस्तम[5] है ज्यूँ।

हर एक ख़ुश तबा होर आक़िल अछे,
हर एक ख़ुश फ़हम होर फ़ाज़िल अछे।

नदीम[6] होर मुतरिब[7] सुगढ़ फ़हमदार,
अथे शह सूँ मिल कर यो सब एक टार।

सुराही प्याले ले हाताँ मने,
नदीमाँ तें मशग़ूल बाताँ मने।

लगे मुतरबाँ गाने यूँ साज़ सूँ,
के धरती हिली मस्त आवाज़ सूँ।

जो मुतरिब वो सहरा में इस धात गाय,
तो फिर इन कूँ इस शौक़ ते हाल[8] आय।

कने ताल सूँ यूँ लय ख़ुश होताँ,
के सुन कर समाँ[9] देवें नौ आसमां।

जो गावँ व शह कूँ गुमाते अथे,
सुराँ पै वो रागा जमाते अथे।

नदीमाँ लताफ़त में जो चक आयँ,
तो रोत्याँ कूँ ख़ुश कर घड़ी में हँसाय।

---

१ गाना २ ऊँचा ३ धनी ४ वीर ५ ईरान का एक वीर योद्धा प्रसिद्ध है ६ मुसाहब
७ गवैये ८ मस्त हो जाना ९ ताल देने लगे।

शराब होर सुराई नुकुल होर जाम,
होय मस्त मजलिस के लोगाँ तमाम।

जो हुई रात आधी पछे दो पहर,
खबरदार याराँ हुए बे खबर।

बिसर गइ नदीमा तरज़ बात का,
गँवाए खबर मुतरिबाँ ज़ात का।

जो आक़िल अथे वो सों सब हिच हुए,
दो प्याले चढ़ा कुच का कुच हुए।

न मिलते न खोली झगड़ते कहीं,
यकस के उपर एक पड़ते नहीं।

लगे मस्त हो सटे मस्ती सँगात,
यकस के सो पावाँ उपर एक हात।

सो यूँ कुच वो याराँ हुए बेखबर,
के पानी पिते थे शराब है ककर[1]।

यकस कूँ बुला एक अडनाँव[2] सूँ,
गले लगते थे मस्त हो छाँव सूँ।

बजावो जो कई तो उन्हें गाय कर,
मसे मुतरिबाँ खुश खुशी पाय कर।

सुराही प्यांले सूँ हमदस्त हो,
कराँ करते थे वो दोनों मस्त हो।

यता मस्त साक़ी हुआ सुद गँवाय,
के प्याला मंगे तो सुराही कों लाय।

वो मद पी के मतवाल अब सख़्त हुआ,
उठा के चिल्लाने केरा वक़्त हुआ।

१ कह कर २ दूसरे नाम से

देखे शाह मजलिस हुई इस वज़ा,
किसी कूँ अछो घर किसे दी रज़ा।

किए शह कू शाद[1] उस वक्त पर,
गये ज्यास्ती सब रहे मुख़्तसर।

दिसे चार बालिश्त में शाह यूँ,
के चौथे बुरज[2] में अछे माह[3] ज्यूँ।

सो वैसे में टुक शाह कूँ नींद आय,
वो नींद आ तमाशे अजब कुच दिखाय।

दिखे ख़ाब में शाह के एक बन अहे,
वो बन नईं जमीं के उपर खन अहे।

फिरें चाँद सयाँ सुन्धरियाँ उस मने,
सितारे नईं कयाँ परियाँ उस मने।

हिलावे जो टुक लट की जंज़ीर कूँ,
दिवाना करें तिलमने नीर कूँ।

दिवाने हो कर झाड़ फिरते अथे,
पटापट फुलाँ मस्त हों पड़ते अथे।

अथा हौज़ होर वाँ अथियाँ[4] सुन्दरियाँ,
के पानी किनारे खड़ियाँ थियाँ परियाँ।

के गुंचे सों खुल फूल झड़ते अथे,
पंखी आके बेसुद हो गिरते अथे।

चमन दर चमन सरो दुरस्त थे,
कलियाँ सर ख़ुश होर फूल सो मस्त थे।

सो झाड़ाँ कूँ मेवा यता बार था,
के डाल्याँ कूँ पेड़ाँ कने टार था।

---
१ प्रसन्न २ घर, क्षेत्र ३ चाँद ४ थीं।

अथा महल वाँ एक ऐसा बलन्द,
पवन सार ना हो सके सट कमन्द।

अजब पानी उस ठार का साफ़ था,
के अमरीत पर भी उसे लाफ़[1] था।

यकायक उस महल पर एक नार,
कितक[2] छन्द सूँ आई अपसे सिंगार।

जो दिखलाय आ मुख काबा सो धन[3],
सरो सर निवाये थे सजदा करन।

दिसे यूँ धन उस महल के फ़र्श पर,
सूरज सार हुआ है मगर अर्श पर।

दो कुच दो मुफ़रह[4] की कासे[5] है ज्यूँ,
दो जुल्फ़ाँ दो धर सरक पासे हैं ज्यूँ।

पड़े जी कोई इस सरक[6] काँस्या मने,
सटे हत मुफ़रह के काँस्याँ मने।

चंचल का जो लब लाल याकृत है,
सो आशिक़ के वो जीव का कूत[7] है।

रंगा रंग चमनाँ मने फूल थे,
नवल शाह तमाशे में मशग़ूल थे।

पड़ी अवचर्ती[8] दृश्त उस नार पर,
अक्ल गुम हुई शाह हुआ बेख़बर।

सो इस बेसुदी में बी थे वो च धुन,
के लुब्दाय[9] थी भोत जोराँ सो मन।

जो देखा अथा ख़ाब में माह कूँ,
हुआ ख़ाब में ख़ाब उस शाह कूँ।

---

१ गर्व २ थोड़ीदेर में ३ स्त्री, औरत ४ आनन्ददायी ५ काँच के प्याले ६ जाल ७ भोजन ८ अचती, अच्छी लगती ६ लुब्ध करती थी।

जो उस नींद में ते हुआ टुक हुश्यार,
न थी उस सबूरी न था उस क़रार।

न भुई पर दिसे वो, न असमान में,
रह्या शह उसी नार के ध्यान में।

लग्या तलमलाने बहुत धात सूँ,
कह्या जाय ना बात वो बात सूँ।

न यो बात हर एक कूँ फ़ाम होय,
वही जाने जिस पर जो यो काम होय।

कधीं चक हँसे होर कधीं चक रोय,
कधीं सुद पावे कधीं सुद खोय।

उसी धात दिन रात रहता अछे,
अपस में अपै यूँ वो कहता अछे।

पड़ी तल खुले तन बिरह बस सती,
गुलालाँ लगे झड़ने नरगिस सती।

भुलाय चंचल धन वो यूँ शाह कूँ,
के लुब्दाय ज्यूँ कहरुबा[1] काह[2] कूँ।

उठे होर फिर सोय शाह जाय कर,
के वो नार बी ख़ाब में आय कर।

जो हर बार यूँ ख़ाब में यार आय,
तो आशिक़ कूँ बिन ख़ाब ही कुच न भाय।

परेशान हैरान बेताब था,
न कुच उस को आराम ना ख़ाब था।

१ चुम्बक २ कुशा, घास।

## ग़ज़ल

पीव अपने कूँ टुक आज मैं निस सुपने देखी सोय कर,
जब पीव चल्या सट सेज मुँज तब सोती उठी रोय कर।

हट बिरहा अपना सार ने मुँज चंचल लाग्या मारने,
न जानूँ साईं कारने भुई अजूँ क्या-क्या होय कर।

न पूछूँ बहमन जोतिषी कब मिलना पीव सूँ होय,
ग़म बिरहा सब में सोयसी ना जाने दुःख यो कोय कर।

क्यों टालूँ बिरहा झाल सकी नईं सकती हूँ सम्भाल सकी,
अब क्यों कर पाऊँ लाल सकी जो बैठी हत ते खोय कर।

यकता में सहेली मरना दिल दूजे पर ना धरना,
उस पीव कूँ अपना करना इस पापी जीवँ कूँ खोय कर।

लग्या शह उसासाँ भरन आह मार,
के नज़दीक नईं हैं वो गुनवन्त नार।

कधीं बेख़बर होय कधीं होय हुश्यार,
कधीं पीव-पीव कइ कधीं यार-यार।

यों सुन मुतरियाँ सब ख़बरदार होय,
जो मस्ताँ थे वों सो हुश्यार होय।

भोत धात सूँ बात समजाय कर,
कहे शह कूँ नज़दीक यूँ आय कर।

के "ऐ शह तूँ जम[1] शाद[2] ख़ुर्रम[3] हुआ च,
नहीं ग़म तुजे कुंच तूँ बेग़म हुआ च।

जकुंच तुज कूँ होना सो हाज़िर है सब,
उसासाँ जो भरता सो तूँ क्या सबब।"

१ हमेशा २ खश ३ आनन्दित।

कह्या शह "यू दिल मनीच धरना भला,
किसी पास ज़ाहिर न करना भला।

के यो ख़्याल होर ख़ाब होर वहम है,
ख़ुदा कूँ मेरा हाल सब फ़हम है।

किसी कूँ के मुँज इश्क़ उसका अहै,
वही जाने मुँज इश्क़ जिस का अहै।

जकोई राज़ यो बाब[1] कन खोलेगा,
दीवाना हुआ कर मुँजे बोलेगा।

नहीं बात कहने की यो खोल कर,
के समजाऊँ अब किस कूँ मैं बोल कर।

अभूँ सेज पर मौज[2] ज्यों आब में,
के चटका लगा गई सर्का ख़ाब में।"

जिता मुतरिबाँ शह कूँ समजा कहे,
तग़ाफल[3] किये शाह होर चुप रहे।

किते किये के मस्ती के चाले हैं यो,
किते किये परन के उलाले[4] हैं यो।

किते किये उसे कुच्च ओछ्र हुआ,
किते किये उसे इश्क़ का चट हुआ।

छुपी बात के पर्दे कूँ खोलने,
अपस में अपै यूँ लगे बोलने।

जो वैसे में मुतरिब ख़ुश आवाज़ नाम,
अथा शाह का एक ख़ासा गुलाम।

सूरज सा जलाजल[5] लेकर हात में,
लग्या ज़हरा[6] ज्यूँ गाने इस रात में।

१ द्वार २ लहरें ३ अनजान बन कर ४ छाले ५ एक यंत्र ६ एक नक्षत्र, कहा जाता है ज़हरा एक सुन्दर गायिका थी।

दुआ कर सता[1] कर मना कर अवल,
पड्या शह के आँग पिछें यो ग़ज़ल।

## ग़ज़ल

चलो ना जाय ऐ सहलियाँ हमारा लाल जाँ अछता,
वले कोई जानता नईं है के भांदू वो कहाँ अछता।

निशाँ नईं, बेनिशाँ है वो निशाँ उसका न कर मुंज कूँ,
सकी उड़ जाएँ पंखी हो अगर उस कईं निशाँ अछता।

वो तन के बोल रे सब ऐ अरी ऐ बाव[2] ना चुप रह,
अगर तुज फ़ाम है तो कह मेरा वो पीव काँ अछता।

किसे मैं अन्त देऊँ मेरा खुले अब बख़्त क्यों मेरा,
न होता हाल यूँ मेरा, अगर वो महरबाँ अछता।

हुए लब ख़ुश्क नैनाँ तर कहे जग मुंज कूँ आशिक़ कर,
के मस्ती होर यह नेहा होर छर[3] सकी यो नईं निहाँ[4] अछता।

१ प्रशंसा २ पगली ३ छल ४ गुप्त

## आगाही याफ़तन× इब्राहीम अज़ इश्क़ मुहम्मद कुली कुतुब शाह

छुपी रात उजाला हुआ दीस का,
लग्या जग करन सेव परमेस का।

शफ़क़[1] सुब्ह का नईं है असमान में,
के लाले[2] खिले मुम्बुलिस्तान[3] में।

जो आया झमकता सुरज दाट कर,
अंधारा जो था सो गया न्हाट[4] कर।

सूरज यूँ है रंग आसमानी मने,
के खिल्या कमल फूल पानी मने।

हर यकस कूँ हर एक कुच काम था,
नवल शाह कूँ उस नार का फ़ाम था।

कह्या शाह अब हाल नईं मुँज मने,
भला है जो गंज[5] हो अभूँ कुंज मने।

अपस में अपै फ़िक्र कुछ गूँद[6] कर,
रह्या गुंचे के नमने मुख मूँद कर।

के धरता हूँ दिन में जकुच बात मैं,
करूँ जाके वो बात किस सात मैं।

न कोई यार दिल सोज़ महरम[7] है मुँज,
नईं को हम नफ़स[8] होर हम दम है मुँज।

अपस सूँ अपीच आज महरम हूँ मैं,
अपस सूँ अपीच आज हम दम हूँ मैं।

जिते इस ज़माने मने यार हैं,
दग़ाबाज़ ऐवाँ चुनन हार हैं।

×प्राप्त होना १ उषा की लाली २ एक फूल ३ स्थान, बाग़ का नाम ४ भाग कर ५ हाथी ६ विचार कर के ७ जिस से कोई बात गुप्त न रहे ८ साथी, मित्र।

उनो कूँ पत्या[1] बात बोल्या न जाय,
उनो के कने दिल कूँ खोल्या न जाय।

पत्याना उनो कूँ कहो क्यों ककर,
के दिल में बुरे, खूब हैं मूँ उपर।

यो यारी में किस धात का क़हर[2] अछे,
जो मूँ में शकर दिल मने ज़हर अछे।

जकोई यार याराँ मने नेक है,
ज़बान होर दिल दोनों उस एक है।

चलन्त[3] देक कर तूँ हरेक कूँ समज,
के धोता सुलक्खन है बैस्या सो लज।

न मैं भाई में हूँ न मैं माय में,
के तालिब कूँ है लाफ़ तन्हाई में।

जो कोई घर में मशगूल अछे यार सूँ,
नहीं काम कुच उस कूँ बाज़ार सूँ।

जो मश्ताक़[4] आशिक़ है दीदार का,
ग़नीमत है उस याद भी यार का।

जिसे यार का ध्यान नित यार है,
दो आलम की मुहब्बत तें बेज़ार है।

पिरत शह कूँ डाट्याँ बहुत ज़ोर सूँ,
हुवा फ़ारिग़ इस जग के शर शोर सूँ।

किया लोग नज़दीक के दूर सब,
नदीम[5] होर मुतरिब बुरे सब अजब।

अभूँ लाल मद नैन प्याला हुआ,
नदीम आह मुतरिब सो नाला हुआ।

---

१ भून काल की बातें २ क्रोध ३ चाल-चलन ४ इच्छुक ५ मित्र।

जो दहलीज़[१] दे शह सुता घर मने,
पड़े मुतरिब्राँ शोर होर शर मने।

रोने ते आवाज़ सुन आह का,
कहे हाल तग़य्युर[२] हुआ शाह का।

अपे है गम्भीर होर मन थीर नईं,
हमीं क्या करें अब के तदबीर नईं।

इब्राहीम शह कन कहन मुतरीब आय,
के क़िस्सा यो शह का च पाया न जाय।

कहे शह कूँ शहज़ादे का हाल सब,
के यूँ हाल उसका है पामाल[३] सब।

निकली हरयक आह यूँ शाह ते,
के नौ ख़न कबाब होयँ उस आह ते।

चमन सेज पर आप सीस पाड़[४] कर,
सख्या कपड़े जूँ फूल सब फाड़ कर।

शहंशा सुन्या बात यूँ सर बसर[५],
चल्या फ़िक्रबन्द हो हरम[६] के अधर।

कह्या माय कूँ बाप वो आय कर,
के फ़रज़न्द कूँ देक टुक जाय कर।

के फ़रज़न्द का कुच्च ख़बर नईं तुजे,
ख़बर ले ख़बर यो अगर नईं तुजे।

न दिन टुक क़रार[७] उस न निस ख़ाब है,
के आरम नईं होर बेताब है।

अपस में अपै आह भरता अहे,
दीवाना हो कर शाँद (?) करता अहे।

१ चौखट २ बदल गया ३ बरबाद ४ डाल कर ५ सिल-सिले से ६ मकान का जनानी हिस्सा ७ चैन।

सुनी बात इस धात जब माँ जनी,
जो सारी थी सो फ़िक्र सूँ हुई खनी।

वो माँ बाप बेहोश हो, भर उसास,
चले मिल कर अपने सो फ़रज़न्द पास।

जो उस हाल सों देखे फ़रज़न्द कूँ,
बिसर गए अपस के सुख आनन्द कूँ।

महरबान माँ बाप वो दो संग,
सो शहज़ादे के पाँवो पड़ने लगे।

कहे "शह न कर ग़म तूँ ख़ुश हाल अछ,
सदा सुर्खरु[1] ज्यूँ तूँ गुल्लाल अछ।

नको दिल कूँ अपने फ़िक्रबन्द कर,
फ़िक्रबन्द की[2] है तू अनन्द कर।

दोनों मिल के लाक आरज़ू होर चाव,
कहे शह तेरा दर्द हमनाँ कूँ आव।

अपस दिल की तूँ गाँट अब खोल शह,
तेरा हाल यूँ की हुआ बोल शह।

उठ्या शाह तब आह पर आह मार,
कह्या बाप होर माँ कूँ बेशक पुकार।

अजब एक दर्द मुँज है दारु नहीं,
समद पूर है होर कोई उतारु नहीं।

दवा करने याँ आदमी काम नईं,
के यो दर्द आदमी कूँ च कुछ फ़ाम नईं।

मुहब्बत के भवँर[3] में हिलग्या हूँ मैं,
दीवाना हूँ यारी कूँ बिलग्या हूँ मैं।"

१ ख़ुश रहना २ क्यों ३ पानी का भँवर।

जो देख्या था ख़ाब उस रात कूँ,
सो उस ख़ाब के राज़ की बात कूँ।

कधीं दिल में राखे कधीं मूँ में ल्याय,
कधीं कुच बोले कधीं कुच छुपाय।

बराहीमशह जाँ पैछान कर,
कह्या शाह का हाल सब जान कर।

के यो हाल नौख़ेज़[1] होर फ़र्द है,
भौतेक उसे इश्क़ का दर्द है।

मुहब्बत तो ली गर्भ धरता अहै,
वले कहने कूँ शर्म करता अहै।

कहे शाह के तद्बीर यो सहल है,
अगर ना करे तो बहुत जहल है।

१ नया।

## मश्वरा मादर व पिदर शहज़ादा[1]

ब्राहीम कुतुबशाह मजलिस सिंगार,
किए मुस्तइद[2] मो पै इशरत[3] अपार।

जितियाँ खूब खुश शक्ल थियाँ सुन्दरियाँ,
सो करनाटक होर गोर गुजरात कियाँ।

जो चीन होर माचीन के थे बुताँ,
सो खुशतबा खुशफ़हम खुश सूरताँ।

हर यक खूब महबूब बुत फ़ारसी[4],
बदन ज्यूँ जलती अछे आरसी।

जो सहेल्याँ वो झमकायँ मुख नूर कूँ,
दीवाना करें चाँद होर सूर कूँ।

अगर देकता जोत उनन नूर का,
फरिश्ता न करता सिफ़त हूर का।

जो आवें चमन में सकियाँ साज सूँ,
फुलाँ गुंचे हो जाएँ फिर लाज सूँ।

मिलियाँ आज नारियाँ सो संसार कियाँ,
अंखियाँ लाल घुंन्चियाँ[5] हर यक नार कियाँ।

मजालिस अजब शाह आली किए,
के हूराँ कूँ ल्या बहिश्त खाली किए।

परियाँ सुन्दरियाँ होर अंचल पराँ,
चंदा मुख है चन्दना सो तन गोहराँ[6]।

अजम्भा किए काम शह जग अधार,
परियाँ होर हूराँ मिल्या एक ठार।

---

१ शहजादे के माता पिता का परामर्श करना २ तैयार ३ आनन्द ४ ईरान के ५ गुमची
६ मोती।

कहे शाह कूँ लेव भुला कर तुमें,
अपस में अपै मिल रिझा कर तुमें।

कुतुबशाह कूँ जे कोय रीझायगी,
बड़ा मर्तबा सब में वो पायगी।

बड़ी नार वो है जो भावे उसें,
किसे बख़्त है जो रिझावे उसे।

## तदबीर तसकीन शहज़ादा[1]

बुला शाह कूँ शाह भेज्या वहाँ,
परियाँ होर हूराँ मिलियाँ थियाँ जहाँ।

रज़ा[2] हुई थी ज्यूँ शाह आलम सते,
अपस में अपै त्यूँ सकियाँ हम सते।

रिझाने लग्या शह कूँ मन में शिताल[3] (?),
परियाँ छन्द[4] भर्या छन्द सूँ सब लग दुम्बाल[5]।

कधीं कोई खड़ी रहती आ सामने,
कधीं शह उपर करती कई आमने।

कधीं बन्द पकड़ती थी कोई नाज़ सूँ,
कधीं दौड़ कोई झाड़ती साज़ सूँ।

कधीं कोई खिलाती अथी पान आ,
कधीं कोइ पकड़ती थी पीकदान आ।

कधीं गुड़[6] देने कोई आती अथी,
कधीं नेह सूँ कोई जीव लाती अथी।

कधीं कोई प्याला पिलाने कूँ आये,
कधीं कोई नुक्ल ल्याके शह कूँ चकाये।

कधीं फूल सटती[7] थी कोई बिरमने,
कधीं कोइ बुलाती अथी घर मने।

कधीं कोइ दिखाती सिना खोल कर,
कधीं कोइ रिझाती थी बचन बोल कर।

कधीं कोइ दीवानी हो फिरती अथी,
कधीं कोइ बेसुद हो गिरती अथी।

१ राजकुमार को सान्त्वना देने का प्रयत्न २ इच्छा ३ शिताब (?) ल्दी ४ फरेब, धोखा ५ एक के पीछे एक ६ चुम्बन ७ फेंकती।

किल्याँ सुद सख्याँ होर किल्याँ जीव दियाँ,
रिझाने कूँ तक़सीर[1] नईं कुच्छ कियाँ।

शहंशा पे जीव भोत धरतियाँ अथ्याँ,
इशारत अँखियाँ मार करतियाँ अथ्याँ।

छन्दाँ होर नाज़ाँ के कारी मंतर,
सकियाँ चंचल्याँ फूँक्याँ शाह पर।

सेनेह[2] शाह कूँ एक का सद[3] हुआ,
मन्तर था उनो का सो सब रद हुआ।

के उस शह के दिल में सोधन महर[4] था,
न था महर वो बातिलुस्सिहर[5] था।

जो एकस कूँ जिस दिल मने ठार अछे,
ज़रुरत है जो दुसरा वहाँ भार अछे।

सो वैसे मने शाह वो अथ कर,
गले सूँ लगा शह कूँ समजाय कर।

कह्या प्यार सूँ शाहज़ादे कूँ शह,
"तेरा जीव इतन्याँ में किस पर है कह।"

दिया शह कूँ यूँ शहज़ादा जवाब—
के "ऐ शह नको कर तूँ मुज पर इताब[6]।

हरेक नार इस ठार औतार है,
सुघर होर चतुर चौसार[7] है।

वले कोई मेरे दिल कूँ भाती नहीं,
किसी में सो वो तोक आती नहीं।

अगर नार अछती वो उस ठार पर,
तो भुलतियाँ सकियाँ सब यो उस नार पर।

---

१ अपराध २ स्नेह ३ सौ ४ प्रेम ५ मंत्र को तोड़ना। बातिलुस=तोड़ना; सिहर=मंत्र
६ क्रोध ७ हुश्यार।

दीवानी हरेक उसकी यूँ नार हुइ,
के सर ते मुँजे रश्क़ का ठार हुइ।

जो यो देकत्याँ उस कूँ चक नैन भर,
तो पानी पित्याँ उस उपर वार कर।

जो धन मुंज कूँ लुब्दाई सो याँ नहीं,
यतियाँ[1] हैं वले एक वो याँ नहीं।

इनो में किसी पर मेरा दिल नहीं,
इनो ते मुँजे कुच हासिल नहीं।

जो पंखी देखे चाँद कारन जफ़ा,
सितारे झमकने ते उस किया नफ़ा।

के आशिक़ अहै शमा का जो पतंग,
न भावे उसे फूल का कुच संग।

कमल फूल तालिब जो है सूर का,
वो मुहताज नईं चाँद के नूर का।

मुँजे उस सकियाँ का सो यो छन्द न भाय,
समन्दर कूँ अमरीत क्या काम आय ?

सो धन बाज शह किस पै जीव नईं धरे,
के हंस मोती खाता है ना कंकरे।

ज़रूर अब हुआ भेद यू बोलना,
मुअम्मा[2] जो है सो उसे खोलना।

केता बात मा-बाप ते मैं छुपाऊँ,
किसी होर दुसरे कूँ दरम्यानी ल्याऊँ।

अपस कूँ अपच्च हो के रखता सम्भाल,
अपस का अपै हाल कहता अताल।

१ इतनी २ गुप्त।

बिनसता अहे काम कुच लाज ते,
मुँजे बात यो फ़ाम हुई आज ते।

इसी बात पर काम ल्याया उने,
बडियाँ ते जो यो पन्द पाया उने।"

सो राज़ाँ की गुंचियाँ कूँ कर फूल तब,
कह्या ख़ाब देख्या सो शह पास सब।

सुन्या बात जब शह ने उस धात की,
उड़ी सब ख़बर शाह की ज़ात की।

कह्या शाह "शह का अजब हाल है,
के क़िस्सा यो सब ख़ाब होर ख्याल है।

मबादा यो आख़िर दीवाना हुए,
किधर का किधर याँ ते जाना हुए।

खुदाया दे तूँ सब्र व आराम उसे,
पिला धन केरे वस्ल[1] का जाम उसे।"

१ मिलन।

## मशवरा बा अतारद[1]

अजब एक उस वक़्त पर मर्द था,
हुनरवन्द आक़िल जहाँ गर्द था।

दुनिया के अपीं बन्द ते आज़ाद हो,
फिरे शर्क़[2] ते गर्ब[3] लग बाद[4] हो।

कधीं रूम में था कधीं शाम[5] में,
के बुस्ताद था वो हरेक काम में।

अतारद सो नक्क़ाश का नाम था,
भला होर बुरा सब उसे फ़ाम था।

हरेक मुल्क ऊपर गुज़र था उसे,
हरेक शहर का सब ख़बर था उसे।

हरेक टार ऊपर उसे टार था,
के ख़ुश तबा मिसकीं[6] अदबदार था।

हरेक शहर फिरने हवस था उसे,
हरेक काम करने कूँ जस[7] था उसे।

सो नक्क़ाश हँस मुख ज्यूँ वरद[8] था,
अजब कुच शीरीं जवाँ मर्द था।

धरे काम में लाफ़ मानी[9] उपर,
करे बात यूँ नक्श पानी उपर।

अगर ख्याल दौड़ाय वो दूर का,
अँखियाँ मूँद सूरत लखे हूर का।

जहाँ ख़ूब ख़ुश शक्ल देखे सुन्धर,
लिखे नक्श उसका वो नक्क़ाश कर।

१ अतारद, एक प्रसिद्ध चित्रकार था उस से विचार विनिमय २ उत्तर दिशा ३ दक्षिण ४ हवा ५ सीरिया ६ शान्त स्वभाव ७ कीर्ति ८ ख़ुश तबियत ९ ईरान का प्रसिद्ध कलाकार।

जित्याँ खूब थियाँ सुन्दरियाँ जग मने,
रख्या था उनन नक्श लिक अप कने।

करे जिन्दगानी वो इस धात सूँ,
सिरा ना सके कोई उसे बात सूँ।

यो नक्काश की शाह खबर पाय कर,
उसे अपने खिलवत[1] मने ल्याय कर।

संगात अपने बिटला उसे चाव सूँ,
लगे करने ताज़ीम[2] बहू भाव सूँ।

कहे "तू जो देख्या जित्याँ सुन्दर्यां,
मुलकाँन छबेल्याँ चंचल छुण्ड भर्यां।

तुजे कौन इतन्याँ मने खुश आइ है,
तुजे कौन कह सुन्धरी भाइ है?"

सुन्या शाह तें बात यो कान धर,
अथा शाह कूँ नक्काश तसलीम कर।

के "खूबाँ तो शाहा भोत खूब है,
यकसते सो यक खूब महबूब है।

किसे बास है और किसे रंग है,
किसें बास होर रंग भी संग है।

फुलाँ होर खूबाँ यक ज़ात है,
के यक रंग यक रूप यक धात है।

किसी में सो छन्द बन्द होर नाज़ भोत,
किसी में सूरत शक्ल का साज़ भोत।

किसे मैं बड़ा कउँ किसे मैं सरावूँ,
के खूबाँ है शह खूब सब अपने टावूँ।

---

१ एकान्त स्थान पर २ खातिर तवाजो

नहीं बास सुम्बुल[1] की नरगिस मने,
जो इस में अहे सो नहीं उस मने।

न यक जिन्स लक जिन्स महबूब है,
जो भावे अपस कूँ वही ख़ूब है।

जो आशिक़ लुब्दता देक आस ते,
वो कुच ख़ारिज है रंग होर बास ते।

जनम सब घटा शह इसी काम में,
जो तू पूछता तो मेरे फ़ाम में।

यते मुल्क देख्या वले कोई नार,
न देख्य कहीं मुश्तरी नार सार।

परियाँ सुन्धरियाँ सुधन हूर है,
के बाकी सो चाँदाँ वो ज्यूँ सूर है।

नवे छन्द होर नाज़ तिल-तिल न पाय,
के फ़ितने अहे आप ग़मज़ा सो माय।

सो सिंगार कर आए धन साज सूँ,
सितारे ते गुम होए अजत[2] लाज सूँ।

झमक खन में झमकाय मुक नूर का,
शरम खाय ख़ूबी में धन हूर का।

जो बाताँ में वो नार टुक आएगी,
हथेली में ले आ बहिश्त दिखलाएगी।

अजब कुच सो ख़ूबी है उस धन मने,
के फिरते उसे देख टुक बन मने।

रहे इश्क़ से फूल लहू घूट कर,
मरें झलते गुंचे सिना फट कर।

१ एक फूल २ कारन।

गिरफ्तार हुए फूल धन क़हर[1] में,
तो यूँ टाँगते सियासत[2] कर शहर में।

सो बिजल्याँ सुधन सम हो आती अहैं,
शिकम[3] दर्द ते तलमलाती अहैं।

अखियाँ लाल उस नार नाराँ कियाँ,
के मोती उपर ज्यूँ जड़े माँनकियाँ[4]।

अछे मोल बीच नैन वो झमकने,
के मछलियाँ हैं सूरज के चश्मे मने।

तमाशे दिसे उस मने धात-धात,
ग़ज़ब ज़हर होर लुत्फ़ आबेहयात।

दिसे पुतली यों नार की आँख में,
के बैठ्या भँवर आँब[5] की फाँक में।

जो आशिक़ हो कर जीव उसे साथ लाय,
गुसे ते मरे प्यार ते जीव पाय।

जिसे हूर कहते सो धन छाँव है,
दुनिया में झूठी हूर का नाँव है।

जो बंगाले का सिहर जी घात है,
सो उस मुश्तरी नार की बात है।

बंगाले शकर कूँ जो याँ लाते हैं,
सो उसके अधर उस कूँ निपजाते हैं।

बंगाले शकर कूँ जो मीठाई है,
सो मीठाई धन लब ते वो पाई है।

अपस सेज़ दिखला के वो शूख़ नार,
सूरज चाँद तारे मिला एक टार।

१ क्रोध २ न्याय कर के ३ पेट ४ मनके ५ आम

सँपर[1] सहर मन्तर के दावाँ तले,
उभालाँ लड़ें उसके पावाँ तले।

अंचल उस मुसल्ला[2] है जिबरील[3] का,
सिया तिल सो मुभा सिराफील[4] का।

रखे नार वो नाज़ सूँ पग जहाँ,
सूरज चांद सिजदा करें आ वहाँ।

लग्या नईं अझूँ हाथ किस ग़ैर का,
के नईं रूह कूँ ठाँवँ वाँ सैर का।

बंगाले में है टार उस नार का,
ना है चाँद ना सूरज उस सार का।

धरे नार वो मुशतरी शाह नाम,
कते बादशाहाँ हैं उसके ग़ुलाम।

लेवे ना नाँवँ किन मर्द का उस अंग,
नहीं कोई ऐसा जो उस कूँ मंगे।

बंगाले की उस पादशाही अछे,
उसी नार की वाँ दुराही[5] अछे।

उसे एक ज़ुहरा सगी भान है,
सो दाऊद[6] तें वो ख़ुश इल्हान[7] है।

बड़ी हूर है ज्यूँ नहनी ज्यू परी,
सो ज़ुहरा अहै यक, दूजी मुशतरी।

अगर उस सकी का तुजे आस है,
तो उसकी सूरत अब मेरे पास है।

---

१ फंस कर २ नमाज़ पढ़ने की दरी ३ जिब्रेल एक फरिश्ता था जो ईश्वर का सन्देश पैग़म्बरों को देता था ४ एक फरिश्ता, कहा जाता है कि सृष्टि को नष्ट करने के लिए वह क़ियामत के दिन बुगुल बजाएगा ५ हुकूमत, तेलुगु शब्द दुरा=राजा से ६ एक पैग़म्बर जो मधुर गायक थे ७ ध्वनि।

अगर तूँ मंगेगा तो मैं लाऊँगा,
तुजे उसकी सूरत सो दिखलाऊँगा।"

कहा शह "मुँजे वेग दिखला अताल[1],
के मुंज में रह्या नईं है अब कुच हाल।

अगर सूरत उसकी जो दिखलाएगा,
तो तूँ दिल के मक़सूद[2] सब पाएगा।

अताल उसकी सूरत दिखाना भला,
वो सूरत कहाँ है सो ल्याना भला।"

अतारद लगा उस कूँ समजाय कर,
शहंशाह कूँ बाताँ में टुक लाय कर।

जो धन का सूरत शह कूँ दिखलाइया,
सों शह लुब्दी कूँ सरतें लुब्दाइया।

सो धन का सूरत कुतुबशह देक कर,
पछाना के वई है यो मनहर सुन्धर।

निशाँ उसके इस में जो पाने लग्या,
सो चुम चाट छाती सूँ लाने लग्या।

"उसे मेरे दिल के भितर ठार है,
दीवाना करी मुंज सो यो नार है।

दग़ा दे गई थीं वले आय भी,
लग्या था मेरा जीव होर लाय भी।

अजब हूर खसलत[3] अहे यो परी,
के सपने में आ मुंज दिवाना करी।

सो धन ख़ाब में जानी मुंज बल नहीं,
यो ओकल बिरह की है उस कल नहीं।

१ अभी २ इच्छित इनाम ३ चरित्र

जनम सब उसी धन कूँ जपता हूँ मैं,
उसी धन की ख़ातिर सो तपता हूँ मैं।

मेरे ख़ाब में आई सो योच है,
मुँजे यूँ जो लुब्दाई सो योच है।

यही नार उस महल पर आई थी,
यही नार वाँ अपसे झमकाई थी।

इसी नार कूँ देक मैं सुद सट्या,
उसी नार के इश्क़ में यूँ घट्या।

मेरा दिल ले कर गई है यो सुन्दरी,
परेशान की है मुँजे यो परी।

चितारा जो धन रूप ल्याया चितार[1],
तो टुक आज मेरा है ख़ातिर क़रार।

नहीं तो मेरा हाल मुश्किल अथा,
के भोतीच बेताब यो दिल अथा।"

सो नक़्क़ाश का भोत उपकार जान,
करुड़ होर लाखाँ दिए उस कूँ दान।

के याक़ूत अलमास[2] हीरे, रतन,
दिए बेहिसाब उस कूँ शह माल धन।

नहीं अन्त कई कुच उस दान कूँ,
गुलिस्ताँ किए शह बयाबान कूँ।

पड्या शह के ख़ुशहाल हो कर वो पग,
सुने में हुआ ग़र्क़ सिर पाँव लग।

जो धन की सूरत शह देखी शौक सूँ,
पड़ी उस वक़्त यो ग़ज़ल जौक़[3] सूँ।

---

१ उतार कर, चित्रित कर के २ हीरा ३ शौक़ से।

## ग़ज़ल

दिसें धन मुख बीच नैनाँ के मोती थाल में ढलते,
लटाँ छूट तन उपर यूँ है भुवंग ज्यूँ नीर पर झुलते।

बदल रंग स्याम खन कुण्टल नयन अबलक़[1] निपट अचपल,
के काले डोंगराँ के तल बचे हरनाँ के उछलते।

लम्बी लड़ अप-अपस कित की निपट सर ज़द अदिक हटकी,
छुड़ाले नाग तुज लट के सँपारे देक कर झुलते।

देखत धन नयन झल खा कर मछ्याँ दावा कियाँ आ कर,
तो सब जग यो पकड़ ल्या कर कड़ाई बीच ल्या तलते।

नैन दो मस्त चंचल के अछे बीच मुख निर्मल के,
कंवल पर बुन्द ज्यूँ जल के सो रह-रह बावते हिलते।

दसन ते जगमगी जोती अमोलक टाल गंज मोती,
दरया देक रश्क़ ते रोती सितारे हसद ते जलते।

दुबुल धन पैने कानाँ में के सुर पन फूल पानाँ में,
सूरज चाँद आसमानाँ में बिचारे लाज ते गलते।

तिलक फुन्द नाना साजे क्यों के मुंग मोत्याँ की लढ़े यूँ,
क़जल मख़मल कननल पर ज्यूँ सो मोता आज झल झलते।

× × ×

अतारद कूँ शह हाल सब बोल कर,
कहे ख़ाब देखे थे सो खोल कर।

के "उस धन सूँ मुंज इश्क़ इस धात है,
कह्या हूँ तुजे मैं जकुच बात है।

के आशिक़ अहै तो अपी दर्द मन्द,
तुजे फ़ाम उस काम का सब है छन्द।

---

१ मिश्री।

अताल उसके मिलने की तद्बीर कर,
तूँ बेग हो नको काम ताख़ीर[1] कर।

जो दिखलाएगा तूँ सो धन कों मुजे,
जकुच तूँ मँगेगा सों देऊँगा तुजे।

संगाती तुज ऐसा कहाँ पाऊँगा,
जिधर तूँ लेजागा उधर आऊँगा।

के मैं यार तेरा मेरा यार तूँ,
ले चल जाँ है वो धन मुंज उस ठार तूँ।"

अतारद यो सुन बात हैरान हो,
अपस में अपै टुक पशेमान[2] हो।

कह्या शह कूँ "यो काम मुश्किल अहै,
करन काम इस धात किस दिल अहै।

के यू काम अन्देश करना भला,
अगर सच पूछे तो बिसरना भला।

तूँ देख्या नहीं दर्द अभूँ दूक[3] का,
तूँ नईं जानता कुच क़दर सूक[4] का।

तूँ आक़िल है शह टुक अपस में बिचार,
नको हो तूँ इस काम पर अख़्तियार।

कधीं टुक यकेला रह्या नईं है तूँ,
अभूँ दुख दर्द ग़म सह्या नईं है तूँ।

के यो काम हँसी खेल का काम नईं,
फ़न इस काम का हर किसे फ़ाम नईं।

तूँ जिस मुल्क जाने कूँ है अख़्तियार,
परी देव जिन पन्त में ठार-ठार।

१ देरी २ दुःखी ३ दुःख ४ सुख।

कहीं बात में खैर कई शर अहै,
कहीं आस उमीद कई डर अहै।

तू नौ खेज़ होर जान मग़रूर है,
बुढ़ियाँ का अन्देशा भोत दूर है।

जवानी दिवानी अखलवन्द नहीं,
जवानी यों बेबन्द उसे बन्द नहीं।

तूँ अपनी जवानी में शह गर्क है,
कच्चे होर पुख्ते में ती[1] फर्क है।

सिकन्दर पड्या था जो जुल्मात में,
रह्या था बला के सँपड़ हात में।

बुढ़ियाँ सोंच उने तो बिचार्या बिचार,
बुढ़ियाँ की च हिकमत ते निकल्या बहार।

बुढ़ियाँ कूँ जो अवलीच[2] ते पूछता,
तो हरगिज़ उसे दुख न होता येता।

जवानाँ की मुन है सो शरशोर है,
बुढ़ियाँ की सो तदबीर कुच होर है।

पके बाज[3] रंग खूब पानाँ में नईं,
बुढ़ियाँ में जकुच है सो खामाँ[4] में नईं।

दुनियादार साहब जो सकते अहैं,
बुढ़ियाँ कूँ नज़ीक अपने रखते अहैं।

गम्भीर हैं बुडे नित गम्भीराँ कने,
जवाँनाँ दुआ मंगते पीराँ कने।

बुड़े खूब मक़बूल हरेक बाब,
बुढ़ियाँ की दुआ होती है मुस्तेजाब[5]।

१ बहुत २ पहले ही ३ बिना ४ कच्चे अर्थात् जवानों में ५ स्वीकृत होना

नहीं झूट यो सच है सच जान तूँ,
बुढ़ियाँ की यो पन्द खूब है मान तूँ।

के है घात[1] भो धात[2] हर घाट में,
के थण्ड धूप होर बाद है बाट[3] में

दखन ते बंगाला भोत दूर है,
बन्दा ऐसे कामाँ ते माजूर है।"

सो यो बोल उस शह कूँ भाया नहीं,
अदा बे रोश कुच खुश आया नहीं।

सो खातिर पे टुक माँदगी[4] ल्याय कर,
कह्या शाह गुस्से मने आय कर।

"तूँ सुस्त होर बाताँ बी तेरियाँ है सुस्त,
दुरुस्त नईं तो कहता है सो ना दुरुस्त।

नियत में क्या हुआ उधर जाने का,
नहीं हाज़त[5] अब तेरे सिकलाने का।

बुढ़ियाँ कूँ सो नहनवाद की अकल है,
किताबाँ में लिखे से यो नकल है।

बुढ़ियाँ कूँ कहाँ अकल संपूर है,
के साटे व बुंद न्हाने मशहूर है।

बुढ़ियाँ कूँ न कुच अकल ना फ़ाम है,
बुढ़ियाँ का झुटे नाँव बदनाम है।

जफ़ा पीरी[6] होर नातवानी[7] मने,
हरेकस कूँ लज्ज़त जवानी मने।

बुढ़ियाँ के सो कामाँ में अब रुच नहीं,
बुढ़ियाँ में अम बाज़ भी कुच नहीं।

---

१ चालाकी २ बहुत तरह से ३ मार्ग ४ बीमारी ५ आवश्यकता ६ बुढ़ापा ७ कमजोर।

बुढ़ियाँ में सो कुच ज्ञान का बल नहीं,
दुरस्त है बुढ़े झाड़ कूँ फल नहीं।

बुढ़े बैस कर खाने कूँ ख़ूब है,
बुढ़े पुंगड़ी[1] फुसलाने कूँ ख़ूब है।

तर्ज़ इश्क़ का तूँ न पैहचानना,
हमें की तो भी आपे ना जानना।

यो क़िस्सा वो मसला हुआ दक्खनी,
भरोसे केरे भैंस कड़ा[2] जनी।

तूँ इतनेच में यूँ हुआ सहम सूँ,
यते मुल्क देख्या सो किस फ़हम सूँ।"

किने कई न थी बात यो उस संगात,
वले मसलिहत[3] कूँ कही शह यू बात।

"तूँ आकिल है कर तुज पत्याया हूँ मैं,
तुजे अपने नज़दीक ल्याया हूँ मैं।

लगे दिल कूँ आशिक़ के ना तोड़ना,
टुट्या गर अछेगा तो भी जोड़ना।

हिम्मत कर तूँ तक़वे[4] की छोड़ता ?
जुड़्या दिल मेरा क्या सबब तोड़ता ?"

अतारद कह्या "शह तूँ शादाब[5] मुदाम[6],
तूँ साहब मेरा मैं हूँ तेरा गुलाम।

तुजे इश्क़ में आजमाता अथा,
सितम बात इस धात लाता अथा।

सदा राज कर होर जी जग में जम,
सचा पाक आशिक़ तूँ साबित क़दम।

१ बच्चा २ पड़ा ३ विचार करने के बाद ४ परहेजगारी ५ खश ६ हमेशा।

जुकोई यार सूँ अख्तियार होयगा,
तो उस यार सूँ अख्तियार होयगा।

अगर यार दिलदार होर अहल[1] हैं,
तो यो काम करना भोत सहल है।

जो शह तुज सो धन का येता फ़ाम है,
तो यूँ काम करना मेरा काम है।"

सो यूँ बात सुन शाह खुशहाल हुआ,
जो पीला हुआ था सो फिर लाल हुआ।

जो तालिब के मनमेंच मतलूब[2] है,
बुरा होने की ठार उसे खूब है।

कह्या शह "अतारद मेरे पास है
अताल उस के मिलने की मुँज आस है।"

हुआ शह सो धर पंत में अख्तियार,
के बन्दे ते कोशिश खुदा करनहार।

सो गुनवन्त चतारा[3] भोत धात धात,
कह्या शह कूँ समजा के भो धात धात।

के "चलने कूँ अब मुस्तैद मोप[4] कर,
शहंशाह कूँ बेग दे तूँ खबर,

जो संगात हर जिन्स का ले कुमाश[5]।
के आलम में ना होय यो बात फ़ाश[6],

अगर काम करता तो यूँ कर यो काम,
के दुश्मन को ना होय यो काम फ़ाम।

ले शह आज सौदागरी का लिबास,
के तेरे दंदी[7] आस ते होय निरास।

१ अच्छा २ इच्छित वस्तु ३ चतुर का बहुवचन ४ तैयारी कर ५ स्वभाव के प्रकार ६ गुप्त बात का प्रकट होना ७ सत्रु।

सो यो जायँ अब शह के जाने ना कोई,
हमें कौन हैं यो पछाने न कोई।

फिराकर अपस के सो इस भेंस कूँ,
यो सट देस चल जाय परदेस कूँ।

जो मँगता है शह यूँ के मक़सूद पायँ,
तो बाट अब हमीं सट को अड़बाट जायँ।

कैना था सो कह्या तुजे मैं बिचार,
अताल अहै शहंशह तेरा अख़्तियार।

अंगे बाई[1] है हार पीछे कुआ,
अन्देशा नको कर हुआ सो हुआ।

दोनों मिल के यक दिल हो कर राजवट[2],
किए काम उधर जाने का आज घट।

अगर ना नचना नच है तो घूंघट है क्या,
निकल जायँ चल बेग याँ हट है क्या।

१ बड़ा कुआ २ राजनीति, राज-पथ।

## इज़ाज़त ख़्वास्तन मुहम्मद कुली कुतुबशाह अज़ पिदर व मादर[1]

छुपा राज़ परगट हुआ शाह का,
के आशिक़ अहे शाह उस माह[2] था।

छुपी बात नईं बूजता शह छुपाय,
के इश्क़ होर मस्ती छुपाया न जाय।

किया बात ज़ाहर वो उस बात में,
किता कोई रखे आग कूँ हात में।

जो यक घर मने ऊद[3] कूँ कोई जाय,
तो सौ घर लग उस ऊद का बास जाय।

के फूल केवड़े का जो बास है छिनाल,
न रख सकी हरगिज़ इसे कोई सम्भाल।

पिरत कूँ छुपाने कहीं ठार नईं,
पिरत बावली है छुपन हार नईं।

जदाँ तें जो पैदा हुआ है यो जग,
पिरत कोई छुपा नईं सक्या आज लग।

पड़ी ख़ल्क़[4] मुख बात यो फाँक कर,
रख्या जाय असमान क्यों ढाँक कर।

जवाहर अजल[5] सीस भर सरनविश्त[6],
जो जल गुज़रे जिस सिर तें हो सर गुज़िश्त।

मुहब्बत अवलीच तूँ कर नको,
करेगा तो रुसवाई[7] तें डर नको।

मुहब्बत किते है सो रुसवाई है,
यो रुसवाई आशिक़ कूँ हो आई है।

---

१ माता-पिता से मुहम्मद कुली कुतुबशाह की अनुमति माँगना। २ चाँद ३ एक सुगंधित पदार्थ, ऊदबत्ती ४ जनता ५ मौत ६ भाग्य का लिखा ७ बदनामी।

वहाँ यार भाता अहै यार कूँ,
मश्क्क़त सूँ ढोवे यार की भार कूँ।

मुहब्बत लग्या है जिसे पीव का,
नहीं कुच परवा उसे जीव का।

अवल जीव ते हात धोते अहैं,
पछे आशिक़ाँ आशिक़ होते अहैं।

सुहाती है रुसवाई यारी मने,
के आशिक़ कूँ इज़्ज़त है ख़ारी[1] मने।

यहाँ पादशाही ग़ुलामी अहै,
यो बदनामी नईं नेकनामी अहै।

मुहब्बत में होता जहाँ जग असीर[2],
बराबर है वाँ पादशा होर फ़क़ीर।

नदीम[3] अपने कूँ शह बुला भेज कर,
यो क़िस्सा कह्या इस कने सर बसर।

कह्या "मैं कह्या ज्यूँ तुजे त्यांच तूँ,
कह यो बात भो धात इस शाह सूँ।

रज़ामन्द भेज्या शह शहंशाह कन,
के जाता हूँ अब मैं बँगाले के धन।"

कह्या जब नदीम उस कूँ जा कर यो बात,
अन्देशा लग्या करने शह मुख दे हात।

कह्या "कोई कहो मेरे फ़रज़न्द कूँ,
के सुन कान धर बाप की पन्द कूँ।

तूँ सूर है नको दूर हो असमान ते,
तूँ हीरा अहै ना बिछड़ खान ते।

---

१ बदनामी २ क़ैदी, शिकार ३ मुसाहब।

तूँ फूल होर है ठाँव तुज फूलबन,
तूँ सरो होर जागा है तेरा चमन।

तूँ शाही केरे बज़्म[1] का शमा है,
तूँ जम जीव तुज थे मेरा जमा है।

नको कर परेशाँ दिल जमा कूँ,
नको तूँ बुजा झमकती शमा कूँ।

जिसे यार कहते सो कई यार नईं,
अगर है तो भी कोई वफ़ादार नईं।

वफ़ादार सो यार करतार है,
तूँ उस सात हो यार अगर यार है।

अपै उस सूँ होर वो अपस सूँ अछे,
तूँ वो ऐन[2] होर ऐन दो तूँ अछे।

निकल ऐसे कामाँ ते आना भला,
मुहब्बत ख़ुदा सूँ लगाना भला

तूँ जिस सात जीव लाने कूँ जायगा,
तुजे सट वो दुसर्याँ सूँ जीव लायगा।

के कामिल[3] मिसल कह गये यूँ अंग,
मँगूँ दीद[4] मैं दीद सो धनक[5] कूँ मंग।

न यारी के लायक़ हरेक यार है,
हज़ाराँ में यक कोइ वफ़ादार है।

हरेकस कूँ जीव यो के लाया न जाय,
ज़माना बुरा किस पत्याया न जाय।

के जिस कूँ पतिया कर तूँ जीव लायगा,
उसी ते तूँ आख़िर दग़ा खायगा।

---

१ मजलिस २ आँख ३ अक्लमन्द ४ दीदार, आँखें ५ चमकना।

अपस घर में अछ्नु ना निकलना भला,
बुरा वक्त है देक चलना भला।

नहीं ख़ाब यो ख़्याल तूँ बेग सट,
नको कर तूँ इस काम के ताईं हट।

मेरा जीव होर दिल है तुज पर फ़िदा,
नको हो तूँ बुड्प्पन[1] में मुंज ते जुदा।

नको न्हास[2] जा तूँ मेरे पास ते,
न कर मुंज निरास इस उमीद आस ते।

किया आप शह तुज सूँ कह क्या बुरा,
के तूँ आज होता है उस ते जुदा।"

नदीम इस जिन्स की ख़बर ल्याय कर,
कह्या शह कूँ यो निच समझाय कर।

ख़बर इस ते इस धात जो शह पाय,
नदीम को झड़क सट के गुस्से में आय।

के "नेह का ख़बर नईं यो धरते अहैं,
झूठी बात चुप के च करते अहैं।

तूँ यारी हरेकस सूँ ना जोड़ियो,
तूँ दिल कूँ नको मोकला[3] छोड़ियो।

यो दिल नहीं बिला ग़ैब के कुच्च अहै,
दिवाना इश्क़ बाज़ होर हुच्च[4] अहै।

किए इश्क़ अवल ते यूँ इश्क़ बाज़,
के मन्धर[5] हक़ीक़त हैं सीड़ी मज़ाज़[6]।

सिड़ी उस उपर पाँव रख बाद अज़ाँ[7],
तूँ मन्धर में जा जीव मंगता जहाँ।

१ बुढापे २ भाग ३ खली, ढीला ४ बेकार ५ मन्दिर ६ साधन ७ के बाद।

के जिस यार कूँ यार सूँ ग़र्ज़ है,
यो दुःख सूसन[1] उस उपर फ़र्ज़ है।

जफ़ा नईं मुँज इश्क़ के बन्द ते,
नफ़ा नईं है कुच जग केरे पन्द[2] ते।

सुने नईं के मजनूँ दुखी तब सिया,
सो लैला की ख़ातिर वो क्या क्या किया।

सुने नईं के फ़रहाद से यार ने,
दिया जीव शिरीं के कार[3] में।

मुहब्बत के मारग नहीं जानते,
भूटे चुप के की[4] मुँज कूँ रंजानते?

मुँजे उस चंचल धन के तईं जीवन देव,
जो होता सो मेरे उपर होन देव।

लग्या नईं है यो जीव उस घात सूँ,
जो टूटे यकायक किस बात सूँ।

ख़ुदा आशिक़ाँ के लिख्या भाग में,
के जलना अहे इश्क़ की आग में।

मैं राज़ी हूँ अपने इसी भाग ते,
समद्दर[5] को नईं ख़ौफ़ कुच आग ते।

मुँजे उस ते शादी अहै ग़म नहीं,
के दुख इश्क़ का सुक ते कुच काम नईं।

ख़ुशी है वले इश्क़ का दर्द काँ,
जिसे दर्द यो है सो वो मर्द काँ।

यो ऐसा दरद नईं जो होवे हर किसे,
बड़े बख़्त उसके ख़ुदा दे जिसे।

---

१ पाना, प्राप्त करना २ नसीहत ३ काम में ४ क्यों ५ सागर।

मना करने पिरीत पड़्या जग गले,
जु कोइ समजे ना उस सते क्या चले ?

न कुच मुज कूँ हाजत[1] है पन्द सात यूँ,
समजने तो ना बोलते बात यूँ ।

जो आशिक़ पिरत फन्द में बन्द है,
उसे दाग़ पर दाग़ यो पन्द है ।

के आशिक़ सचा होर जाँ बाज हूँ,
पन्दाँ ते यो लोगाँ की मैं वाज़ हूँ ।

यूँ अज़मा के देख्या हूँ मैं बार बार,
के आशिक़ कूँ नई होती पन्द साज़गार ।

रुबाई

मैं ना रह सकूँ उस शहर तलक जाये बिन,
चंचल सकी का चर्क[2] दरस पाये बिना ।

इस जीव दिवाने कूँ क्यां होवे क़रार,
उस नार कूँ इस ठार ले कर आये बिन ।"

रज़ा बाप जाने कूँ जो नई दिया,
मना कर मना कर मना जो किया ।

सो शह माँ के नज़दीक जा बैस[3] कर,
निपट अजिज़[4] सूँ पाँव पर सीस धर ।

जिसे इश्क़ उछाले वो क्यों चुप रहे ?
सो उस मावली पास शह यूँ कहे ।

"मुँजे सूल है उस धन के दीदार का,
मुँज सूल है उस छन्द भरी नार का ।

१ आवश्यकता २ जरा सा ३ बैठ ४ आजिजी से ।

मुँजे सूल है उस धन के दो नैन की,
मुँजे सूल है उसके मीठे बैन की।

मुँजे सूल है उस रंग भरे गाल का,
मुँजे सूल है उस मिश्क[1] रंग बाल का।

पर-पर पड़े न बूजे, जिस पर पड़े सो बूजे,
क्या पर करूँ कहो हौं कुम्अर (?) मुँजे न सूजे।

के मैं शहर बंगाले कूँ जाऊँगा,
खुदा ले ल्याये तो बेग फिर आऊँगा।"

जनी माँ अपन मिहर[2] सूँ आय कर,
कही शाह तूँ यूँ सवाँ[3] खाय कर।

सुनी न जो यो बात शाह पीव ते,
डरी शाह के नाज़ नईं जीव ते।

मबादा[4] अपस पर करे घात कुच,
के सुनता नहीं किस की यो बात कुच।

उसे इश्क़ उस नार का ज़ोर है,
दीवाना हुआ फ़िक्र उसे होर है।

जो माँ की भी नईं बात शाह टुक सुन्या,
हज़ाराँ नक्श नासिहाँ[5] पर चुन्या।

हुआ शाह को मालूम खूबी च अताल,
के शहज़ादे कूँ कोई न रखसी सम्भाल।

**रुबाई गुफ्तन[6] इब्राहीम शाह**

आशिक़ है जकोई पन्द उस मासी ना,
सिर है मलक[7] इस बाट में तें जासी ना।

१ सुगन्धित इत्र २ ममता से ३ सौगन्ध ४ सन्देह ५ नसीहत करनेवाले ६ कही हुई
७ फरिश्ता।

किया काम मना इश्क़ ते करते हैं उसे,
हरगिज़ किसी के कये मने वह आसी ना।

कहे शह कूँ तोशा देना बाट कूँ,
कहे जाता है शह इश्क़ के हाट कूँ।

किये दूर शह दिल में ते कोप सब,
लगे मुस्तइद[1] करने अब मोप सब।

सो दिलदार ग़मख़ार याराँ मिले,
शहंशाह के दोस्तदाराँ मिले।

जो तोशा पका कर दिये शह अपै,
चुरा खाने कूँ लोग उसे ली जपै[2]।

झुटाले सो तोशे कूँ चोर आय कर,
के उस टार शह बेग फिर आय कर।

तमाशाँ के बन्द ले दिये बेशुमार,
हतियाँ की अम्बारियाँ[3] उपर का अम्बार[4]।

ग़ुलाम होर बाँदयाँ नदीम होर क़वाल,
दिये शह कूँ ख़िदमत के ख़ातिर दुम्बाल।

गले शाहज़ादे कूँ शह लाये,
जकुच शाहज़ादा मंग्या सो दिये।

के फ़र्ज़न्द सफ़र करने जाता अहै,
ख़ुदा जाने भी फिर को आता अहै।

ख़ज़ीना[5] दिया शह कूँ शह शाद[6] कर,
सौ ऊँटाँ उपर शह चले लाद कर।

उठ्या नाद खाँतियाँ केरा सर बसर,
फ़रिश्ते जो थे सब उठे जाग कर।

१ तैयारी २ छिपे ३ हाथी पर बाँधे जानेवाली ज़ीन ४ भरना ५ ख़ज़ाना ६ ख़ुश कर।

रैन का सो तिसरा दूपारा अथा,
के निकल्या सुब्ह का सितारा अथा।

हशम[1] की सो चौंधेर ते फौजाँ उठियाँ,
दखन के सो दरया ते मौजाँ उठियाँ।

अलम यूँ दिसें शाह के साज़ सूँ,
के ख़ूबाँ लिये दूर उचा नाज़ सूँ।

१ क़िला।

## रुखसत शुदन शहज़ादा[1]

खड़े साद शह देक महर[2] सते,
चल्या भार सब बाँद कर घर सते।

लगे करने मा-बाप शह कूँ दुआ,
"खुदा देवे शह तुज तेरा मद्दुआ[3]।

पुनम चाँद ज्यूँ दोनो घटने लगे,
सितारे अँख्याँ में ते टुटने लगे।"

कहे शाह मा-बाप कूँ फिर यो बात,
के "मैं दिल के हात में न दिल मेरे हात।

निकलना किसे घर ते भाता अहै,
मुँजे दिल यो सितमी ले जाता अहै।

केता मैं रखूँ दिल कूँ रहता नहीं,
यो क्या भेद है कोइ कहता नहीं।

भौत मुज़ कूँ लगता अहै यो अजब,
के आदम पै ग़ालिब[4] है दिल क्या सबब।

मुँजे याँ रहना भोत मुश्किल अहै,
के इतना क्या सब सो यों दिल अहै।

हुआ राम[5] में दिल मेरा राम नईं,
यो दिल क्या करेगा मुँजे काम नईं।

किसे बल है जो हिर्स कूँ डाल कर,
रखे अपने इस दिल कूँ सम्भाल कर।

उसे आज सम्भाल रकसी न कोय,
जो सिर ज़ोर है लड़ने सकसी[6] न कोय।

---

१ शहजादे की बिदाई २ मुहब्बत ३ इच्छा पूर्ण हो ४ किसी को अधिकार में कर लेना ५ रम्य, खुशी ६ सकेगा।

शहाँ अजिज़ है दिल केरे ज़ोर ते,
तो क्या होयगा अब किसी होर ते।

पंखी होर परी होर देव होर जिन,
यो सब दिल की ख़िदमत करे रात दिन।"

सो मा-बाप कूँ शह दिलासा दे कर,
चल्या अपने माशूक़ के शहर उधर।

तो अँपडावने[1] आये मंज़िल तलग,
फिरे शह के मा-बाप पड़ शह के पग।

चले शाह मंज़िल कूँ यूँ दाट दाट[2],
के यक दीस में जाएँ महीने की बाट।

हरेक डग में शह धन कूँ जोता[3] अथा,
तिलें तिल पिरत ज्यास्त होता अथा।

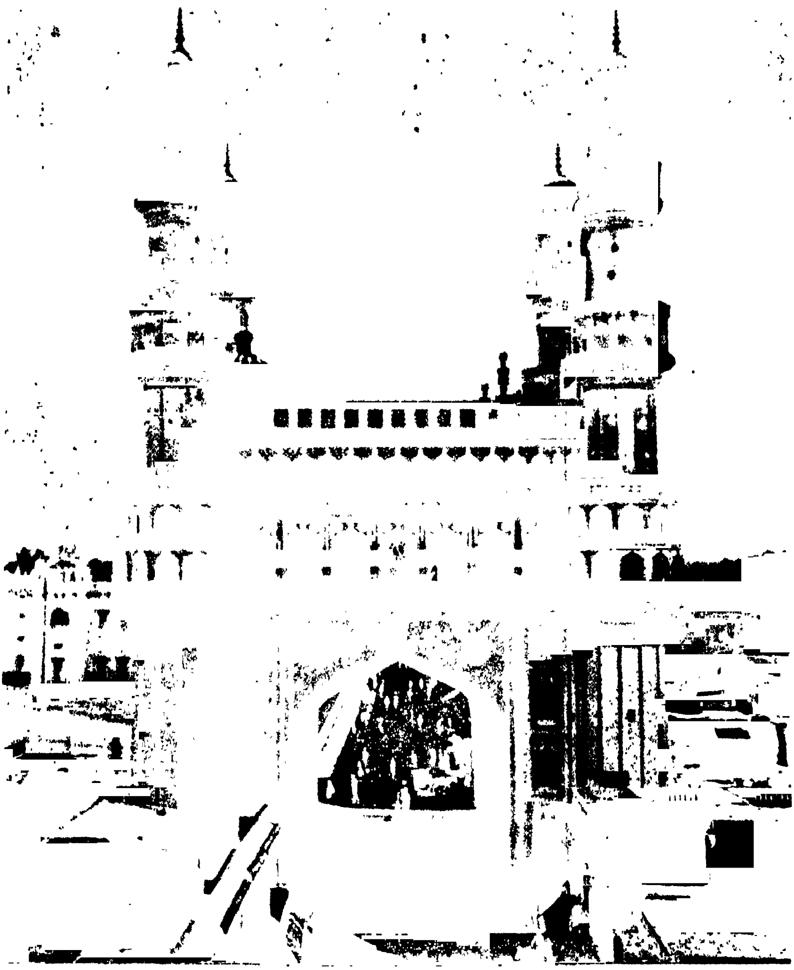
मुहब्बत के कामाँ में सारा हो कर,
लग्या फिरने सहरा[4] में यारा हो कर।

अबीर[5] उस सुधन-पंथ का धूल था,
अनीदार[6] काँटा उसे फूल था।

जिसे इश्क़ की आग जाली अहै,
लहाफ़ उस गगन भुईं न्हाली[7] अहै।

सट्या राहत अपना निपट दिया का,
के जूँ हक़ है त्यूँ पन्त चल्या नेह का।

१ पहुंचाने २ जल्दी ३ देखता ४ रेगिस्तान ५ गुलाल ६ नोकीला ७ बिछाने की चादर।



चारमीनार



मुहम्मद कुली कुतुबशाह

## गज़ल गुफ़्तन मुहम्मद कुली कुतुबशाह

मद इश्क़ में पिया सो चढ़्या है असर मुँजे,
सद-अक्ल-फ़हम छीन किया बेख़बर मुँजे।

धन मुख अगन में पड़ने समंदर हुआ हूँ आज,
तूती नहीं हूँ मैं के जो भावे शकर मुँजे।

फुसला के ख़ूबी सूँ च ले जाता बुलाय कर,
साँदे यो इश्क़ आज किधर का किधर मुँजे।

हातिफ़[1] ख़बर दे बेग अगर दोस्त है मेरा,
किस रात आ मिलेगी वह चंचल सुन्धर मुँजे।

बादल हो बाव नाद[2] फिरूँ दश्त मैं उताल,
न भावे संग चर्क[3] किसी का न घर मुँजे।

हातिफ़ मुजे ख़बर दे अगर दोस्त है मेरा,
किस रात आ मिलेगी वह चंचल सुन्धर मुँजे।

अप भावता हुआ हूँ सभीं भावतियाँ कूँ छोड़,
धन भावते वो खींच ले अपने इधर मुँजे।

---

१ वह फरिश्ता जो गुप्त स्थान से आवाज देता है २ तरह ३ बोझा भी।

## गुशातन[1] मुहम्मद कुली अजदाह

लगा आस उमीद सुभान सूँ,
जो शह बाट चलते अथे ध्यान सूँ।

यकाएक इस बाट में दूर ते,
नूरानी सुनैनाँ केरे नूर ते।

देखी गर्द अन्दकार है बे शुमार,
कहे यो अब हालाँ रहने का है ठार।

इसी सात शह दिल में कुच ल्याय कर,
सो नज़दीक इस फाड़ के आय कर।

कहे शह अतारद कूँ के "क्या है यो,
के अन्दकार दिसता है इस धात सो।"

अतारद दिया शह के तईं यूँ जवाब,
"के अहै शह जहाँगीर आली जनाब।

बुलन्द गड़ यो बी मिस्ल घन सार है,
देवाँ होर साँपाँ का यो ठार है।

बनी आदम इस ठार नईं ठारता,
पंखी पंक इस ठार नईं मारता।

अंबर ते बी ऊँचा है ऊँचाई में,
धरत ते बी चौड़ा है चौड़ाई में।

जो यक संग सटे इस फडे[2] पर ते कोय,
तो भुई होर अस्माँ मिल एक होय।

'बिकट फाड़' इस फाड़ का नाँव है,
यो असमान इस फाड़ का छाँव है।

१ मुठभेड़, सामना २ पहाड़।

के टुक फ़हम इस पर जो चड़ता अहै,
तो मान्दा हो इस टार पड़ता अहै।

अन्देशा न चड़ लंग[1] हो पकड़े कमर,
नज़र ठेंस खा खा पड़े उस उपर।

न उस फाड़ पर संगरेज़े[2] अहें,
लूहंच[3] ख़ंजराँ होर नेजे अहें।

जो इस फाड़ पर जाने अछता महाल,
तो तुकड़े हो पड़ता फ़लक ज्यूँ अभाल[4]।

जो हिलती नहीं है जमीं टार ते,
सो इस फाड़ संगीन के भार ते।

जो शह देकते थे नयन लाय कर,
यकायक यक भेस सूँ आय कर।

बुलन्द एक बंडा पड़ा वाँ नज़र,
दो मशाल झमकते अथे उस उपर।

दो रंग थे उसे रंग सिया होर सफ़ेद,
कधीं होय परगट कधीं होय न पैद।

जो बंडा वो था सो यका एक वहाँ,
लग्या दिसने चिंग्याँ सूँ मिल कर धुवाँ।

कहे इस अतारद कूँ शाहेजहाँ,
"किने आग रोशन किया है यहाँ।"

जवाब उस दिया यूँ अतारद फिरा,
बड़ा एक रहता है याँ अजदहा।

बंडा नई यो उस अज़दहा का है तन
दो मशाल हैं उस अजदहा के नयन।

१ लंगड़ा २ साथी ३ तलवार ४ बादल।

के जबड़ा सो ज्यूँ ग़ार महकम अहै,
धुवाँ नईं यो उस साँप का दम अहै।

अथी आग शोले शफ़क़ खुम[1] सते,
सो उस नाग के आतिशी दम सते।

निकलता है शोल्याँ सूँ दम नाग का,
के बादल बरसता है मेंहू आग का।

चल ऐ शह फिरें अब हम इस घाट ते,
सलामत गया नईं कोई इस बाट ते।

जो दीखे नहीं बाट अंगे जाने कूँ,
लगे करने तदबीर फिर आने कूँ।

कहे शह के मरदाने मरदाँ कहीं,
अंगे का पछें पाँव रखते नहीं।

मर्द वो जो मरदाँ मने नाँव कर,
चले इश्क़ की बाट सर पाँव कर।

मुंजे काम नईं किस की तदबीर सूँ,
के राज़ी हूँ मैं उसकी तक़दीर सूँ।

तवक्कल[2] खुदा पर जो करता अहै,
वो हरगिज़ नहीं किसते डरता अहै।

मर्द ने पकड़ना बड़ा काम दस्त,
के लौटे तो भंडार मारे तो महस्त।

कही बात यो शह अतारद कने,
यकायक आ कर सो वैसे मने।

जो उट अजदहा शह के सन्मुक चल्या,
के महशर[3] के बारे ते डूँगर हिल्या।

१ बहुत २ विश्वास ३ प्रलय

यता कुच दो धरता अथा नाग बल,
के असमान कूँ मारता फन उचल।

जो नज़दीक आया वो टुक डाट कर,
गए लोग संगात के न्हाट कर।

इली वली थे मददगार वाँ,
ख़ुदा बिन न कोई शह कूँ था यार वाँ।

जो हमला कर आया वो शह के इधर,
खड़े रहे वहाँ शह फ़रंग[1] खींच कर।

सो शह हात का एक उसे घाव लग,
दो टुकड़े हुआ सीस ते पाँव लग।

जो जुलाब चक[2] वो सट्या क़हर ते,
जमीं सब हरी हो रही ज़हर ते।

नज़र ज़हर ते इसकी ना होय क्यों,
के नहूँ शाह के ज़हर मुहरा हो ज्यों।

हर एक ज़हरमुहरा सो परत्तीत का,
के करता अहै काम अमरीत का।

फरंग लाल सब लहू में हुई सर बसर,
के बिजली पड़ी जा शफ़क़ के भितर।

कहे सब के रुस्तम है शह रास्त तूँ,
शुजाअत में इस ते बी है ज्यास्त तूँ।

मदद अम तुजे शाह यासीन है,
के तूँ एक लाखाँ पै संगीन है।

इशाम सब पड्या पाँव इस बात कूँ,
लग्या गुड़ देने शाह के हात कूँ।

१ तलवार २ जरा सा।

हँसे शाह उस वक्त खुशहाल हो,
चले लोग सब शह के दुंबाल हो।

नैन भिकारी दर्स के और नित उठ माँगे भीक,
फुटो रे नैनन लहरीस (?) वा जिनों न लागे सीक।

जो यक ठार उतरे थे इस ठार ते,
पड्या शाह के दश्त[1] कूँ चारते।

सूरज ताब सब शाह सूँ जगमग्या,
सो यक पंजर सी कोट दिसने लगया।

के वो कोट शह देक हैराँ हुवे,
बुला कर अतारद कूँ नज़दीक कहे।

के "यो कोट दिसता सो किस का अहै,
तुजे फ़ाम है कह तूँ जिसका अहै।"

कह्या शह कूँ राकस[2] है इस ठार पर,
नहीं वाँ कहीं आदमी का गुज़र।

खन्दक़ सात हैं सात समन्दर समाँ,
हरेक बुर्ज उसका है ज्यूँ आसमाँ।

कंगूरे बुलन्द जो दिसे दीस कूँ,
कंगोई करते थे सूर के केस कूँ।

सौ नैन उसके दो चाह ग़द्दार हैं,
के सर तीन होर हात सौ चार हैं।

वो राकस बी ऐसा है काला बलाय,
जो शैतान देखे तो उस न्हास[3] जाय।

खन्दक़ बेबदल वो अजब ग़ार है,
के भुई के भुवन का मगर टार है।

१ जंगल २ राक्षस ३ भाग।

वो राकस के बालाँ है साँपाँ है यूँ,
चचुन्दे[1] पड़े अछते बेलाँ में ज्यूँ।

सुब्ह उठ निहारी करे नौ हती,
के मलऊन[2] है वो बड़ा निकबती[3]।

बुरा है वो दज्जाल तें सौ हिसे,
खुदा मूँ न दिखलाय उसका किसे।

न कोई सकसी[4] उस सात दन्द सारने,
अजल[5] का नहीं काम उसे मारने।

मौत मुश्किल है सब से योच ठार,
के वो भर है चौंधेर को चार-चार।

नही बाट अंगे शाह जाने किधर,
सो हमना कूँ यो कोट उलगे बग़ैर।

अभूँ याँ ते फिर जायँ तो खूब है,
के हैफ़ी[6] अंग खायँ तो खूब है।

के कोई देव सूँ दन्द बिसाया नहीं,
हतियाँ सूँ किने गाँडे[7] खाया नहीं।

न कोई सकसी अब इस सूँ दन्द सारने,
के उस कूँ अजल नईं सकी मारने।

कहे शह डरालू अहै तूँ अजब,
डराता है इतन्याँ कूँ सो तूँ च सब।

तेरे डरने ते सब यो डरते अहैं,
फ़िक्र न्हासने[8] के यो करते अहैं।

संगाती के लोगाँ तेरी बात ते,
निकल जायँगे यकदिन हात्त ते।

---

१ एक सब्जी जो साँप के आकार की होती है २ शैतान ३ हिकमती ४ सकेगा ५ मृत्यु ६ अफसोस ७ गधा ८ भागने।

न डर कर किसी ते निडर होइना[1],
अगर डर अछे तो बी डर नईं करना।

जो लोगाँ कूँ तक़वा[2] होय इस बात ते,
जो ना जाएँ डर कर वह संगात ते।

बुड़ा है तूँ यो बात नईं तुज कूँ फ़ाम,
के मरदाँ की हिम्मत ते होता है काम।

ज़िरह हेच है तन शह बुलन्द भाग का,
के शोला लहवे में पड्या आग का।

मकर[3] है मकर देव काले मने,
के या बाग[4] बैठा है जाले मने।

दिसे शाह झगड़े के मैदान में,
के शरजा[5] खड़ा है बियाबान में।

अतारद सूँ बात कर शह जवाँ,
मंगा तीर तरकस तुरंग[6] होर कमाँ।

के क़ौसो क़ज़ह[7] फ़तह बख़्श है कमाँ,
शहाबाँ तीराँ होर तरकश आसमाँ।

सोनेज़ा है कह कश के ख़ंजर हलाल,
सिपर हात मा दे अछे ज्यूँ अभाल।

सिले ग्रूब है जिस कूँ इस धात का,
उसे डर नहीं कुच किसी बात का।

पत्यारे के ले सात बारह नफ़र[8],
चले शाह इस पंजर सी कोट उधर।

ख़ुदा होर मुहम्मद अली का ले नाँव,
रखे कोट में शाह बेशक पाँव।

१ स्पर्द्धा करना २ भरोसा ३ ढोंग ४ शेर ५ शेर ६ घोड़ा ७ इन्द्र धनुष (?) ८ नौकर।

हुए जीव सूँ सब शह संगात अख़्तियार,
लगे फिरने इस कोट में ठार-टार।

देखे एक वाँ आदमी ज़ाद था,
परेशान हैरान नाशाद था।

जो देख्या वो शह कूँ उठ्या आह मार,
कह्या की "तुमें आय हैं ऐसी टार?

ली एक बदबख़्त राकस है याँ,
पकड़ता है आदमी कूँ देकता जहाँ।

तुमें पादशह हैं झूटे याँ न आव,
के यो ठार कुछ ख़ूब नईं बेग जाव।

अगर शह सुनेगा तो मेरी यो बात,
ग़ुलाम हो के मैं आऊँगा तुझ संगात।

रख्या है यो राकस मुंजे बन्द कर,
नहीं जाने देता है यक तिल किधर।

यकेला हूँ मैं याँ किधर न्हाट जाँऊ,
के कई न्हाट ने नईं सपड़ती है ठाँऊ।

अगर तूँ न आता तो मुंज क्यूँ होता,
ख़ुदा जिस कूँ मंगता उसे यूँ होता।

मुंज इस वक्त तुज सा मिल्या शह गम्भीर,
के दरमाँदे कूँ है ख़ुदा दस्तगीर।"

कह्या शाह उस आदमींज़ाद कूँ,
फ़क़ीर होर मसकीन नाशाद कूँ।

"तूँ आया है काँ ते तेरा ठाँव क्या?
के तूँ कोन है होर तेरा नाँवँ क्या?"

कह्या शह कूँ वो भोत जारी सते,
अज़ीज़ होर मुहब्बत सूँ यारी सते।

"यकायक अँपड्या हूँ मैं तुज लगन,
कता हूँ मेरा हाल मैं शाह सुन।

हलब में जो शहशाह सरतान है,
जो परधान उसका असदख़ान है।

असदख़ान जो है शाहे सरतान का,
सो फ़रज़न्द हूँ मैं असदख़ान का।

न मुंज भान ना मुंज कूँ भाई अहै,
असदख़ान बाप होर यक माय अहै।

बन्दा मैं तेरा हूँ मुंजे तूँ पछान,
के है नाँव मेरा सो मर्रीख़ ख़ान।

अनन्द ऐश सुख घर में धरता अथा,
जुकुच जीव मँगता सो करता अथा।

यकायक यक रात मनहर सुन्धर,
दीवाना हुआ ख़ाब में देक कर।

सो परदेसी यक कोई मेरा यार था,
हर यक इल्म ते वो ख़बरदार था।

कहा ख़ाब मैं यो उसे खोल कर,
बशारत दिया उन मुंजे बोल कर।

सो ताबीर उसका उने यो कह्या,
के ज्यूँ मैं जो देख्या अथा त्यूँ कह्या।

के दो शाहज़ाद्याँ है बंगाले में,
सो उस्ताद हैं नाज़ होर चाले में।

यकन जुहरा है दूसरी मुशतरी,
यकस ते अहै ख़ूब यक सुन्दरी।

मुँजे जो भुलाई सो ज़ुहरा अहै,
के इस नार कूँ हुस्न धर्या अहै।

मौत ज़ुहरा पर शाह मेरा जीव है,
वही जीव मेरा वही पीव है।

निपट जीव मंगता है उस पीव कूँ,
किता मैं रखूँ लालची जीव कूँ।

जुकोई बुलहवस[1] होर तमादार है,
जहाँ जायेगा वो वहाँ ख़ार है।

जिसे कुच तमा[2] नईं है वो ख़ार[3] नईं,
भला है वही जो तमादार नईं।

तमा ते जो हुरमत[4] कूँ नुक़सान है,
तमा मौत अदमीन कों ज़्याँ है।

वले जिन क़बाहत (?) कूँ ना फ़ाम है,
उसे ऐसी बाताँ सूँ क्या काम है?

मुंजे याद बिन उसके कुच काम नईं,
मुंजे यकतिल उस बिन आराम नईं।

लुटा जीव मेरा हैबत इस टार का,
न अछता अगर याद उस नार का।

जो जिवता हूँ मैं देक दुख घात-घात,
के इश्क़ इस सकी का है आबेहयात।

जो शह मैं बंगाले कूँ आने किया,
मना कर मुंजे बाप बी पन्द दिया।

भोत घात समजा कह्या खूब नईं,
इश्क़ बाज़ी करते नहीं यूँ कहीं।

जेता बाप कह-कह मुंजे सर धुन्या,
सो उस बाप की बात मैं नईं सुन्या।

१ लालची २ तृष्णा ३ दुःखी, अपमानित ४ प्रतिष्ठा।

चल्या वोंच बंगाले के शहर उधर,
सो मा-बाप की बात कूँ ठेल कर।

सो धन इश्क़ के मद सूँ माता अथा,
पकड़ बाट मैं अपनी जाता अथा।

यो राकस ने आ बन्द पकड़्या मुँजे,
कहीं जाने ना दे जकड़्या मुँजे।

संगाती जो लोगाँ अथे आस कर,
यकेला मुँजे सट के गए न्हास कर।

सो ऐसे ख़राबे में याँ आज कोई,
नहीं दूसरा भी ख़ुदा बाज कोई।

तूँ याँ क्या सबब शाह आया अहै,
तुजे कौन इस ठार ल्याया अहै।

यो राक़स के आने केरा वक्त है,
तूँ जाता नहीं जीव क्या सख़्त है।"

कहे शह के "ऐ गुनवन्त गुनसिंघार,
तूँ दिसता है मेरा भौत दोस्तदार।

तेरा होर मेरा सो यक हाल है,
दो मछलियाँ बिचारयाँ कूँ यक जाल है।

के मैं ख़स्ता दिल होर तूँ दिल निगार,
हमें दोनां मिल अब अछें एक ठार।

हमें दोनो आशिक़ दरदमन्द है,
हमें दोनो यक फ़न्द में बन्द है।

हमें दोनो पंखी है यक बाग़ के,
हमें दोनां शोले हैं यक दाग़ के।

हमें दोनां यक बाट के चलनहार,
हमें दोनो यक खाट पर हैं सवार।

हमें लावबाली अहैं बावले,
हमें जान ख़्याली हैं अतावले।

हमें दोनों शौक़ी हैं यक शौक़ के,
हमें दोनों ज़ौक़ी हैं यक ज़ौक़ के।

हमें दोनों बदलाय हैं भेस कूँ,
हमें दोनों जाते हैं परदेस कूँ।

हमें दो परेशान यक जमा के,
हमें दो पतंगाँ है यक शमा के।

हरेक ठार दो में मुहब्बत अहै,
के आशिक़ कूँ आशिक़ की सुहबत अहै।

दुनिया में नहीं कोइ आशिक़ बग़ैर,
जो दुख कोइ किस का सुने कान धर।

के आशिक़ दुखी दुख भाता है उस,
दुखी है वो सच दुख सुहाता है उस।

दुखी कोई तो उस दौर में आज किस,
न कह दुख अपना दुखिया बाज किस।

दुखिया तेरे दुख का सँगाती अहै,
तेरे दुख की बात उस कूँ भाती अहै।

सुकिया[1] के कने जा के दुख बोले जो,
अपस पर हँसा लेने मँगता है वो।

जो ताक़त तुजे नईं है दुख सोसने[2],
तो दुक कह अपस जाय दुखिया कने।

दुखिया दुख ते ख़ुश होर सुखिया सुख सते,
नहीं सुक सूँ निसबत है कुछ दुख सते।

१ सुखी २ भोगने।

सुकिया किस के दुख कूँ अँपड़ता नहीं,
के सुखियाँ कूँ दुखियाँ सूँ पुरता नहीं।

पिरत जिस के मन मेंच कैसी अहै,
वो क्या जाने ख़ुश हाली कैसी अहै।

जो कोई शाद मानी सूँ सँपूर है,
सो उस ग़म की लज्जत ते वो दूर है।"

---

कहतीं हूँ दुख मेरा रो कर मेरी इनी सकियाँ कूँ,
आताँ वकद[1] पलेटी[2] आ पोंच ते अँखियाँ कूँ।

---

इसी इश्क़ की बात कूँ धात धात,
जो करते अथे शाह उस के सँगात।

सो राकस देखे दूर ते आवता,
वोना साद[3] ज्यूँ राद[4] अरडावता[5]।

जो भोतीच अंगे धस कर आने लग्या,
शक्ल बदशक्ल कर डराने लग्या।

सो शह आयता[6] अलकुर्सी पड़ फूँक कर,
किये दूर उसे मूँ उपर थूँक कर।

तो राकस वो नज़दीक आ नईं सक्या,
रह्या दूर टुक हात ला नईं सक्या।

डरें नईं जो शह देव मग़रूर ते,
लग्या संग भिरकाने[7] वो दूर ते।

जो उट शह किया जीव अपना बड़ा,
कमाँ उतरी थी उसकूँ चीला[8] चड़ा।

कशिश कर जो शह तीर मारे सो वो,
पड़्या भुईं पै तल सीर उपर पाँव हो।

---

१ अवस्था २ बदली ३ शुभ ४ बिजली ५ तड़कती ६ कुरान की आयत ७ फेंकने ८ तीर।

उलट यूँ दिसे ज़ख्म खा सीर में,
के ज्यूँ अक्स अछै झाड़ का नीर में।

धुलारा उठ्या यूँ वहाँ सर बसर,
जमीं उड़ चली जानों असमान पर।

फ़रंग म्यान ते काड़ी शह जान यूँ,
निकलता है कँचुली में ते साँप ज्यूँ।

किये चोट यूँ शाह नज़दीक आ,
के कोस बीस ऊपर पड़या सीस जा।

अलामत क़यामत की पैदा हुई,
जमीं चूर आटा हो मैदा हुई।

उड़े संग यूँ उस धुलारे मने,
के पतराँ हो लगते थे बारे मने।

उड्या गर्द चौंधर किए शह जो जंग,
छुप्या बाग[1] परगट हुआ है भुवंग[2]।

लहवा लहू सूँ है लाल शह जान का,
के याहत में है शाख़ मरजान[3] का।

रगत[4] समद यूँ भर वहाँ रह गया,
के धरती डुबी होर अम्बर बह गया।

तबक़ ते शफ़क़ रंग रगत सूँ भरे,
नज़ीक है जो धरती अजल झल मरे।

तूँ शह अजब बल है तुज खरग कूँ,
के अदमुई किया मार कर मर्ग[5] कूँ।

अर्क़ सूँ ग़र्क़ कर सपट फ़र्श कूँ,
के भुईं हो लगी मौज़ जा अर्श कूँ।

१ बाघ २ सर्प ३ एक पेड़ ४ खून ५ मौत।

जो आया मुसल्लम[1] दो दम दार कर,
फ़रिश्ते अर्श पर ते गए न्हाट[2] कर।

हयात आके दी शाह कूँ ख़ुश ख़बर,
लहू पी दन्दयाँ का अजल प्यास भर।

अतारद कुतब होर मरीख़ खाँ,
मिले आके तीनों यो नो खेज़ जाँ।

किये शह हलाक उस बद अफ़आल[3] कूँ,
के महदी सटे मार दज्जाल[4] कूँ।

अली दस्त थे शह कूँ हर टार फ़तह,
के नुसरत रफ़ीक़ होर है यार फ़तह।

किये शुक्र तब शाह करतार का,
पकड़ निपट चले भई उसी नार का।

दो बाटाँ मिल्याँ बाट में एक ठार,
कहे शह अतारद कूँ वाँ टुक बिचार।

हमें याँ ते किस बाट जाना अताल,
के दिल शाद हो पायँ धन का विसाल।

कह्या यूँ बराबर दो बाटाँ अहैं,
हरयक बाट कूँ छार घाटाँ अहैं।

फिरनहार नईं है क़दर होर क़ज़ा,
जिधर जायगा शह तूँ तेरा रज़ा।

इधर बी पयाँ होर उधर बी पयाँ,
के अछ्याँ अहैं याँ किधर बी पयाँ।

जंगल के जनावर ते पा ख़ुश शुगन,
अतारद सते बात इस धात सुन।

१ दृढ़ता से युक्त २ लांघ कर ३ दुराचारी ४ प्रलय से पूर्व आनेवाला प्राणी विशेष।

चल्या दिल में रख धन के मुख का सो ध्यान,
सीधे बाज़ू की बाट वो शह जवान।

रवाना हुआ वाँ ते शह बाँद सफ़[1]
के मरदाँ कूँ है फ़तह सीदी तरफ़।

दिस्या एक जागा फरह बख़्श वाँ,
पंखी करते थे चोंच सूँ नकश वाँ।

के बहते थे वाँ कालवे[2] नीर के,
अथे झाड़ अनार होर अंजीर के।

के सबज़ा हर्या होर हवा तर अथा,
घड़ी भर वही शाह कूँ घर अथा।

शहंशाह अबी आके उतरे थे जाँ,
सो याकूत रेज्याँ[3] की बालू थी वाँ।

सो क़ता गुलिस्ताँ का वो न था,
चमन बहिश्त का भुईं पर उतर्या अथा।

यता खूब था वो हवादार टार,
के जन्नत लेवे वाँ ते रौनक़ उधार।

यकायक दिस्या एक नज़दीक बाग़,
हुआ उसकी बासाँ ते तर सब दिमाग़।

के पाताँ के परद्याँ कूँ सब फाड़ कर,
फुलाँ झांकते थे सराँ काढ़ कर।

दो बाज़ू दो धर झाड़ दूर मत हो,
पवन मद सूँ डुलते थे सब मस्त हो।

सरोदाँ[4] सो मुर्गां के नाले थे वाँ।
सुरय्याँ कल्याँ फूल प्याले थे वाँ,

१ क़तार २ नाले ३ कण ४ गायन।

सुरंग साँवले खूब बाताँ भरे,
नदीम हो के बुलबुल जो चाले करे।

सो ताऊस पंखी तूती कब्क[1] हंस,
पकड़ पेट लुड़ने लगे हंस हंस।

वो सब खुश हो बुलबुल के चाल्याँ उपर,
उछलते अथे मस्त हो डाल्याँ उपर।

रहे बीच चमन फूल अहमरी[2],
के हँसती है खुशहाल हो धरतरी।

भँवर झुण्ड हो बन में घुमते अथे,
सो फूलां करे मुख चुमते अथे।

चमन तर न शबनम के है आब सूँ,
के मूँ धाये है फूल गुल्लाब सूँ।

बर्ग[3] बार आए हैं इस धात सब,
के छुप गए फुलाँ के तलें पात सब।

यकस ते चमन एक मक़बूल हैं,
के भँवरे, पतंग होर दीवे फूल हैं।

सो शह आने की यो खबर सून कर,
बन्दयाँ मुर्ख़-काल चूँडियाँ चून कर।

निकट साज़ कर मोर सब आए हैं,
सिराँ पर जड़त के तुर्रे लाए हैं।

चमन की चंगेर्याँ में भर फूल अपार,
लग्या ल्याने शह ताईं माली बहार।

यता पीक[4] हवा था वहाँ किश्त[5] कूँ,
के रश्क आए इस बाग़ का बहिशत कूँ।

---

१ एक पक्षी २ लाल ३ पत्ता ४ उपज ५ खेती।

खिज़ाँ कूँ न था आने इस ठार-ठार,
भार होर भीतर अथा सब बहार।

कहे शह अतारद कूँ "यो क्या अहै,
अजब ठार होर एकश तमाशा अहै।"

अतारद कह्या "शह पर्यां है यहाँ,
पर्यां कम नहीं कुच भर्यां है यहाँ।

बड़ी यक परी याँ है महताब नाँवँ,
करे है वो इस बाग़ में आज ठाँवँ।

यो पंख्याँ जो दिसते सो पंख्याँ नहीं,
पर्यां इस परी कियाँ हैं शह यो सभीं"।

कहे शह के "खुश ठार पर आये हैं,
तमाशा अजब देखने पाए हैं।"

सुलखन परी नाँवँ जो दास थी,
सितारा हो महताब के पास थी।

हरेक बात में उस सूँ महरम[1] अछे,
सो जम जीव ज्यूँ धन वो हमदम अछे।

अथा अन्त महताब का फ़ाम उसे,
के फ़रमाये महताब हरेक काम उसे।

अज (?) बियाँ सकियाँ सब बड़ी वोच थी,
सो उस धन के घर की बड़ी वोच थी।

जकुच बात बोले यो महताब सात,
सो सुनती थी महताब सब उस की बात।

मुहब्बत सूँ दोनों मने यूँ अथा,
के बाँदी बीबी का फ़र्क़ कुच न था।

१ जानकार।

लगे अब खुदी इश्क़ तो हर कहीं,
दिवाना अहै ज़ात धुंडता नहीं।

न मसजिद न बुतख़ाने का क़ाम है,
के परवाने कूँ शमा सूँ काम है।

न बूजे भली और बुरी ठार कूँ,
शमा हुई तो बस उस जलनहार कूँ।

अहै जीव पर जीय जाँ यार होय,
पतंग जल मरे शमा जिस ठार होय।

इसे चाशनी नेह की अँपड़ी अहै,
लज्ज़त ख़ूब जलने की सँपड़ी अहै।

मुहब्बत में सब कोई सारा नहीं,
यो काम अक्ल में आन हारा नहीं।

शहंशाह ग़ाज़ी कूँ देखी वो ज्यूँ,
कही जा के महताब के पास यूँ।

"सो यक आदमीज़ाद आया है याँ,
सो ले लोग संगात ल्याया है याँ।

सिफ़त उसकी तुज पास केता करूँ,
न सरसे सिफ़त उसकी जेता करूँ।

अवल तें तेरे कान भरती हूँ मैं,
के मतवाली होयगी के डरती हूँ मैं।

के मैं देक कर ताब ल्या नईं सकी,
यो बात अपने दिल में छुपा नईं सकी।

जो टुक देकती ब्यास्त दीदार में,
न आ सकती फिर वाँ ते इस ठार में।"

सटा ल्या वहाँ शौक़ महताब कूँ,
किया आतिश इस धात अपस आब कूँ।

कही "चल वो शह काँ है दिखला मुंजे,
के अव्वल ते मालूम यू था मुंजे।"

जो संगात महताब कूँ ल्याय वो,
सुलक्खन सकी शह कूँ दिखलाय वो।

सो महताब देख शह कूँ बेताब हुई,
मुहब्बत सूँ गुल ज्यूँ वो गुल्लाब हुई।

पड़ी मस्त हो यूँ वो पग डग मने,
के उठने की ताक़त न थी उस मने।

लगा जीव वो नार उस लाल सूँ,
वहाँ तें उठी बारे हर हाल सूँ।

कही यो "फ़रिश्ता अहै या बशर,
यकायक इसे याँ हुआ क्यूँ गुज़र।

के इस बाट कूँ आदम आता नहीं,
जो आता सो भी फीर जाता नहीं।

खुदाया सलामत रख इस शाह कूँ,
पर्यों तें अमानत रख इस शाह कूँ।

कही शह अजब खूब महबूब है,
अछे दिल जो मुंज पर तो क्या खूब है।"

अन्देशा भी दिल में उने यूँ करी,
के "यो आदमी होर मैं हूँ परी।

दिवानी हो बाताँ करूँ सुध खोय,
परी होय आदम सूँ क्यों जोड़ होय!

रुबाई

को शाह यो इस बाग़ मने आवेगा,
को शाह मुंजे नेह सूँ गले लावेगा।

को शाह हमें मिल के यहाँ बैठेंगे,
को शाह सूँ मिल जीव ख़ुशी पावेगा।"

मुलक्खन सखी नाज़ परवरद कूँ,
लताफ़त केरे बाग़ के दर्द कूँ।

कही पाँवँ पर हात रख महताब,
के "शह कूँ बुला ल्या तूँ जा अब शिताब[1]।

तुहीं पे दोस्त मुँज होर तुहीं यार है,
तेरा मुँज उपर ली[2] यूँ उपकार है।

के शह ऐसे कूँ मुँज कूँ दिखलाय तूँ,
नहीं आती थी मैं सितम ल्याय तूँ।

मेरा पाँवँ पड़ना तूँ कह होर सलाम,
यो शह काँ ते आया खबर ले तमाम।

के सकती नहीं मैं वहाँ लग अँपड़,
बदल मेरे तूँ शाह के पाँवँ पड़।

छुपाई हूँ मैं इस सबब आप कूँ,
मबादा[3] खबर कोई करे बाप कूँ।

तूँ बेग अब रिझा कर मीठी बात सूँ,
बुला ल्या यहाँ लग हरेक धात सूँ।"

मुलक्खन सकी बात इस धात सुन,
उछलती ख़ुश्याँ सूँ चली शाह कन।

उसे देक कर शाह हैराँ रहे,
मगर हूर है यो परी नईं कहे।

सो नज़दीक बिसला उसे प्यार सूँ,
लगे बात शाह करने उस नार सूँ।

१ जल्दी २ बहुत ३ कहीं ऐसा न हो।

"तेरा क्यों सकी याँ लग आना हुआ,
तुजे देक कर मैं दिवाना हुआ।"

वो अपरूप दिलदार हूरी खिताब,
अदब सूँ दयी शाह कूँ यूँ जवाब।

के "तुज ताँईं ऐ शाह मैं आइ हूँ,
खबर एक महताब की ल्याइ हूँ।"

मुलक्खन जो आती थी भौ साज़ सूँ,
सो ग़मज़े व छुन्द बन्द होर नाज़ सूँ।

कही "किस शहर ते तूँ आया है शह,
भई किस शहर कूँ जाने मंगता सो कह।

मुबारक तेरा शह यो आना अछो,
बन्दा हो तेरे घर ज़माना अछो।"

जो महताब कइ थी सो कइ शाह कूँ,
सो कुछ दिलते बी जोड़ कइ शाह कूँ।

"बुलाती है वो नार ऐ शह तुजे,
इसी काम कूँ भेजी है याँ मुंजे।"

कही "ऐ सुघड़ शह तूँ अब बेग चल,
मुअत्तल[1] वहाँ काम सब तुज बदल।

तूँ बेगानगी यूँ नको देख शह,
करम कर वहाँ लग सो आ बेग शह।

के सकता है शह आ तूँ क्या डर अहै?
हमारा वो नईं घर तेरा घर अहै।

१ रोक देनेवाला

### रुबाई

"इस बाग़ मने आज जो आई है परी,
यक दिल सते जीव तुज सूँ लगाई है परी।

औ धात इस सात मजलिस कूँ सिंगार,
ऐ शाह तुजे बेग बुलाई है परी।"

अतारद कूँ कये "क्या है तदबीर अब,
के है काम याँ का तुजे फ़ाम सब।"

कह्या "शाह यो तो अजब ठार है,
वले आज जाना सो नाचार है।

परी हो के मँगती है हमना कूँ यूँ,
तो वाँ लग हमीं शाह ना जाय क्यूँ।

चल ऐ शाह, देखें जा के इस नार कूँ,
नको खींच टूटे तलक तार कूँ।

ज़रूरत है रहना उस के फ़रमान में,
हमारा है कौन इस बयाबान में।

यहाँ आज लग कोइ आया नहीं,
किने दिल किसी का पत्याया नहीं।

पत्थर तल जो हात आए ऊकल[1] सते,
तो वाँ ते उसे काढ़ना कल[2] सते।

हमें आदमी होर परी वो है रास्त,
परी ते मुरव्वत है आदमी में ज्यास्त।

बुलाती वो इस चाव सूँ पुरदुंबाल,
तो वा जब है हमना कूँ जाना अताल।"

१ ऊखल २ बुद्धि।

किये जीव ख़ुश होर हुए एक दिल,
चले उस सुलक्खन सकी सात मिल।

अथी दूर ते देक शह कूँ सुधन,
परी हूरते ख़ूब चन्दर बदन।

पराँ का पर्यां छाँवँ छायाँ अथ्याँ,
लटाँ सब बिखर मुख पर आया अथ्याँ।

अछैं नैन इस केस काले मने,
के मछल्याँ दो सँपड्याँ हैं जाले मने।

उछल्याँ हैं बिजल्याँ अभालाँ तलें,
के नैनाँ झमकते हैं बालाँ तलें।

दिसे लालक उस नैन बिच यों सँवर,
के मुर्ग़ी सटी की सफेद आब पर।

सटे लाल डोर्याँ सूँ पुतली कजल,
के मिरीख़[1] के घर में आया ज़ुहल[2]।

सो धन के तन ऊपर दिसे यूँ गुहर[3],
के बैठे हैं चुगने मगर सरू[4] पर।

अंग होके आ पाँवँ पर अचपली,
सो मह बाग़ में शह कूँ लेकर चली।

शहंशह कूँ धन बाँद गुलहार कर,
ले कर गई अपस पहाड़ पर प्यार कर।

पवन ऐश ते फूल ज्यूँ खेल कर,
पलंग पर बैठे दोनों मेल कर।

दो फूल थे उनो होर चमन था पलंग,
के रहता है दायम चमन फूल संग।

---

१ एक नक्षत्र २ एक नक्षत्र ३ मोती ४ सरोवर।

पलंग शाह के तईं जो वाँ ल्याए थे,
सूरज चाँद जैसे उसे पाए थे।

सो उस सात मिल यूँ वो शह जान थे,
के बिलक़ीस सूँ ज्यूँ सुलेमान थे।

सकी शाह सूँ एक हो यूँ अछे,
के मिठाई सूँ मिल शकर ज्यूँ अछे।

परी तो फिराई थी मिलने कूँ ख्याल,
चले शह रखे वाँ अपस कूँ सँभाल।

लग्या जीव यक ठार जिस ज़ोर सूँ,
इसे कुछ ग़रज़ नईं है भइ होर सूँ।

मुहब्बत कहीं यूँ हुई नईं अहै,
मुहब्बत हे जाँ वाँ दुई नईं अहै।

दिसे यूँ तिल इस मुख मैदान में,
के हब्शी बच्चे है गुलिस्तान में।

जो करती अथी बात धन राज सूँ,
सो झड़ते थे बुन्द ख़ूये[1] के लाज सूँ।

के नार्यों में वो नार सरताज है,
के जिस में शरम होर कुच लाज है।

शरम होर लाज होय जिस नार कूँ,
भुला लेवे यक तिल में संसार कूँ।

जो महबूब अछे ख़ूब ख़ुश साज़ का,
शरम उस कूँ सिंगार होय नाज़ का।

शरम सूँ अछे नार तो दिल भुलाय,
शरम नईं सो वो नार क्या काम आय।

[1] वीरता।

मेरी बात सुन पन्द यो रास्त है,
भले कूँ शरम जीव ते ज्यास्त है।

भला हौ नई पार ता भरम कूँ,
भला जीव देता अहे शरम कूँ।

जो मोमिन मुसलमान दिल नर्म है,
निशाँ उसके ईमान का शर्म है।

जो पैले हरेक ठार छब है उसे,
शरम लाज होर नाज़ सब है उसे।

सुधन मुख दिसे शर्म के आब में,
सटे हैं मगर फूल गुल्लाब में।

लटाँ आरह्याँ यूँ सुधन गाल पर,
के सुंबल की ज्यूँ छाँवँ गुल्लाल पर।

शफ़क़ रंग किसवत सों उस मह कूँ था,
बड़ा ख़त उसे देखना शह कूँ था।

सूरज जाके भाना लिया खाब का,
के दिन ताब देता है महताब का।

अदब सूँ सकी बैठ[1] कर शह कने,
सो बाताँ लगी बाट कियाँ पूछने।

कहे बात यक एक शह उसके पास,
परी होर शह थे मगर एक रास।

मुहब्बत लगी दोनों में आय कर,
रहे दोनो यक ठार जीव लाय कर।

परी माहताब होर कुतुबशह सुजान,
अपस में अपी कह लिए भाई भान[2]।

१ बैठ २ बहन।

यो काँ का सगा होर वो काँ की सगी,
किधर ते किधर दोस्ती आ लगी।

के शह सात होर शाह इस सात यार,
मिले आग-पानी दोनों एक ठार।

खबर जो सुनी शाह ते इस देव की,
सो सेवक हो धन शाह का सेवकी।

कहाँ शुक्र वो काम यो हुए का,
कहीं डर अथा मुँज बी उस मुए का।

न थी नींद शह रात कूँ धाक ते,
छुटी आज इस भिष्ट नापाक ते।

मुआ गावदी[1] कुच्छ नहीं जानता,
पर्यां कूँ बी आ आ के रंजानता[2]।

अजब बद असल शक्ल धरता अथा,
पर्यां का दिल इस देख डरता अथा।

चल्या नईं कुच्छ उस देव अवधूत सूँ,
केता कर लड़े गिद्दयाँ पर्यां भूत सूँ।

पर्यां नाज़ुक होर देव वो सख़्त था,
पर्यां नेक बख़्ताँ[3] वो बदबख़्त था।

तूँ जम जीव होर कर तूँ जम राज शह,
तूँ जीवदान हमना दिया आज शह।

शिर कमान शह तूँ मोत है दिलेर,
के तुज हात तल देव होते हैं ज़ेर।

तूँ शह होएगा माही[4] व माह[5] का,
के यो फ़तह पैला है तुज शाह का।

१ गँवार २ रंजीदा करना ३ भाग्यवान ४ मछली ५ चाँद अर्थात् जल और आकाश का।

सदा जीव होर दिल तेरा शाद अछो,
पर्यां की यो यक बात तुज याद अछो।

शर्त कर उने हात दी हात में,
के शक नई है मैं कह सो उस बात में।

शहंशाह उस वक्त बख़्शीश में आ,
परी कूँ दिए कोट उस देव का।

हुआ देव जीव दे वहाँ ते जुदा,
के ज़ालिम ते राज़ी नहीं है ख़ुदा।

परी बन्दी के बन्द ते आज़ाद हो,
दुआ कइ शहंशाह कूँ शाद हो।

कही उस सुलक्खन कूँ धन महताब,
सुराही पियाला ले कर आशिताब।

के माँदे हो शह बाट ते आये हैं,
सो थण्ड धूप होर बाव ली खाये हैं।

जिसे इश्क़ का ज़ोर अछे सर बसर,
उसे थण्ड होर धूप बारा[1] किधर।

सुराही होर प्याला ले कर नार वो,
पिलाने लगी शह कूँ उस ठार वो।

प्याला नवाँ आप भाते पिए,
ज़रुरत कूँ शह इन मनाते पिए।

यता शाह दिल धन पै धरते अथे,
के हर प्याले कूँ याद करते अथे।

के सद[2] हैफ़[3] जो पीव उस ठार नईं,
सो इस ठार वो जीव का यार नईं।

१ हवा २ सौ ३ दुःख।

अजब कुच फ़रह[1] बख़्श यो कैफ़ है,
वले यार वो नइ सों सद हैफ़ है।

सो धन हटते प्याला जो शह लेते थे,
सो कुच पी न पी वोंच सट देते थे।

के माशूक़ जाँ नईं वहाँ भाये क्यों,
प्याला पिया[2] बिन पिया[3] जाये क्यों।

प्याला पिने कूँ मज़ा वाँ अहै,
के माशूक़ मन भावता जाँ अहै।

जहाँ जीव का पीव भाता अहै,
जुकुच वाँ किए सो ख़ुश आता अहै।

अजब उसकी मजलिस में कुच भेद था,
जुकुच जिस कूँ होना सो मुस्तैद था।

अथ्या सब वले वाँ न थी नार वो,
के ख़ुश दिल करे शह कूँ इस टार वो।

अथ्या सरते गुल[4] बज़्म[5] में नोश का,
हुआ मस्त अकल मुद उड्या होश का।

फुलाँ बाग़ में हँसते थे शौक़ सूँ,
जनावर चुरग़ाते[6] थे सब ज़ौक़ सूँ।

ज्याँ फूल रंग-रंग दुकानाँ चमन,
के ख़ुशबूदी फ़रोशी अपै वाँ पवन।

जो शह याद करते थे धन गाल कूँ,
तो गड़ देते थे जाके गुल्लाल कूँ।

सो नरगिस कूँ शह देक शहमात थे,
के नयन इस सरो क़द के इस घात थे।

१ शुभ दायक २ प्रिय ३ पीना ४ फूल ५ समा ६ बोलते।

जो शह कूँ जोबन याद आते अथे,
तो नार निज पर हात पाते अथे।

सो धन क़द कूँ शह ख़्याल में ल्याय कर,
गले लगते थे सरो कूँ जाय कर।

गुमाते थे शह यूँ वक़्त बन मने,
सुधन का पिरत रक अपस मन मने।

**रुबाई**

ख़ुशहाल हो जीव आज ख़ुशी पाता नहीं,
पीता हूँ शराब होर असर आता नहीं।

कोंल्या के ज़रब दिसते अहैं फूल सब,
तुज बाज मकी बाग़ मुंजे भाता नहीं।

अतारद कह्या "शह तूँ जीव जम,
सदा शाद अच्छ तूँ के नईं तुज ग़म।

तूँ दो जाम पी जग में ज्यूँ जम हुआ,
ख़ुशी ज़्यास्त ग़म था सो सब कम हुआ।

मेरी बात सुन ए चंचल क़ुतुब शह!
मुंजे दे रज़ा होर तूँ याँ च रह।

के मैं जा के वाँ काम कर आऊँगा,
सो तुज ताँईं उस नार कूँ ल्याऊँगा।"

कह्या शह के "मुंज कूँ बी ले सात चल,
मुंजे याँ तलक के तूँ ल्याया अबल।"

अतारद कह्या "शह उतावल न कर,
तूँ आक़िल अहै अप से बावल न कर।

न वाँ जाके रहने कूँ कईं ठार है,
न वाँ आशना कोइ ना यार है।

तुजे क्यों ले कर जाऊँ वाँ मैं संगात,
के दूर होर दराज़ है अजूँ शह यो बात।

तूँ आशिक़ अहै होर तुजे फ़ाम नईं,
तुजे ऐसे कामाँ सूँ कुच काम नईं।

सितम छोड़ दे कर आनन्द होर सुख,
झूटे क्या सबब देखता दर्द दुख।

ग़ज़ब में नको आ तूँ मुख मोड़ कर,
के दुख नईं मँग्या कोई सुख छोड़ कर।

तूँ नईं बात सुनता कहूँ मैं किसे,
खुशी देती ज़हमत किए सो उसे।

तुजे ख़ूब है शह रहने कूँ यो ठार,
के वो शह परी हुई है तुज सेती यार।

बँगाला नगर याँ ते नज़दीक है,
नको कर तूँ ऐ शाह अब झंझ है।

अन्देश्या अन्देश होर टुक फ़ाम देक,
के क्या काम करता हूँ तूँ काम देक।"

अतारद की सुन बात शह चुप रह्या,
केतक वक्त कूँ फिर उसे यूँ कह्या।

"नपै जीव जानी मेरा जाँ अहै,
जो आशिक़ हुआ उस कूँ सुख काँ अहै।

तूँ सुख जानता यो मुँजे दुख अहै,
मेरा दुख सो तेरे अँगे सुख अहै।

लगी आग जग कूँ यो गुलज़ार नईं,
बहिश्त दोज़ख़ है वाँ अगर यार नईं।

येता मैं जो सोस्या सो उस धन बदल,
न उस शह परी तईं न उस धन बदल।

तूँ दाना कूँ जान्या है नादान कर,
के अनजान हो बोलता जान कर।

परी यो परी ते वो नारी भली,
इस आसूदगी ते वो ख़ारी भली।

मेरा हाल जो है सो कहता हूँ मैं,
तूँ इतना कता[1] है तो रहता हूँ मैं।

भिकारी दरस का हूँ कई भीक नईं,
के आशिक़ हूँ उस ते मुंजे देक नईं।

रज़ा मैं दिया हूँ तुजे, जा अताल,
वले बाट में तूँ अपस कूँ सँभाल।"

कह्या शाह "ख़ुदा है सँभालन हार,
भले होर बुरे ते सो हरेक टार।

जो साहब ओसूँ राज़ी हो यक दिल अछे,
उस आसान होवे जो मुश्किल अछे।

वक्त के बुज़ुर्गां दिए है यो सीक,
के सौ देस जोरे है परदेस नीक।

मुंजे फ़ाम कर शाह तूँ फ़ाम सूँ,
के बन्दया हूँ सर में तेरे काम सूँ।

पिरत पंत ली[2] कुच करेगा यहाँ,
सहूँगा जो मुँज पर पड़ेगा यहाँ।"

शहंशह की तौफ़ीक़ उस सात कर,
जुकुच दिल में थी बात वो बात कर।

रख्या शाह के पाँव पर सर उने,
सरापा पतंग हो के फिर-फिर उने।

१ कहता २ बहुत।

भोत नेह सूँ शह उस गले लाये,
जुकुच मुस्तैदी मँग्या सो दिये।

---

मुहब्बत सबर मंगता है जो तूँ रोता वला[1] होयगा,
अरे ऐ दिल समझ यक तिल केता तूँ बावला होयगा।

**रुबाई**

मैं आज बंगाले की तरफ़ जाता हूँ,
मक़सूद जो है दिल में सो सब पाता हूँ।

या धन के कन उस शह कूँ बुला भेजूँगा,
या शह के कन उस धन कूँ ले कर आता हूँ।

१ अच्छा फल लायेगा।

## रफ्त अतारद सपँ बंगाला[1]

रज़ा ले अतारद रवाना हुआ,
बंगाले में बेगी च जाना हुआ।

सो वो देस साकिन[2] हो वाँ टैर कर,
तमाशा देख्या शहर का फीर कर।

घर घर अनन्द सुक्ख[3] संपूर था,
ख़ल्क़[4] शाद सब मुल्क मामूर[5] था।

दिस्या महल ऊँचा सो इस धात वाँ,
अँपड़ता न था अर्श[6] का हात वाँ।

सो वो महल था उस सुघड़ नार का,
तमाशा दिसे वाँ ते संसार का।

चतर गुन भरा वो अतारद चंचल,
रह्या मुशतरी शाह के महल तल।

दुकाँ माण्ड्या[7] वहाँ भोत साज़ सूँ,
लग्या करने तसवीर भो नाज़ सूँ।

चितारे[8] वहाँ के खबर पाय कर,
हुए उस के शागिर्द सब आय कर।

दिखाने लग्या सूरताँ धात धात,
जुड़ी उस अतारद के चौंफेर[9] जमात।

उड़ी यो खबर शहर में फूट कर,
तमाशे कूँ जरा सब पड़्या टूट कर।

सो उस दीस मुशतरी शाह नार,
लगी फिरने आ महल में ठार ठार।

---

१ अतारद का बंगाल की ओर प्रस्थान २ निवास ३ सुख ४ जनता ५ अपने काम में नियुक्त ६ आकाश ७ बाज़ार ८ चित्रकार ९ चारों तरफ़।

जो धन पाक दामन वो बे ऐब थी,
यकायक सो उस वक्त पर ग़ैब थी।

दो खिड़क्याँ खुल्याँ बाव[1] ते फाँक[2] कर,
छज्जे पर ते देखीं सो वो झांक कर।

"चितरा" कही "काँ ते आया अहै,
उसे कौन इस ठार लाया अहै।"

महरवान वाँ नज़दीक जो दाय थी,
खबर उस अतारद की वो पाई थी।

कही वो के "ऐ मुश्तरी शह सुभान,
गुलाब हो अछो तुज्ज पर आसमान।

दक्खन ते यो आया है इस ठार पर,
उमीदवार हो कर तेरे प्यार पर।

जुकोई पादशाहाँ के नज़दीक है,
भला है जो हर एक खूबी कहे।

जुकोई जो असील होर ज़ाती अहै,
बुराई नहीं उस ते आती अहै।

बड़ा यो हुनरमन्द वाँ का अहै,
खबर ली है मैं यो जहाँ का अहै।"

कही मुश्तरीशाह उस दाय कूँ,
महरबान अपनी सगी माई कूँ।

"मगर आशनाई तू धरती अहै,
के इत्ती सिफ़त[3] उसकी करती अहै।"

जवाब उस सकी कूँ सो यू दाय दी,
"तूँ यूँ बोलती है मुंजे चुपके की।

१ हवा २ झांके से ३ प्रशंसा।

न उस सात धरती हूँ कुच गर्ज़ मैं,
जो उसका करूँ तुझ कने अर्ज़ मैं।

सुनी चार लोगाँ ते जूँ बात मैं,
कती हूँ तेरे पास उस धात मैं।

चितारे जो हैं इस बंगाले मने,
सो वो शाद[1] हो सब रहे उस कने।

पत्यारा[2] जो तेरा नहीं मुज उपर,
तूँ आदमी कों वाँ भेज होर ले खबर।

तूँ मेरे अंग की नहनी हो के यूँ,
झुटाती मेरी बात लोगाँ में यूँ।

तुजे झूट होर सच बराबर है सब,
न तुज में मुलाजा न तुज में अदब।

असील है तूँ यक बाप यक माय की,
नको तोड़ तूँ यूँ अदब दाय की।

यो बाताँ तुजे कौन सिखलाए हैं,
यो क़िस्सा जो मस्के कूँ दाँत आए[3] हैं।"

कही "दाय मैं तुज सूँ हंसती अथी,
तूँ नई जानती की खबर तुज न थी।

तेरी बाता ना सुन सुनूँ किस की बात,
अरी दाय मैं नई हूँ ऐसी कुजात।

गुनह गर अछेगा तो मुज बख़्श तूँ,
न कर चुन[4] झुटी यो मेरे, नक़्श[5] तूँ।

के दाई मो ज्यूँ माय का टार है,
तुजे कुच कना बहुत बजकार[6] है।

---

१ प्रसन्न २ विश्वास ३ मुहावरा है—अनहोनी बात होना ४ गिन ५ क्षमा करना ६ धृष्टता।

लतीफ़ा जो करना तो इस बन्द सूँ,
के ज्यूँ बन में रावन अछे छन्द सूँ।

येता इतने कूँ जानना खूब नईं,
हंसी में बुरा मानना खूब नईं।

तूँ जा अब बुला उस चितारे कूँ याँ,
सूरत ग़ैब[1] ते लिखन हारे कूँ याँ।

के धुँड़ती थी ली दिन सते जाँ तहाँ,
के पैदा हुए नक्क़ाश कोई खूब याँ।

खुदा उस कूँ ल्या ल्या[2] है इस ठार अब,
महल का उसे काम फ़रमाएँ सब।

देखें बारे नक्क़ाश कैसा है यो,
दिसेगा अताल आपी जैसा है वो।

देखें काम उस होर तुज बात आज,
के मसला अहै एक पन्त होर दो काज।"

सो यो बात सुन दाय अनजान हुई,
वो नादान धन मुख पशेमाँ[3] हुई।

कही दाय अपनी कूँ यूँ की कही?
बले ला गले दाय कूँ भी कही।

"नको सुस्ती कर वेगी सूँ जा अताल,
महल कूँ चतरने उसे ल्या अताल।

के इस महल का आज महतर[4] अहै,
अजब भागवन्त खूब यो घर अहै।

जुकोई अकल होर फ़हम धरते अहैं,
हरेक काम महतर सूँ करते अहैं।"

१ गुप्त २ ले आया है ३ पछताई ४ श्रेष्ठ।

सो सुन्धर बख़्तवर चंचल मुश्तरी,
जो मोतीच मंग ले के मिन्नत करी।

बज़ाँ[1] उस कूँ दाई बुलाने चली,
उसे बेग इस ठार ल्याने चली।

अतारद के नज़दीक वो नार की[2],
"बुलाती तुजे मुश्तरी शाह की।

सुतें बख़्त जागे तेरे सिर ते आज,
के तुज आवो कई मुश्तरी नार आज।

ख़ुशी ख़ुरमी[3] है तुजे सख़त आज,
के यारी दिए हैं तेरे बख़्त आज।"

अतारद यो सुन भोत ख़ुश हाल हो,
चल्या शाह कन इस धन का दुम्बाल[4]।

देख्या दूर ते मुश्तरी शाह कूँ,
सराया भात धात उस माह[5] कूँ।

मिला लेने कूँ ली उलाले[6] किया,
तमाशे तमाशे के चालें किया।

जो वो दाय उस शह कूँ ख़ुश हाल पाय,
सो शह के हुज़ूर उस चितारे कूँ लाय।

अतारद किया मुश्तरी कों सलाम,
के "शह मैं हूँ तेरा कमीना ग़ुलाम।"

हंसी यो बचन सुन ख़ुशी सूँ सुधन,
के हंसता है ज्यूँ बाव ते फूल बन।

दिखाई उसे महल वो ठार ठार,
के इस महल कूँ इस वज़ा तूँ सवाँर।

---

१ उस वक्त २ कहीं ३ आनन्द ४ पीछे ५ चाँद, अर्थात् चन्द्रमाँ सी मुश्तरी को
६ उतावला।

के "मैं की हूँ क्यों तूँ करेगा जो रास,
अखेरूँगी सुन्ना[1] तेरे आस पास।

नवाजूँगी[2] तुज कूँ भोत धात मैं,
जड़त[3] का तुजे देऊँगी हात मैं।"

अतारद कह्या शह कूँ सर भू में धर,
के "मैं क्या सकूँगा तेरा काम कर।

करेगा नमक शाह तेरा यो काम,
के मैं क्या हूँ यो काम करने तमाम।

तेरा क़स्द[4] गर शाह सारा अहै,
तो यो काम सब होनहार अहै।"

१ स्वर्ण २ कृपा करूँगी, दान दूँगी ३ जड़ाऊ ४ इरादा।



गोलकुण्डा



इब्राहीम कुतुबशाह

## आरस्तन महल मुश्तरी[1]

अजिद हो के जिद वो जो धरने लग्या,
सो उस महल कूँ नक्श करने लग्या।

जो ज़रतीख़[2] ज्यूँ चाँद सुन्ना सो सूर,
खफ़ंद अम्र तारे हैं मुर्गां सो नूर।

अतारद चितारे कूँ नईं कुच्छ ग़म,
के धरता अहे हात जोज़ा क़लम।

जो खुश हो मिस ल्याय टुक दिल मने,
तो लक महल चित्र वह यक तिल मने।

निपट ध्यान यक दिल सूँ धरने लग्या,
विचत्तर चितर वो चितरने लग्या।

कहीं बन बयाबाँ कहीं समद भार,
कहीं मुर्ग़ माही कहीं फूल झाड़।

कहीं शेर शर्जा[3] कहीं गज तुरंग,
कहीं बाज़ बहरी कहीं यक कुलंग[4]।

कहीं बुत बुतखाने होर बुत परस्त,
कहीं नार होर पुरुष यक टार मस्त।

कहीं शायरां शेर कहते अहैं,
कहीं चश्मे अमृत के बहते अहैं।

कहीं है मुलाने कहीं हैं खुमार[6],
कहीं हैं दिवाने कहीं है हुश्यार।

कहीं तख़्त पर कोई सुती[7] मस्त हो,
कहीं बैठे दो यार हमदस्त हो।

---

१ मुशतरी के महल को सजाना २ ज़ोरदार ३ सिंह ४ पक्षी ५ मुल्ला परहेज़गार ६ नशा
७ सोती हुई।

कहीं पीर शहीद होर पैग़म्बराँ,
कहीं देव जिन होर परियाँ अछरियाँ[1]।

कहीं खुसरो होर शीरीं यक ठार है,
कहीं लैला होर मजनूं दो यार है।

कहीं गाती गावन खुश आवाज़ सूँ,
कहीं पातराँ[2] नाचतियाँ साज़ सूँ।

कहीं धतरे[3] मुर्ग़ सेमुर्ग़ सर,
कहीं चाँद सुरा च तारे अँबर।

चितार्या चितर वो अपस हात सूँ,
संवार्या महल कूँ भोत धात सूँ।

किया चौक[4] बीच चौक इस चौक पर,
नज़ाकत सूँ सिंगार नाज़ुक कर।

मुहे चौक इस नक्श मैदान में,
खिला चाँद का ज्यूँ है असमान में।

लिख्या शह की सूरत वहाँ उन जो आ,
हिली काँद निरजीव सब जीव पा।

अगर उसकूँ बाताँ में कोई खोलता,
तो हर संग इसका बचन बोलता।

अहैं संग जो इस कान्द[5] रंग-रंग नें,
के तासिर[6] मसीहा है हर संग में।

यो तासिर है शह की तासिर थें,
के ज्यूँ झाड़ बड़ता अहै नीर थें।

लिख्या नक्श संसार की नार का,
किया शह कूँ मद नायक इस ठार का।

---

१ अछरा का बहुवचन, अप्सरा २ वेश्याएं ३ धरती ४ आंगन ५ दीवार ६ गुण।

चितर झमके यूँ शह के मुख भान ते,
के रोशन ज़मीं ज्यूँ है असमान ते।

देख्या महल कूँ जो मुस्तैद कर,
के हर एक अँगुली कूँ था सो हुनर।

सरासर महल ज्यूँ किया बोस्ताँ,
के खुशहाल होएँ देक सब दोस्ताँ।

महल खूब आला यो ज्यूँ सरग[1] हुआ,
दन्दी दुश्मनाँ का सो झल[2] मर्ग[3] हुआ।

उसी दाई कूँ वाँ बुला भेज कर,
कह्या "मुश्तरी शाह कूँ कर खबर!

तुमीं काम जो कये थे सो सब हुआ,
इसे देखने का सो वक्त अब हुआ।

देखो यक नज़र इस महल कूँ अताल,
के मैं लो मशक्कत किया उस दुवाल।

धरो मुंज उपर टुक शफ़क़्क़त तुमीं,
करो चीज़ मेरी मशक्कत तुमीं।

हरेक काम होता जो उल्लास ते,
सो शाहाँ की उमीद होर आस ते।

अगर शह की अछ्ती न उम्मीद आस,
न होता मुंजे यूँ उस होर उलास।

बड़ा शाह वो है जो कुछ दान दे,
नवाज़े हुनरमन्द कूँ मान दे।

हुनर ज्यास्त होता अहे दान ते,
न उस की फ़हम अकल होर ग्यान ते।

---

१ स्वर्ग २ आग ३ मौत।

नको कर तूँ तक़सीर कुच दान कूँ,
के होता है बल दान ते ज्ञान कूँ।

सनद यूँ हुनर परवरी का है शह,
न याँ झूट कुछ शायरी का है शह।

हुनर है हुनरमन्द कूँ क्या ग़म अहे,
जो बख़्शे हुनरवन्द कूँ सो कम अहे।

तलब है जो ग़ालिब तलबगार पर,
करे नाज़ हुनरवन्द ख़रीदार पर।

हरेक ख़ूब जान होर ख़रीदार नईं,
बिचारे हुनरवन्द कूँ वाँ भार नईं।

यो मौक़ूफ़ है सब ख़रीदार पर,
सरअफ़राज़ करना समजकार पर।

हुनर ख़ूब हर बार होता नहीं,
रतन पाक हर ठार होता नहीं।

अगर मानी अछता तो इस वक़्त पर,
तो मालूम होती मेरी कुछ क़ुदर।

जु कुच नाज़ है मेरे काम में,
सो मशहूर है रोम होर शाम में।

न कुच आ मना किस पै धरता हूँ मैं,
ग़र्ज़ बात दुनिया की करता हूँ मैं।

तूँ दरम्याने आई तो यो काम कर,
मिरे काम का कुच सरंजाम कर।

इधर मट न दे काम तूँ कर तमाम,
के तेरी बुज़ुर्गी है मेरा सो काम।

जो समजे सो वो बोल किस ना धरे,
बख़्त ख़ूब नईं तो हुनर क्या करे।

हुनर होर बख़्त जब मिले एक ठार,
तो दौलत ग़ुलाम होर ख़ुदा होय यार।

वले दोनों यक ठार आना कधाँ,
हुनरवन्द मक़सूद पाना कधाँ।

के पंखी के तईं जोर पर का अहै,
हुनरवन्द कूँ तक़वा[1] हुनर का अहै।

बख़्त नईं हुनरवन्द कूँ तो ग़म नहीं,
हुनर ख़ूब कुच बख़्त ते कम नहीं।

हुनर ख़ूब उस पर जो बख़्त है बुलन्द,
यो दोनों भी होवें सुना होर सुगन्द[2]।

तूँ खुशहाल अछे होर न कर कुछ ग़म,
बख़्त ख़ूब ली है हुनर ख़ूब कम।

वही शाह आलम में आरिफ़ कवाय,
हुनरवन्द का लाड़ जे कोई चलाय।

के नाज़ुक है यूँ दिल हुनरवन्द का,
जो नईं ताब माशूक़ की छन्द का।

हुनर ख़ूब हुनरवन्द जो धरते अहें,
सो शाहाँ उपर नाज़ करते अहैं।

हुनर ख़ूब ज्यूँ ख़ूब महबूब है,
हुनरवन्द महबूब ते ख़ूब है।

सराऊँ उसे शाह वर साज़ सूँ,
जो सोसे[3] हुनरवन्द के नाज़ सूँ।

हर एकस कूँ दिल फ़हम सूँ जुफ्त नईं,
के आरिफ़ कहवाना यो कुछ मुफ्त नईं।"

---

१ भरोसा २ सोने में सुगन्ध ३ सहे।

अतारद वहाँ बैट भौ मान[1] सूँ,
कह्या बात उस दाय महरबान सूँ।

हुनर में जो उस धन कूं कुछ काम होय,
तो जिस खातिर आया सो वो काम होय।

अतारद यों बात उस ते बोल्या खिजा,
के देखे दिल उस नार का टुक निभा[2]।

१ बहुत आदर से २ गौर से, झुक कर।

## दीदन आरायश महल व इनाम दादन मुश्तरी ब अतारद[1]

कहीं दाय जा मुश्तरी शाह कूँ,
सूरज जिसते रोशन है इस माह कूँ।

के "शाह मुस्तैद सब हुआ है महल,
तूँ इस महल कूँ देखने आज चल।

तेरे हुक्म कूँ शाह जस ली अहै,
तुजे इस महल का हवस ली अहै।

तूँ धरती थे ली दीस[2] मूँ योच आस,
के को होयगा मेरा महल रास।

खुदा आस तेरी तुजे अब दिया,
के ज्यूँ महल मंगती थी तूँ त्यूँ किया।

महल देख होर मान शह साच कर,
मेरी बात तूँ होर उस का हुनर।

के शाहाँ कने झूट कह्या न जाय,
जुकोई झूट कये सो पत्याग[3] गँवाय।

बुलन्द मरतबा झूट ते होय पस्त,
दुनिया में नहीं सच्च ते कुच्च खूब वस्त।

अगर झूट सच कोई बुजनहार होय,
हुनर ऐब जो है सो इजहार होय।

अयाँ शक्ल है देखता ऐब कूँ,
हुनर है समजना हुनर ऐब कूँ।"

अचन दाय के सुन सुधन कर मुंज,
दुरस्त है ककर अपने दिल में समज।

१ महल की सजावट पर मुश्तरी का अतारद को पुरस्कृत करना २ दिन ३ विश्वास।

चली नार उस ठार उसके संगात,
तमाशा महल में देखी धात धात।

महल देख दाय कूँ गल लाय कर,
अनन्द शौक होर ज़ौक़ खत पाय कर।

जो बोली अथी बात वो धन सुजान,
अतारद कूँ उसते बी दी ज्यास्त दान।

शहाँ का दिल इस धात अछना भला,
दस्त दिसत इस वज़ा बात अछना भला।

खुदा जब जिसे कुछ दिलाता अहै,
नूँ शाहाँ के बी दिल में ल्याता अहै।

खुदा जब दिलावे तो कोई कुछ पाय,
शहाँ काँ ते दें जो खुदा नाँ दिलाय।

खुदा पास ते तूँ उमीद आस मंग,
अगर तूँ मँग तो खुदा पास मंग।

जो शाहाँ उपर बोल धरते अहै,
ग़लत है उनो योँ बिसरते अहैं।

अतारद का हासिल मक़सूद कर,
मुना दान दी दिल कों खुश नवद कर।

जो यक ठार टुक टेर चंचल खड़ी,
नज़र शाह की सूरत ऊपर पड़ी।

सूरत शाह की देखत भुली नार वो,
पड़ी बेमुद हो कर उसी ठार वो।

कितक वक्त लग धन वो बेहोश थी,
सो शाह की मुहब्बत करे जोश थी।

के आहाँ पर आहाँ जो मारी उने,
सटी मस्त हो होश्यारी उनें।

सो वो हाथ पकड़ी दुन्नूँ भोरने[1],
लगी हात आपस में अपे जोड़ने।

के "वो इस नहनी कूँ यहाँ क्या हुआ,
मेरी चन्दनी कूँ यहाँ क्या हुआ।

कहाँ जाऊँ किस को कहूँ क्या करूँ,
अताल इस कूँ इस ठार में क्यों धरूं।

मवादा परी का अछे इस नज़र,
के यो हुई यकायक यूँ बेखबर।

मुंजे आज दिसता नहीं कुच कहीं,
मंतरकारी भी कोई हाज़िर नहीं।

नवा महल है क्या हुआ याँ इसे,
लेकर जाऊँ याँ ने अता कीं इसे।

उठाती तो उठती नहीं नार यू,
न जाने के क्या देखी इस ठार यू।"

सो वैसे में वो नार हुश्यार हुई,
जो थी बेखबर सो खबरदार हुई।

सूरत शह की तिल तिल निभाने लगी,
खड़े क़द पे बलहार जाने लगी।

देक इस नक्श कूं नार हैरान थी,
सो सुद बुद गँवा सब परेशान थी।

न अन भावता था न पानी उसे,
हुई तलख[2] सब ज़िन्दगानी उसे।

पकड़ रही थी वाँ नार इस ठार कूं,
के भाती वही ठार इस नार कूं

१ झेलने २ कड़ी

वही नक्श तन था वही नक्श मन,
वही नक्श पानी वही नक्श अन।

कुतब ज्यूं कुतब टार पर थीर है,
वहाँ मुश्तरी फिरती चौफेर[1] है।

मुहब्बत जो पकड्या है यूं दाट कर,
बिचारा कहाँ जाय वो न्हाट[2] कर।

अगर किस कूं बल बल जो रुस्तम अछे,
मुहब्बत की तिल तिल सो बल कम अछे।

---

प्यारे मैं हूं राती यकेली क्यूं जीवूं माय,
मोती एक हारा होनी सो बिरहे की भार खाय

---

१ चारों तरफ २ भाग।

## ग़श करदन मुश्तरी अज़ दीदन तस्वीर क़ुतुब व पन्द दादन दाई[1]

लगी पूछने दाय इस नार कूं,
के "ए माई क्या देखी इस टार तूं।

नगर दिल नहीं की आनन्द मुक्ख पर,
के कुरबान गई दाय तुज मुख पर।

महल देखने आई थी शौक़ सूं,
सो अब बैठी की यूँ तूं बे ज़ौक़ सूं।

छुपाती तूं इस बात कूं की ए नार,
तुजे कौन है मुंज ते भी दोस्तदार।

तू बेगानी मुज जानी इस धात की?
नहीं बोलती खोल यो बात की?

के मा बाप दो यक बड़े भाई सूं।
छुपाते नहीं बात कोइ दाय सूं।

जो तूं ना कहसी मुंज कन अपना यो हाल,
तुजे दूद हरगिज़ न कर सूं हलाल।

अगर टुक जो तूं नाज़ सूं छन्द करे,
तो पंखियाँ कूं बारे पै पाबन्द करे।

तेरे मुख जलनल जगत लौन है,
तूं जिस ताईं यूं हुई सो वो कौन है?

के यो बात तूं मुंज तेरे पर कसूं,
ये भी ज्यास्ती सूं मेरे सिर कसूं।

फ़रिश्ता अगर होय असमान में,
तो मैं ल्या देऊं तेरे फरमान में।"

---

१ क़ुतुबशाह के चित्र को देख कर मुश्तरी का मूर्च्छित होना और दाई का उपदेश देना।

कही "दाय क्या पूचती हाल तूँ,
नको पड़ झुटे मेरे दुंबाल[1] तूँ।

बजिद[2] है तूँ इस बात कूँ खोलने,
वले मुंज ताक़त नहीं बोलने।

ज़बाँ मन मने लटपटाती अहै,
नहीं बात यकायक आती अहै।

फ़हमदारी की फ़ाम सूँ फ़ाम तूँ,
वकद[3] पर वकद देने क्या काम तूँ।

तेरे हात ते काम आसी न यो,
जो कऊँगी तुजे मैं तो न्हासी[4] न यो।

कही सच है क्या होएगा मुंज ते काम,
करेगा हक़ इस काम का अहतमाम।"

जो भोती च पूछी महरबान दाय,
तो इस दाय कूँ शह की सूरत दिखाय।

"यही इस सूरत की दीवानी हूँ मैं,
छुप्या भेद याँ कुछ जानी हूँ मैं।

यही नक़श भोदू भुलाया मुंजे,
यही नक़श नेह अब लाया मुंजे।

इसी नक़श का ध्यान धरती हूँ मैं,
इसी नक़श कूँ ताईं मरती हूँ मैं।

इसी नक़श कूँ देख परेशान हूँ,
इसी नक़श कूँ देक हैरान हूँ।

यदि नक़श ऐ दाय मग़म[5] क्यों किया,
मैं आक़िल अथी देक बेकम[6] क्यों किया।

---

१ पीछे २ हठ के साथ ३ ताकीद ४ भागी ५ दुःखी; अरबी शब्द मग़मूम से ६ मूर्ख।

मुँजे मेरी सूरत पै ली थी गुमाँ,
वले यो तो मुंज ते बी है ख़ूब जाँ।

के जिस जान का नकश इस धात है,
सो शह जान आपैं वो किस धात है।"

सो शह की सूरत टुक निभा[1] देखी दाय,
सो वो दाय भी मुद अपनी गँवाय।

कही "नई है तेरा गुना कुच धन,
के ऐसी च सूरत है यो मन हरन।

तिस ऊपर तूँ बी नार है बावली"
उछाल्या[2] मदन हुई है ऊतावली।

तूं चंचल चित्र नार इतनी सी है,
बड़ी छन्द भरी भोत फ़ितनी[3] सी है।

यो कैसा अहे इश्क़ जो तूँ करी,
भली है तूं शाबाश जो नईं डरी।

पिरत-पन्त में तूँ नवी आई है,
अझूँ[4] नेह के चरके नईं पाई है।

इश्क़बाज़ी धन कुछ नहना काम नईं,
नहनी है तूँ अजूँ तुजे फ़ाम नईं।

कची तूँ तुजे बुद कचीं आई है,
के कान्दाँ[5] के नकशाँ सूँ जीव लाई है।

ख़ुशी आद है दुश्मनी तूँ पछान,
दुखा कर जो बोले उसे दोस्त जान।

ग़र्ज़वन्द[6] कूँ यो बात कीं फ़ाम है,
दुखा बोलना दोस्त का काम है।

१ ग़ौर से २ उछाला ३ उत्पाती ४ अभी तक ५ दीवारें ६ याचक

तूँ इस नक़्श सूँ इश्क़ साज़ी अहै,
यो नेह नई है तफलाँ[1] की बाज़ी अहै।

इश्क़ क्या है कर के पछानी है तूँ,
गुड्याँ का मगर खेल जानी है तूँ।

हवस हैं नको जा हवस के दुंबाल,
भली वो जो अपसे रखी याँ संभाल।"

तर्ज़ इश्क़ का था सो थी पाई वो,
वले पन्द कूँ कहती थी दाई वो।

तलें तल हटकती थी उस माय कूँ,
के वाजिब अहै पन्द देना दाय कूँ।

तूँ मा बाप फ़रज़न्द कूँ बिच गोद धर,
भरोसा भोत करती है दाय पर।

वो धन जाने होर उस के मन का जेब[2],
कना था सो कइ वो पछें या नसीब।

थोड़ा भोत जानी है भी जान गये,
मेरी बात तूँ साच कर मान गये।

अँगे इश्क़ क्या है सो जानेगी तूँ,
बड़ी होयगी तो पछानेगी तूँ।

तूँ किस बाब कऊँवा[3] कर हुई है निकस[4],
के आधा अहै इश्क़ सारा हवस।

तूँ सूरत सते जीव क्या लाई है,
तूँ सूरत मने मानी क्या पाई है।

अगर मानी सूँ जीव तूँ लायगी,
तो सूरत थे फल भी तूँ कुच पायगी।

१ ढोंग २ भेद ३ कहलवा कर ४ निःशक्त।

इश्क़ मूरती काम, ना आय कुच,
लगा मानी सूँ जीव जो तूँ पाय कुच।

इश्क़ सूरती जाएगा जान तूँ,
इश्क़ मूरती खूब नईं मान तूँ।

सो धन दाय कूँ कई के "नईं तुज्ज काम,
अज़ल तो च था होनहार यो काम।

मुंजे मानी दिसती है मूरत भितर,
तो लुब्दी[1] हूं इस पाक मूरत उपर।

नज़िक[2] किस के कहने कूं नईं आय है,
अगर मा अगर बाप अगर भाय है।

जो मानी अयाँ[3] मुंज है सूरत मने,
बयाँ ना किया जाए वो किस कने।

अवल ते हुआ है मेरा हाल यूँ,
पड़ी की तूँ भी मेरे दुंबाल यूँ।

जो मैं मंगती दारू[4] सो देसी न कोई,
किसी का दरद बाँट लेसी न कोई।

दुनिया में जेता देखती हूँ जिसे,
अपस का अपस कूँ पड्या हर किसे।

यो दिल सोज़ी तेरी खुश आती नहीं,
दिवानी हूँ मैं पन्द भाती नहीं।

दिवानी दिवाने की पन्द दे नको,
रोऊँगा[5] कर बुरे बोल तूँ कैं[6] नको।

छुई जो लगी उस न झंझोलना,
यो दुख पर है दुंबल तेरा बोलना।

१ लुब्ध हुई २ समीप ३ प्रकट ४ दवा ५ ताना दे कर ६ कह।

के गुस्से सूँ मुंज पर झपटती है तूँ,
के जलते उपर तेल मटनी है तूँ।

अगर मैं तुजे कुच कही अपे सुंधर,
दिवानी हूँ इस का नको ऐब कर।

नको ऐब कर दिल में कुच रैब ते
दिवाना है काली[1] हरेक ऐब ते।

क्या अकल में अक्ल के लहूँ घूटना,
भला है दिवानी हो कर भूटना[2]।

दिवाना जो कोई हुए ज़माना पछान,
वो आक़िल है उस कूँ दिवाना न जान।

ग़रज़ ऐसी बाताँ सूँ क्या है तुजे,
नसीबाँ मने था सो अपड्या मुंजे।

न कोई इश्क़ कूँ ल्यानहारा अहै,
के यो इश्क़ अपै आनहारा अहै।

जहाँ इश्क़ है वां है हैरान सब,
अखल होर फ़हम सुद बुद जान सब।

न जासी[3] पिरत मुंज ते अब छूट कर,
के दिल ले गया है मेरा लूट कर।

यो फ़रयाद मैं किस कने जा करूँ?
न होना अथा होर हुआ क्या करूँ?

१ खाली २ झूठ बोलना ३ जाती।

## पुरसीदन मुश्तरी व ख़बर सूरत मुहम्मद कुली अज़ अतारद[1]

अतारद कूँ भेजी बुला नार वो,
दोनों बैठे मिल कर सो यक ठार वो।

कही "तूँ संवार्या महल साज़ सूँ,
लिख्या सूरताँ इस में भो नाज़ सूँ।

सिफ़त दूर ते तेरी सुनती थी ज्यूँ,
सो नज़दीक थे आज मैं देखी त्यूँ।

हुनरवन्द तूँ सच पछानी तुजे,
के मानी[2] थे तुज ज्यास्त मानी तुजे।

कहूँ क्या तेरा खूबी की बात मैं,
सराऊँ तुज ऐसे कूँ किस धात में।

सो धन बात भो धात इस सात कर,
के इस सात भो धात यो बात कर।

के तुज सात यक राज़ धरती हूँ मैं,
सो उस राज़ की बात करती हूँ मैं।"

सकी शह की सूरत उपर की नज़र,
कही "ए अतारद तूँ सुन कान धर।

किसी शाह अपनी यूँ इस नार कूँ,
चुमक खींच लेता है ज्यूँ सार कूँ।

न जानों के यो नक्श क्या सेहर है,
के हर दिल में इस नक्श का मेहर है।

दुनिया में तो कई सूरत इस धात नई,
तूँ जीव ते लिख्या के देख्या है कई।

---

१ मुश्तरी का अतारद से मुहम्मद कुली की शक्ल सूरत पूछना २ बग़दाद का प्रसिद्ध चित्रकार।

मेरा मन भुलाया यो मन हर सूरत,
लिया दिल दिया जीव यो दिलबर सूरत।

अजब राज़ है यो च पाया न जाय,
जो पाये तो मक़सूद कह्या न जाय।

बेता मैं रखूँ दिल में ना बोल कर,
कती हूँ तेरे पास अब खोल कर।

के यो भेद कर तूँ तुजे फ़ाम है,
के तुज सूँ अगे ती मुंजे काम है।"

अतारद कह्या दिल में इस धात ल्याय,
के संपड़ी है अब यो तो जाने न पाय।

बहुत सज सेती[1] आज यो काम हुआ,
अताल अन्त इस का मुंजे फ़ाम हुआ।

जो मक़सूद कूँ याँ लग आया हूँ मैं,
सो अलहम्दुलिल्ला[2] के पाया हूँ मैं।

सुनेगा अगर शह इस बात कूँ,
तो खुश होएगा मुंज पे भो धात सूँ।

खिताया खितर गुनवन्ता खुश लखन,
कह्या खोल सब मुश्तरी नार कन।

---

१ से २ सब तारीफ़ अल्ला की है।

## तारीफ़ करदन अतारद पेश मुश्तरी अज़ मुहम्मद कुली कुतुब[1]

"ब्राहिम कुतुबशाह है शह सुभान,
दखन तख़्त गह शह्र उस का मकान।

शहाँ नालबन्दी[2] देते डरते सब,
जंगल पकड़े हैं वो निकल धाते सब।

जुल्म ज्यास्ती थे मुलक पाक उस,
के मशरिक़ ते मग़रिब तलक धाक उस।

सटेगा बनी गाब[3] इस हाक ते,
छुप्या भुई भितर रुस्तम उस धाक ते।

जो उस डर न अछता समद दिल मने,
तो जग कूँ डुबाता वो यक तिल मने।

अगर हैबत उसका न धरता पवन,
उड़ा सट देता भुई कूँ तिनके नमन।

उसी अदल[4] ते गाल कर सब सरीर,
अगन काँपती होर लरज़ता है नीर।

मुहम्मद कुली फ़रज़न्द इस राज का,
के लायक़ है वो तख़्त होर ताज का।

तलासें[5] पेशानी सूँ पग सुन्दर्याँ*
दिवान्याँ हैं उस कियाँ सू हूर पर्याँ।

जुकुछ नूर शह मुख चन्दर में अहै,
न जिन ना परी ना बसर[6] में अहै।

---

१ अतारद का मुश्तरी के सम्मुख मुहम्मद कुली कुतुब की प्रशंसा २ कर देते हुए ३ गर्न
४ न्याय ५ खोज करें ६ आदमी।
* पाठान्तर : "यकस थे सो यक खूब है सुन्दर्याँ"

पर्यां शाह के इश्क़ का पा उमंग,
पड़े शह उपर शमा पर ज्यूँ पतंग।

जो अंगुली चिकल चख धरता अहै,
तो सुराख शह संग कूँ करता अहै।

लगा इश्क़ लाक्क स्त्रियाँ लाक धात,
दीवानियाँ हो फिरतयाँ हैं उसके संगात।

हरेक गोपिनी शह की ज्यूँ माह है,
के इस दौर में किशन वो शाह है।

अगर हूर जैसी अछे कोइ सुन्दर,
बला दूर होय शह के पावाँ उपर।

हुआ परगट उसका हुस्न याँ तलग,
के यूसुफ़ की ख़ूबी कूँ बिसर्या है जग।

जहाँ पाँव धर शाह चलता अहै,
वहाँ आवे ज़मज़म[1] उबलता अहै।

रहे जान महाजान शह भुजबल[2],
अछे छांव ज्यूं दौलत उस पाँव तल।

वो ऐसा है शह जान सुन ए सुन्दर,
•सगीं मा भुलेगी उसे देख कर।

सूरत उसकी इस धात अछे ख़ूब जब,
जो तूं देक उसे भूली तो क्या अजब?

१ मक्का में एक कुआ है जिसका पवित्र पानी जमजम कहलाता है। कहा जाता है कि इस्माल पैगम्बर की सौतेली माँ ने उन्हें जंगल में भेज दिया था। अरब के रेगिस्तान में वे अपनी माँ के साथ रहते थे। एक बार उन्हें बड़ी प्यास लगी। पानी कहीं न मिला तो इस्माल ने झुंझला कर धरती में पैर पटका, जिस के धक्के से वहीं पानी की एक नहर निकल पड़ी। यहीं कुँआ बना दिया गया है। मक्का से लौटनेवाले धार्मिक यात्री इस पवित्र पानी को लाते हैं २ भुजाओं का बल।

जो शह बाग़ में टुक तमाशे कूँ जायँ,
तो बिन रुत झाड़ाँ फलाँ बार ल्यायँ।

शहंशह के दीदार के नूर थे,
मुके झाड़ हरे होयँ भई सीर थे।

कह्या सब वले उन कह्या नई यो बात,
के आशिक़ है तेरा मुघड़ शह मुजात।

के मत सरचरे बात यो सून कर,
हुआ काम भी सिर ते होए तल उपर।

जो आजिज़ हो दिखलाए आशिक़ नयाज़,
तो माशूक़ करता है तेरांच नाज़।

के खूबाँ में आदत सो इस धात है,
छुपी नईं है मशहूर यो बात है।

मुलकखन चतरखन चंचल गुनवन्ती,
सो शह इश्क़ के मद सूँ हुई थी मती।

कही "क्या है तदबीर इसकी अताल,
के मुंज में तो अब रह्या नहीं कुच हाल।

दिखाया सूरत ज्यूँ तूँ तसवीर कर,
तो तू हीच कुच उसकी तदबीर कर।

मेरा हाल क्या है सो जाने तुहीं,
छुप्या राज़ दिल का पछाने तुहीं।

तुहीं मेरे ग़म का मो ग़मख़ार हो,
के मैं बेटी तूं बाप के ठार हो।

किसे बात यो बोलूँ मैं जाय कर,
के तदबीर मेरी करे आय कर।"

जो मिन्नत लगी करने भो धात सूँ,
अतारद क़बूल्या वो इस बात कूँ।

दिया आस इस नार कूँ पीव का,
के मरते कूँ तक़वा[1] देते जीव का। †

1. तसल्ली देना, सान्त्वना देना।

† पाठान्तर है :—"तेरा काम है सो क्या काम में,
नको डर करूँगा तेरा काम मैं।

## ग़ज़ल गुफ्तन मुश्तरी अज़ फिराक़ मुहम्मद कुली क़ुतुबशाह[1]

ताक़त नहीं दूरी की अब तूँ बेग आ मिल रे पिया,
तुज बिन मुंजे जीवना भोत होता है मुश्किल रे पिया।

खाना बिरह कीती हूँ मैं पानी अंझूँ[2] पीती हूँ मैं,
तुंज बिछड़ जीती हूँ मैं क्या सख्त है दिल रे पिया।

हरदम तूं याद आता मुंजे अब ऐश नईं भाता मुंज,
बिरहा यो संताता मुंजे तुज बाज तिल तिल रे पिया।

मुंज तन तपिश जाने तुम्हीं मुंज दार जीव लाने तुम्हीं,
मुंज दिल मँधर[3] खाने तुहीं कीता है मंज़िल रे पिया।

तूँ जीव मेरा मैं सो दिल तुज सात रहना क्यों न मिल,
दिन रात में मैं एक तिल नईं तुज ते ग़ाफ़िल रे पिया।

जिस यार को मैं मंगती हूँ वह यार कहाँ है?
सर सूँ सकी चल जाती वले दार कहाँ है?

दिल हात में थे छीन लेकर नहाट[4] गया है,
वो यार दग़ाबाज़ झोटे मार कहाँ है?

मुसताक़ी[5] के बाज़ार में मैं बेचती हूँ जीव,
दल्लाल किधर हौर ख़रीदार कहाँ है?

आशिक़ तो मुंज ऐसे सकी लाखाँ हैं व लेकिन,
माशूक़ सो इस दौर में उस सार कहाँ है?

दीदे मेरे नादीदे जो दीदार देखे शे,
मुंज सबर देव नहार वह दीदार कहाँ है?

१ मुहम्मद कुली क़ुतुबशाह के विरह में मुश्तरी का ग़ज़ल कहना २ आँसू ३ मन्दिर
४ भाग गये ५ आकांक्षा रखना।

## यादकरदन[1] मुश्तरी मुहम्मद कुली कुतुबशाह

लग्या है मेरा शह सूँ मोतीच दिल,
रह्या जाए ना मुंज ते अब एक तिल।

मिला दो मुंजे कोई मेरे शाह सूँ,
सूरज सरोक़द मुरंग माह कूँ।

ना मुंज बाग़ ख़ुश आए ना बोस्ताँ,
न मुंजे ख्वीश[2] भाते हैं ना दोस्ताँ।

१ याद करना २ आत्मीय

## हालत मुश्तरी दर फ़िराक़ मुहम्मद कुतुबशाह[1]

न मुख सूँ मुंजे नींद आती अहै,
न फुल सेजड़ी मुंज भाती अहै।

बिसाले हुए कैसे यो सीस तें,[2]
तपाती अहे रात मुंज दीसने।

कहाँ है वो शह निरमला नौजवान,
कहाँ है वो शह गुनवन्ता गुन निधान।

कहाँ है वो लालन मिठी चाल का,
कहाँ है वो साजन लंबे बाल का।

कहाँ वो चतम चंचला मन हरन?
कहाँ वो मुखड़ अचपला है सजन?

न मुंज दीस है सुख न मुंज रात,
न जानूँ के गुमता है शह किस संगात।

जुकोई नार उस कन है उस नार थे,
मुंजे इश्क़ आता है इस ठार तें।

हुए जल कुजल नैन दीदार बाज,
यकेली कधाँ लग रहूँ यार बाज।

रतन थे सो तन पर अँगारे हुए,
के मुख चाँद अंझू सो तारे हुए।

हरेक रुँवाँ मेरे तन पै ज्यूँ नाग है,
सुना था अवल सो अताल आग है।

दो बादाम थे उस चंचल नार के,
लगे दाने झरने सो अनार के।

---

मुहम्मद कुतुबशाह की चिन्ता में मुश्तरी की हालत।
पाठान्तर है :—"बिसाली हूँ कैसा यह दु:ख सीसते।"

कही शाह के तईं सुधन याद कर,
"दुखिया जीव मेरे कूँ टुक शाद कर।

मुंजे तेरे मिलने की ली आस है,
के तन मुंज कने जीव तुज पास है।

मेरा हाल क्या है सो ऐ शाह नेक,
तूँ इस जीव मेरे कूँ टुक पूछ देक।

छुड़ा मुंज बिरहे के तूं जंजाल थे,
तू ग़ाफिल नको अब तेरे हाल थे।

कियां है बिरह ज्यास्ती दाद दे,
परेशान है जीव दिल शाद दे।

के कोई दाद देसी न तुज बाज मुंज,
अजब काम आ कर पड्या आज मुंज।

रही हूं भोत डरते तुज आस कर,
मुंजे गिन तू ऐ शाह अपस दास कर।

मुंज ऐसियाँ तुजे लाक बाँदयां अहैं,
के तुज सात मिल कर वो नाँदयां अहैं।$

परियाँ होर हूराँ रहें तुज संगात,
तेरी नांदनुक[1] शाह अहें धात-धात।

हुआ क्या जो सेल्याँ हैं वो सब सते,
मुहब्बत में मैं ज्यास्त हूँ सब सते।

मुहब्बत में जो ज्यास्त सो ज्यास्त है,
कही बात मैं रास्त होर रास्त है।

निरासा बिरह मुँज सँताता अहै,
सो तपती कूँ फिर-फिर तपाता अहै।

१ नान्द=प्यार से पालना। नुक=थोड़ा सा, जरा सा।
$ पाठान्तर :—"के खिदमत में तुझ नियत आतियां अहैं।"

खुदा इस बिरह का करे घर खराब,
के नावक मुंजे आज देता अज़ाब।

जो सँपड़े बिरह मेरे दावाँ तले,
रगड़ कर मट्टी देदे पावाँ तले।

अगर वस्ल टुक आके संबालता,
तो बिरहा मुंजे क्या सबब जालता।

बड़ा बीकड़ा इस में खूबाई नईं,
मुंजे मारने आर इसे आई नईं।

गरब[1] की[2] नहीं गल पड्या माई का?
नफ़ा क्या है जग में बिरहाई का।

के मा इस की ना जनती बाट की?
दुखों छाती यो मेरी सब फाट की!

मेरे पास मेरा कुतुबशाह नईं,
मेरे हाल ते कोई आगाह नईं।

किधर देखूँ शह मैं किधर देखूं तुज?
नहीं मुंज तूं दिसता जिधर देखूं तुज।

न वादे की मुंज आस ना दरस है,
हरेक दीस तुज बाज सौ बरस है।

## रुबाई ख्वान्दन[3] मुश्तरी

"तुज याद बिना होर मुंजे काम नहीं,
निस[4] जागते जाती है दिन आराम नहीं

मैं तो तुजे मंगती अछिग्व जीव बले,
तूँ क्यों मुंजे मंगता सो कुच्छ फ़ाम नहीं

१ गर्भ २ क्यों ३ पढ़ना ४ रात।

## नाम नोशतीन अतारद ब कुतुबशाह[1]

अतारद दबीर[2] होके तक़दीर सूँ,
लिख्या नामा मज़मून गंभीर सूँ।

सो भेज्या उने काग़ज़ इस शाह पास,
के बर आई है तुज उमीद व आस।

अगर धन उपर है तेरा शाह जी,
तो वाँ खान खा होर याँ पानी पी।

के जीवना च तुज आज़ मुश्किल उसे,
गुज़रता है चख हो के हर तिल उसे।

नको बार ला बेग तूँ बेग आ,
के वो नार हुई है तेरी मुबतला।

तेरे ताईं हुई है यो बदनाम याँ,
के कुच करते कुछ हो गया काम याँ।

ज़िकर लाई है दिल में तुज ध्यान धर,
कुतुब शाह कुतुब शाह कुतुब शाह कर।

तेरे विस्ल का मैं जो देता न आस,
तो यक तिल में मरती मुधन भर उसास।

मेरे पास अहवाल[3] सब की अहै,
इसी आस सूँ चुप कर रही अहै।

यो दिल सोज़ नामे कूँ लिखते बराँ,
सफ़े पर निकल पड़े थे अच्छराँ।

न लिक सक क़लम टुक ते घटता अथा,
रुखें[4] पर क़लम काली सटता अथा।

---

१ अतारद का कुतुबशाह के नाम (पत्र) लिखना २ कातिब, लिखनेवाला ३ हाल का बहुवचन
४ रुक्का कागज़।

मुई इश्क़ भेद्या है इस माह में,
के सौ-सा खुसरो अहै इक आह में।

निपट तुज सूँ लुब्दाई अहै नार वो,
तेरा देखने मंगती दीदार वो।

नहीं एक तिल तुज बिन आराम उसे,
नहीं काम तुज याद बिन काम उसे।

शहा तूँ मुधन कूँ तो मंगता है ज्यास्त,
वले वो तुजे मंगती तुज ते बी ज्यास्त।

न होय काम इस काम पर होय बिन,
के मा दूद देती नहीं रोए बिन।

तूँ अब......मक़सूद होय बोल ते,
बरग[1] फल सट बाव के तूल[2] ते।

बरग बार[3] हे होर जहाँ बाद[4] नई,
तुरत फल लेने का वहाँ दाद नई।

जो फल लेने मंगता है हंगाम पर,
तो बेगी नको कर हरेक काम पर।

मिलेगी तुजे वो चंचल सुन्दरी,
नज़र आ कर अब शह मेरी चाकरी।

दिवानी तेरी मुशतरी नार है,
सो शाबाश कहने की मुँज ठार है।

क्या काम यो मैं यहाँ में संचार[5],
मेरे बख़्त अब शाह तेरी नज़र।

तुजे बात यो शह कह्या जाय ना,
वले बाज़ कये भी रह्या जाय ना।

कहे तो न होना सो हुए काम सब,
कहे तो छुप्या भेद हुए फ़ाम सब।

पत्ता २ बार से ३ फल ४ हवा ५ संचार कर।

## बशारत[1] याफतन[2] शाह व रुख़सत शुदन[3] अज़ महताब *

पड़्या शाह नामा हो ख़ुश चाव सूँ,
अँखियाँ पर रख्या लेके भो भाव सूँ।

कह्या काम यकायक यूँ क्यों हुआ,
जो अक्ल अथा वो सो अब यों हुआ।

हरेक मुश्किल आसान करता है वो,
के क़ादिर है क़ुदरत जो धरता है वो।

किया शुक्र सजदे कूँ कर तार का,
के तूँ दिल भुलाया है इस नार का।

जो लुब्धी है वो नार यूँ मुंज उपर,
सो मैं क्या सकूँगा तेरा शुक्र कर।

जो साबित क़दम आशिक़ है नार का,
ख़ुशी होय ग़म इस कूँ संसार का।

के जो बाज़ आशिक़ जु कोई पाक है,
मुराद उसके पावों तले ख़ाक है।

बख़्त बख़्तवर आज ग़ालिब हुआ,
के मतलूब जो था सो तालिब हुआ।

कह्या शाह उस नार महताब कूँ,
के "जाने कूँ दे अब रज़ा मुंज कूँ।

रख्या तुज सूँ ली दीस यक टार मिल,
सो ज्यूँ यार सेती अछे यार मिल।

जो इस नार के ताईं आता न मैं,
तुजे छोड़ कर याँ ते जाता न मैं।

१ ख़ुश ख़बरी २ पाना ३ होना।
* शाह का ख़ुशख़बरी पाना और महताब के पास से रुख़सत होना।

तेरा प्यार मुंज पर अहै ऐ परी,
के मुंज सूँ तूँ ली आदमीत करी।

अजब तुज ते देख्या हूँ खूबाई मैं,
न हो सक सूँ तेरा सो उतराई मैं।

अतारद बुलाया मुंज बेग अताल,
के पंत देखती तुज सुधन हस्त चाल।

बशारत[1] नवी आज पाया हूँ मैं,
इसी काम कूँ याँ लग आया हूँ मैं।

रज़ा दे तूँ खुशनद हो कर मुंजे,
के तूँ है परी है तेरा डर मुंजे।

दखन ते जो इस ठार अंपड्या हूँ मैं,
तेरे हात में आके सँपड्या हूँ मैं।"

कही शह "नको बोल यो बात तूँ,
पुचान्या है आखिर मुंज इस धात तूँ।

अती वे अदब कर नको जान मुंज,
के मैं दास तेरा हूँ तूँ मान मुंज।

मेरी बात सच जान शह तूँ पत्याय,
के खूबाँ ते हरगिज़ बुराई न आय।

नहीं खूबी उस जो बुराई करे,
कुवां खोदे पर काज अपै डूब मरे।

भले होर बुरे में फरक़ है शहा,
बुरा खूब होर खूब ना हुए बुरा।

जो कम ज़ात उस ते वफ़ा नईं होता,
असीलां[2] ते हरगिज़ खता नईं होता।

१ सुसमाचार २ शीलवान।

बुराई के या खूबी यो वो च है,
असील होर कमज़ात में यो च है।

मना करने नईं तुज कूं सकती हूं मैं,
जो रहेगा तो मिन्नत सूं रकती हूं मैं।

अपी हो तुजे क्यों कहूं मैं के जा,
अगर जायगा शह तो तेरा रज़ा।"

कहे शह क "जाना मुंज हे ज़रूर,
जो ना जाऊं तो काम पड़ना है दूर।

मुंजे एक तिल उस बिन आराम नईं,
रहने का यहां अब मेरा काम नईं।"

मुलक्खन सकी चंचली माहताब,
सो दी शाह कूं यो फिर आकर जवाब।

"संगात आती अपड़ाती शह तुज घर,
जो अचता न मा-बाप का मुंज कूं डर।

तेरी बाँदी हूं मैं मुंजे ना बिसार,
तूं जाता है दे कुच मुंजे यादगार।"

कह्या शह के "मैं ली गुम्या तुज संग,
तू क्या मंगती है सो मेरे पास मंग।"

कही खुश हो हंस कर के हंसमुक परी,
"तेरे हात की शाह अंगुश्तरी।"

अंगूठी निशाँ उस दिए शाह ने,
रखी जीव कह्‌ उस कूं उस माह ने।

जो शह कह के "दे तूं बी कुच मुंज निशान,
के तुज याद करता अछूं ऐ सुजान।

जेता खुश अथा आशनाई ते मैं,
उता नाखुश हूं इस जुदाई ते मैं।

कहाँ ते के यो आशनाई हुई,
के इस धात आखर जुदाई हुई।

रख्या नईं है किस यक जिन्स आसमाँ,
के अव्वल बहार होर आख़िर ख़िज़ाँ।

मिसल जग में मशहूर यो जम अहै,
के हरेक ख़ुशी के पछें ग़म अहै।

बिछोहा अछे जाँ अछे मिल वो यार,
के मस्ती जहाँ है वहाँ है खुमार।

यकस का यकस कूँ जो लाग्या परान,
तो अछता यकस का यकस कन निशान।

यकस की निशानी कूँ यक देक कर,
करे याद यकस कूँ यक ए सुन्दर।

निशानी की तू कुछ हाज़त नहीं,
वले रस्म ज़ाहर नहीं यूँ कहीं।

न बिसरे कधीं यार के तईं वो यार,
मुहब्बत अछे जिस कने यादगार।

पिरत का रविश तो अहै इस वज़ा,
तू देती है या नईं देती क्या रज़ा।

## जुदाई अज़ महताब

कही शह मेरा जियू तेरा अहै,
के जीव ते पियारा तूँ मेरा अहै।

सकी दी सका आपने हात का,
के तासीर था इस में ली घात का।

जो सिक्का रखे वो अपस पास जम,
न देखे कधीं दुख दरद होर ग़म।

सदा मुल्क होर माल सूँ शाद अछै,
दुनियाँ के बलायाँ ते आज़ाद अछै।

जो देखी के शह है बिथर[1] लश्करी,
तुरंग बाद पा[2] पेश कश की परी।

सूरज ज्यूँ झमकता अथा मुम[3] उसे,
के किरनाँ से बालाँ के थी दुम उसे।

हरेक नाल उसका सो ज्यूँ परस था,
के अपी मुलक्खन तुरंग सरस था।

सो उस अस्व[4] रहवाल ख़ुश चाल कूँ,
सितारे पिरोए थे हर बाल कूँ।

शहंशाह का दिल भोत जमा था,
के वे बाट में गत कूँ शमा था।

तुरंग ख़ूब ख़ुश शकल वो असल है,
के हैदर के दुलदुल[4] केरा नसल है।

किस्सा यूँ हुआ जो रज़ा शाह मंग,
बिदा उस परी सूँ किए छोड़ संग।

---

१ बड़ा २ हवा की तरह तेज़ ३ उदाहरण ४ घोड़ा, हज़रत अली का घोड़ा।

### रुबाई

दुनिया के सो लोगाँ में वफा दिसता नईं,
धुंड देखी जिता बाज जफ़ा दिसता नईं।

बे महर बनी[1] आदम है इस सूँ सकी,
दिल बाँदने में कुच नफ़ा दिसता नईं।

१ जाति।

## खाना शुदन शह ब सूबे मुशतरी

हुए लोग फिर मुस्तैद टार-टार,
सो यक टार मिल आए सब बाँद भार।

के शह जाते इस मह की यारी के तईं,
तुरंग बाद पा ल्याई सारी के तईं।

हुआ उस तुरंग के उपर शह सवार,
के शह फूल होर रंग बाद बहार।

दिसे शाह यूँ बाद पा[1] के उपर,
मगर हंस चड्या है हुमा[2] के उपर।

चले शह बंगाले कधन चाव सूँ,
सो खुशहाल हँसने भो भाव सूँ।

लिए ग्यान मिरीख[3] कों शह संगात,
के आशिक़ अथे वो दोनों एक धात।

दोनो इश्क़ की बाट जाते अथे,
यकसका सो वक्त यक गुमाते अथे।

जो उस शहर के शाह नज़दीक आय,
खबर इस अतारद कने यूँ बताय।

के आया हूँ मैं अपने लोगाँ सूँ याँ,
मुँजे तूँ कह्या था सो वो क़ौल काँ।

गया सब फ़िराक़ अब के आया विसाल,
बुला वेग इन इन कूँ तूँ मुंज अनाल।

जो शातीर[4] शह का दिया था खबर,
अतारद सरासर सुन्या कान धर।

१ तेज (घोड़े पर) २ एक पक्षी; जिस पर इस पक्षी की छाया पड़ती है वह सौभाग्यशाली और धनी हो जाता है ३ मंगल नक्षत्र, यहाँ नाम है ४ संवाद दाता।

गया दौड़ता मुश्तरी शाह कन,
के "आया है याँ अब कुतुबशाह सजन।

तेरा मक़सद ऐ नार हासिल हुआ,
पियारा पिया तुज सूँ वासिल हुआ।

के मिन्नत तूँ करती थी जिस काम कूँ,
हुआ है वो सब काम अब जान तूँ।

नको बोल रुक मुंज उपर औ सुघर,
कह्या हूँ तुजे मैं सभी खोल कर।"

कही नार उस कूँ "के शह काँ अहै,
निशानी मुंजे दे तूँ वो जाँ अहै।

के मैं सर सूँ चल वाँ तलक जाऊँगी,
अपी मैं यहाँ शाह कूँ ल्याऊँगी।

## आवर्दन[1] मुश्तरी मुहम्मद कुली राबा महल[2]

सुलक्खन सुघड़ चंचल अवतार नार,
सँवारी महल आपना ठार-ठार।

उतम ज़ात पद्मन पर्यां हूर सॉं,
चंचल अचपल्याँ शोख़ मनहर सकियाँ।

सुराही प्याले दे हातॉं में मस्त,
खडियाँ की करन चाकरी धन दुरस्त।

सरासर घर अपना सकी सुन्दरी,
भोत धात दे ज़ेब जन्नत करी।

सँवारी सुधन पंत भू धात सूँ,
जो ज़र बफ़्त[3] अतलस[4] व क़िमख़ाब[5] सूँ।

चड़ावा सुरग[6] पर किया वो महल,
के हूराँ सो वाँ मोहनियाँ है चंचल।

सो कूच्याँ[7] मने शहर के धन दो धीर,
बिछाइ मश्क जाफ़राँ[8] होर अबीर।

सिंगारी नगर यूँ सुन्दर गुन भरी,
के असमान ते ख़ूब हुई धर तरी।

छजे होर महल आँगन होर सब नगर,
हरेक ठार वो नार सिंगार कर।

संगात अपने अपनियाँ ले महरम[9] सकियाँ,
के दम नमने थियाँ सो वो हमदम सकियाँ।

सहेलियाँ सूँ सहती अथी यूँ सुधन,
के ज्यूँ सरो अछे एक बिच फूल बन।

---

१ लाना २ मुश्तरी का मुहम्मद कुली को राबा महल में लाना ३, ४, ५ वस्त्रों के प्रकार ६ स्वर्ग ७ गलियाँ ८ केसर ९ भावों का जाननेवाला।

सखियाँ सब सुधन सात हम दस्त थियाँ,
यकत ते सो यक उस वक्त मस्त थियाँ।

मंगाई तुरंग नाँवें शबरंग उस,
के भाया अथा उसके तईं संग उस।

तुरंग तेज़ शबरंग कूँ ली चाब है,
के मा आग होर बाप सो बाव है।

हुई सार शबरंग तुरंग पर वों नार,
धुवे में अछे ज्यूँ झमकता अँगार।

पदम जगमगे जोत सूँ नाग पर,
के ताऊस बैठ्या मगर काग पर।

सो शबरंग तुरंग पर अछे नार ज्यूँ,
के मशाल दिपे रात अँधारी में ज्यूँ।

कुतुब सूँ मिलन मुश्तरी धन चली,
अतारद चितारे कूँ संगात ली।

येता शह सूँ मिलने कूँ खुशहाल थी,
के खुश्याँ सूँ अपस में माती न थी।

जो शह कूँ खबर हुई के आती है धन,
सुलक्खन सखी छन्द भरी मन हरन।

इदर ते शहंशा उधर ते वो नार,
दोनों साद[1] वकत आ मिले एक ठार।

गले लाय शह यूँ सुधन कूँ चिकल[2],
के न्हाख्या बिरह जल हो जग पंत निकल।

मुहम्मद कुतुब शाह होर वो सुन्दर,
हुए खुश एकस कूँ यक देख कर।

१ शुभ २ दबा कर।

सजन के उपर एक मन सूँ वो नार,
लाल हीरे मानिक मोती निसार।

जो शह पर रतन धन लगी वारने,
सो कुतसियाँ[1] लगे बहिश्त सिंगारने।

मिला हात में हात धन कन गंभीर,
चली शाह कूँ ले कर अपने मंधीर।

नवल शाह कूँ अपने घर में जो ल्याई,
तमाशा महल का चंचल सब दिखाई।

## ग़ज़ल

प्यारा सेज पर आया प्यारा जीव ते प्यारा हो,
विरह मुंज दिल में ते निकल्या सो जीव उसास बारा हो।

बिरह की आग ते तन पर हरेक याकूत का दाना,
लग्या होले[2] ते थण्डा मुंज रह्या था जो अंगारा हो।

सकी मुख शह समद म्याने जो मनके में तरे थे,
अलक गल हात में ले कर परता तल इस में चारा हो।

अँख्याँ दो होर पलकाँ तो च दुश्मनाँ हैं सब,
इधर ऐसी[3] असर शह का वहाँ अचता हमारा हो।

सूरज खुश रंग सीस बी है किरन ज्यूँ मो क़लम ले कर,
सूरत शह की लिखन आया अतारद अब चितारा हो।

भवाँ दो ज्यूँ रहाँ होर अलक की कुंडलाँ जुज़माँ[4],
तिलक आयत है तिल मुतलक दिसे जय्यद[5] प्यारा हो।

सितारा बख़्त का मारा सूरज के बुर्ज में आया,
के झमक्या आज मेरे घर कुतुबशह चाँद सारा हो।

---

१ फरिश्ते हूर आदि २ ओला ३ एक पैग़म्बर, जिन्हें रुहे अल्ला भी कहते हैं ४ मजमून
५ नेक, मनमोहक।

## मुलाक़ात आशिक़ व माशूक़

चंचल कुतुब शह होर अन्नपल सुंधर,
दोनों बैठे मिल कर सो यक तख़्त पर।

रुकन[1] चार पाए हैं तख़्त आसमान,
के चन्द मुश्तरी है कुतुबशह सो भान।

यकस का लगे पूछने एक हाल,
यकस कूँ दिए यक जवाब होर सवाल।

सो बाताँ अवल कियाँ सभी बोल कर,
कहे हाल अपना दोनो खोल कर।

पिरत काज की कार साज़ी किए,
अपस में अपै हात बाज़ी किए।

सुराही नुक़ल होर प्याला मंगाय,
अपी साक़ी हो शह कूँ धन मय पिलाय।

शराब उस भोन तुन्द होर तेज़ था,
अजब आब वो आतिश आमेज़[2] था।

फरिश्ताँ अगर आए आकास ते,
पड़े भुंई उपर मस्त हो बास ते।

जो यक बुन्द पीवे कोइ तो सीने कूँ लग,
उठे आग तलव्याँ ले तारुख़ तलग।

जो शह ताईं धन लाई मद लाल कर,
के पानी करीं आग कूँ गाल कर।

जो क़तरा सटे आग में एक कोय,
तो सिर पाँव लग आग जल खाक होय।

१ स्तम्भ २ मिलना।

ख़सालत अजब गर्म धरते हैं शह,
के ऐसा शराब हज़म करते हैं शह।

के मैख़ार[1] पुख़ता है शह ख़ाम नईं,
मद ऐसा पिने दुसरे का काम नईं।

सिफ़त यो जो शह बेख़बर नईं होता,
जेता पीते बी कुच असर नईं होता।

दुरुस्त अछ हरेक बात गुफ़्तार में,
ख़ता खाए ना कार होर बार में।

प्यारी वो हो एक यूँ पीव सूँ,
के ज्यूँ दूद मिल कर अछे घीव[2] सूँ।

यक आरुस (?) होर एक सो शो अहै,
के धन शीरीं होर शाह ख़ुसरो अहैं।

कुतुब शह सुधन यूँ वो ज़ेबा अछे,
के युसुफ़ सूँ मिल ज्यूँ जुलेखा अछे।

दिसे यूँ अधर बिच दसन झमकने,
के गौहर है गुन्ने के हुक्के मने।

सुधन के दसन समजो होने कूं आए,
खिज़ल हो रतन पानी मूँ का गंवाए।

अंचल स्याम तल यूँ झमकते गुहर,
के शबरांत है आज धन के उपर।

दिसें तन रतन धन के मुख नूर अंग,
के रोशन किए हैं दीवे सूर अंग।

सुधन के दो कुच पा गुहर छाए हैं,
के पहराँ पे तारे उपर आए हैं।

१ शराबी २ घी।

सुधन नाक मिल यूँ है मुकडे के संग,
के पकड़्या है मूँ में बिचू कूँ भुवंग।

सो मुकडे पे याकूत जग देक के,
के अक़रब[1] केरे बुर्ज़ मिरीख़[2] है।

दिसें मांग मोत्याँ की बिच सीर में,
के दिसते हैं तारे मगर नीर में।

चंचल नैन यो धन के नईं टारते,
के शातीर शह के तुलंग मारते।

सितारे महेंदी के हाताँ मने,
के गुल लाल रहे झड़के पाताँ मने।

येता कुछ धन शक धरती सुन्दर,
के बाताँ निकलत्याँ हैं टुकडे लेकर।

बिखर रे हैं कुन्तल पेशानी उपर,
के बादल पड़े टूट पानी उपर।

दिसें लाल लालक सूँधन की अँख्याँ,
के सीप्याँ अहें जानो शिंगारफ किय़ाँ।

अलक मिल धन गाल मक़बूल सूँ
के या नाग लुब्दया अहै फूल सूँ।

धड़ी सूँ दिसे यूँ दसन बात में,
के बिजलियाँ पडियाँ जाके ज़ल्मात में।

समद ते सभीं रूप रंग जल है ज्यूँ,
कँवल मुख की गरदन सो दंडल है ज्यूँ।

अँखियाँ पर भुँवाँ छन्द सूँ छाए हैं,
के तुरकाँ सिराँ पर तुर्रे लाए हैं।

१ वृश्चिक नक्षत्र २ एक ग्रह।

इधर हार फल फांक की भार वो, (?)
के नाज़ुक भुली[1] थी अहै नार वो।

अंगूठी में मावे कमर नार की,
नहीं कई दिसे जग में इस सार की।

के जिस का जो रोमावली नाँवँ है,
सुधन सिर की चोटी की वो छाँवँ है।

रही चोटी यूँ पीट पर छब सूँ आ,
पटी पर अछे ज्यूँ अलिफ सुल्स[2] का।

जवाहर जो पैने था धन तन मने,
जो अक्स उस सितारे हुए घन मने।

मुहब्बत सूँ शह मस्त हो दीदार के,
अधर चुँकते थे तिल तिल उस नार के।

सँपड़ कर सकी शाह की बात में,
अँपड़ देती थी जोबनाँ हात में।

नहवाँ लाते थे शह उसे टार टार,
उलुस पड़ती थी हँस वो हँसमुख नार।

कधें गुड़[3] लेवे शाह वो माह कूँ
कधें माह वो गुड़ लेवे शाह कूँ।

मिठाई सूँ लब चार यूँ मिल अथे,
के हरगिज़ यकायक छुटते न थे।

सो शह धन ते खुशहाल उस वक्त थे,
के जोबन वो अलमास[4] थे सख्त थे।

अपस मे अपे बोसा कारी किए,
दोनों सूँ, सपत घाल यारी किए।

१ मोली २ उर्दू की एक प्रकार की लिखावट ३ चुम्बन ४ एक रत्न।

के दो में ते तिसरे को ना ठार होय,
जो तिसरा वहाँ जाये तो ख़ार होय।

अजब कुछ ख़ुशी होर अनन्द हज़[1] है वाँ,
सो आशिक़ व माशूक़ मिलते हैं जाँ।

हुए शाह जब मस्त अपी होर धन
किए मन उसें कुच का कुछ करन।

दोनों सर ख़ुश हो कर हुए बेख़बर,
उलू की ख़बर इस वज़ा सून कर।

अतारद मना आ किया शाह कूँ,
भोत घात सूँ पन्द[2] दिया शाह कूँ।

के "शह इश्क़ बाज़ी तूँ कर इस वसूल,
के तुज ते ख़ुदा ख़ुश अछे होर रसूल।

तेरा माल है तूँ उतावला न कर,
झुटे इतने कूँ अपसें बावल न कर।

लेजा उस कूँ फुसला के तूँ अपने घर,
बुला क़ाज़ी कूँ होर वहाँ अक़्द[3] कर।

जो टुक ख़ुश लगेगा तेरा घर उसें,
पछें क्या तूँ मँगता है सो कर उसे।"

कहे शह अतारद कूँ "शाबाश तुज,
के इस मस्ती में तूँ दिया पंद मुंज§।"

जो समजा के शह कूँ कह्या घात घात,
सुन्या शाह आख़िर अतारद की बात।

१ स्वाद २ नसीहत ३ निश्चय।
§ पाठान्तर है :—"तूँ दिया याद मुंज"

### ग़ज़ल

तुज मुख के दरस का यो सूरज सो दरसनी है,
तुज नूर झमकने ते सब जग में रोशनी है।

ज़र तार तार के रूच पर गाल पर सुहाते,
या चांद के किनारे ख़ुश रंग चंदनी है।

दिल आशिक़ाँ के तिलतिल की की बारजत्ती (?) नई
क्या शोख़ चुलबली तूँ ग़म्ज्याँ[1] भरीं हनी है।

काजल कज़ल सो भर के पलकाँ सो सिहर मंतर,
ग़मज़ा सो नैन तेरा सो का सो तिस अनी है।

बिरहे के दुख कटक में यूँ नेट कर रह्या मैं,
तू अपने आशिक़ाँ में सुधन मुंजे गिनी है।

१ नख़रे।

## गुफ्तन मिरीख खाँ हाल खुद रा[1] पेश मुहम्मद कुली[2]

शहंशा कूँ बोल्या वो मिरीख खान,
के "तूँ जीव जब लग है चन्द चर्ख भान।

तेरा यार परसन हुआ शाह तुझ,
के तूँ सूर है होर मिल्या माह तुझ।

सदा मिल अछ इस धन सूँ दिनरात तूँ,
सदा ऐश कर शाह इस धात तूँ।

तुजे मुक आनन्द दायम अछो,
तेरा राज दुनिया में क़ायम अछो।

वले कुछ मेरे हाल पर रहम कर,
के तेरा हूँ मैं तूँ नको मुंज बिसर।

गुलाम हो के अचता हूँ मैं तेरे पास,
किया हूँ भोत तेरा उमीद आस।

जो ल्याया है सात अपने इस ठार मुंझ,
करम कर मिला तूँ मेरा यार मुंझ।

दो बिछड़े जो याराँ मिले एक ठार,
मिलनहार[3] कूँ शह सवाब है अपार।

### रुबाई

परदेसी हूँ परदेस में है ठार मुंज,
परदेसी हो रहना अहै ना चार मुंजे।

ताक़त अरे सब्र तूँ भी कुछ उपर्या नई,
अब को मिलेगा कोव मेरा यार मुंजे।

---

१ को २ मिरीख का अपना हाल कहना, और मुहम्मद कुली के सामने अपने को पेश करना ३ मिलानेवाले को।

पड्या यो रुबाई भोत सोज़ सूँ,
कह्या "रूसो शमा दिल अफ़रोज़ सूँ।

के शाहा में सब तूँ शहंशाह है,
मेरे हाल ते शह तूँ आगाह है।

भलाई ले निपट इश्क की बात सूँ",
लग्या मिन्नताँ करने भो घात सूँ।

कहे शह के "नज़दीक है काम अताल,
के तुज सूँ मिले धन चन्दर जग उजाल।

मुंजे है तेरा हाल मालूम सब,
जो मिन्नत करे तूँ तो नई कुछ अजब।

के जग में चली है यो बात हर कहीं,
गर्ज़बन्द कूँ अक्ल अछ्ती नहीं।

उतावल तूँ करता अहे क्या सबब,
सबूरी सेती काम होता है सब।

हर यक रंज पिछें राहत है सच तूँ जान,
हर यक दुख पछें सुख है मिरीख खान!

चमन म्याने आ कर चुन्या फूल किन,
सो कांटे केरा ज़खम टुक खाए बिन।

बहार आखिर है होर अवल सो दे,
जो ग़म देखे शादी उस अलबत्ता है।

सबूरी ते खूबी है आखिर न डर,
के लोगाँ कते हैं सबूरी सफ़र।

## गुफ्तन अज़ मिर्रीख़ ख़ाँ हाल कुतुबशाह पेश मुश्तरी[1]

कुतुब मुश्तरी कूँ कह्या सर बसर,
सो मिर्रीख़ का हाल सब खोल कर।

"मैं आशिक़ हूँ ज्यूँ तुझ नादान का,
अहै त्यूँ यो आशिक़ तेरी भान का।

तूँ ज़ुहरा सूँ कर राजबट[2] मिल कर,
मुराद इस बिचारे की हासील कर।

के आशिक़ का क़दर जाने है तूँ,
दर्द इश्क़ का सब पछाने है तूँ।

मुलक्खन सपून है असद ख़ान का,
यो मिर्रीख़ गुनवन्त मो मान का।

जो ज़ुहरा कूँ आशिक़ हो आता अथा,
ग़ल्ती कुच्छ दुंबाल ल्याता अथा।

क़ज़ा[3] आ नंगा कर उसे लुच्च[4] किया,
यो कुछ था उसे कुच्च का कुच्च किया।

पड़्या था बिरत पंत के घात में,
रह्या था सपड़ देव के हात में।

इसे बाट में आने पाया हूँ मैं,
वहाँ ते छुड़ायो कूँ लाया हूँ मैं।

मेरे सात यक दिल सूँ आया है यो,
भोत आस उम्मीद लाया है यो।"

कही शाह कूँ माह सी वो सुन्दर,
के "यो काम है सहल कुछ ग़म न कर।

१ कुतुबशाह का मिर्रीख़ ख़ाँ का हाल मुश्तरी को सुनाना २ शासन ३ हुकुम से ४ नंगा किया।

जो अव्वल ते मालूम अछता यो काम,
तो अब लग यो सब काम होता तमाम !

येती मेरी मिन्नत की[1] करता है तूँ ?
यदि देती हूँ भ्याव[2] कर दोनो कूँ।

जुकुच तूँ कहेगा सो कह मुंज कने,
के हाजत नहीं कुछ इसे पूछने।

अहै हुक्म इस का मेरे हात में,
के चलती है ज़ुहरा मेरी बात में।

यो काम इस सबब शाह करती जो हूँ,
के मंगता है मिर्रीख़ कूँ भोत तूँ।

१ क्यों २ विवाह।

## मशवरत करदन मुहम्मद कुली कुतुबशाह बा मुश्तरी[1]

शहंशा कहे "ऐ सुलक्खन सुंधर,
चल आ जाएँ मिल कर दक्खन के इधर।

दक्खन सा नहीं ठार संसार में,
पंच फ़ाज़िलाँ का है इस ठार में।

दक्खन है नगीना अंगूठी है जग,
अंगूठी कूँ हुरमत[2] नगीना है लग।

दक्खन मुल्क कूं धन अजब साज है,
के सब मुल्क सर होर दक्खन ताज है।

दक्खन कूँ जो देखेगी ए नार तूँ,
न करसी कधीं याद बंगाले कूँ।

दक्खन मुल्क भोतांच खासा अहै,
तिलंगाना इस का खुलासा अहै।

कता हूं होर यक बात भी मैं तुजे,
के वाजब अहै बोलना वो मुंजे।

नको जान इस कूँ हँसा खेल तूँ,
मेरी बात सुन धन नको ठेल तूँ।

के मिरीख़ कूँ अब बड़ाई देवें,
सो इस शहर की पादशाही देवें।

पछे भ्याव ज़हरा सूं इसका करें,
दोनों कूँ मिलायां अनन्द सूँ धरें।

के मिरीख़ हमना ते खुशहाल अछे,
न यूँ त्यूँ के दिल जाँ थीं खुशहाल अछे।

अगर आनं मंगती है तूँ मेरे सात,
तो यो शहर सट होर सुन मेरी बात।

---

१. मुश्तरी से, मुहम्मद कुली का परामश करना २ प्रतिष्ठा।

यूँ क्या है मुल्क जो तुजे भावता,
यूँ क्या है जो खातिर तेरी आवता।

तुजे मैं वहाँ देवूँगा हाँ ऐ नार,*
सो उस धात के शहरां हज़ारों हज़ार।

दखन मुल्क वो कुछ अजब ठाँवँ है,
दखन में सो ऐसा हर यक गाँवँ है।

कही शाह खूबी तुमारी खुशी,
तुमारी खुशी सो हमारी खुशी।

तूँ मुँज सात इस धात चाले न कर,
मुल्क वारूँ लक तेरी यक बात पर।

केता माल होर मुल्क दिखलाएगा,
मुल्क माल ते क्या मुँजे आएगा।

ग़र्ज़ है मेरा तुज सूँ ऐ शाह फहीम[1],
न कर ऐसी बातों सूँ तूँ दिल दोनीम[2]।

तुहीं मुँज मुल्क होर तुहीं माल है,
तुहीं मुँज लालन तुहीं लाल है।

शहाँ तब्रा नाज़ुक धरते अहैं,
के माशूक़ पर नाज़ करते अहैं।

मैं राज़ी हूँ इस काम कूँ जीव सूँ,
जुकुच्च करते मँगता सो कर शाह तूँ।

के फाज़िल तुज ऐसा कहीं कोई नईं,
तेरी बात ते नईं हूँ खेरीर नईं।

---

१ जानकारी रखनेवाला। २ टुकड़े।

* पाठान्तर है:—"जकुच तूँ मंगे वों सो देवूंगा ऐ नार।"

† "सो उस धात शहरां" ... ...

## दादन मुहम्मद कुली कुतुबशाह मिर्रीख खाँ रा पादशाही बंगाला[1]

खबर ले अंबर पर के अख़्तर सतें,
घड़ी साद शह देक महतर सतें।

खुदा के कने ते मदद मंग लिए,
वज़ीरीं कूँ सब याँ के हाज़िर किए।

सो मिर्रीख खाँ कूँ बुला भेज कर,
दिए शाही बिसला उसे तख़्त पर।

भितर भार हशम[2] लोग राज़ी हो आए,
दूग ही बंगाले में दूसर्का फिराए।

पड़्या पाँव वो शाह के आय कर,
हँसे ख़ुश हो इस कूँ गले लाय कर।

शहानी किए यो बड़ा काम शाह,
दिए इस कूँ मिर्रीख शह नाम शाह।

बंगला सो रहने उसे घर हुआ,
मुल्क सब मुक़र्रर उसी पर हुआ।

चजाँ ज़ुहरा के ताईं लक चाव कर,
दिए शाह मिर्रीख सूँ ब्याव कर।

हुआ ज़ुहरा कूँ देक मिर्रीख शाद,
ख़ुदा ने दिया उस कूँ उसका मुराद।

सो हुक्म इस मुल्क का सो धरने लग्या,
सुबह उट दुआ शाह कूँ करने लग्या।

१ मिर्रीख खाँ को मुहम्मद क़ुली का, बंगाल का शासन देना २ नौकर चाकर

## रसीदन मुहम्मद कुली कुतुबशाह बा मुश्तरी पेश मादर व पिदर[1]

कुतुबशाह होर मुश्तरी शाह मिल,
दखन कूँ सो जाते हुए एक दिल।

मंगे उन दोनों इन दोनो कन विदा,
किए उन दोनों इन दोनों कूँ दुआ।

के मिरीख जुहरा जो अँपड़ाने आय,
मना शह किए होर उनां कूँ मनाय।

तुमीं दोनों यााँ राज करते अछो,
हमीं जाते हैं महर धरते अछो।

के मुश्ताक़ होकर अछेंगे हमीं,
खबर भेजते जाव अपनी तुमीं।

जुकुच्छ काम मक़सूद अछे होर बात,
सो लिख भेज देव आते जाते के हात।

कहे "तुज किए अब जो आधार हमीं,
ज़रूरत कूँ रहते हैं इस ठार हमीं।

रज़ा दे के तुज सात हमीं आयेंगे,
बड़ा मरतबा इसते भी पायेंगे।

मुबा उठ शह देखना तुज मुख*
नहीं कुच्छ हमना भी इस ते बी सुख।

दीना होर दौलत[2] यो क्या काम आय,
जो साहब तुज ऐसा हमन छोड़ जाय।

खड़े रहे वो सब मिलके यक ठार पर,
अपस में अपै बात गुफ्तार कर।

---

१ माता पिता द्वारा प्रमत्त मुश्तरी को कुली कुतुबशाह का प्राप्त करना २ दीन-दौलत।

* पाठान्तर :—"सुबा ऊठ शह का जो आ देखें मुख।"

दिलासा उनो दोनों कूँ ली दिए,
सो रुख़ शाह फ़र्ख़े दक्खन घर किए।

दिए खीमें[1] सहरा में शह कूच कर,
के फाडाँ अछें थीर जियूँ घर पर।

ज़मीं के उपर डेरे शह फिर दिए,
के दरया में झाज़ाँ कूँ लंगर दिए।

वहाँ ते सो ज्यूँ होर दिल शाद कर,
चले बस्त होर भाव[2] सब लाद कर।

थण्डी ठार शह देक उतरते अथे,
अनन्द ऐश इस धन सूँ करते अथे।

यकस कूँ लगा एक छाती सूँ दाठ,
दोनो ऐश करते अथे बाट-बाट।

रल्याँ सूँ दोनो मिल के रलते थे वो,
इसी धात सब बाट चलते थे वो।

बिरह का गिरह सब गँवा विस्ल पाय,
दखन की सो सरहद में शह बेग आय।

जो वैसे में माँ बाप पाये खबर,
के आता है फ़रज़न्द दलबन्द इधर।

भोत दिन पछें खुश हो कर आज कूँ,
अगे हो के ल्याने चले राज कूँ।

के शह भी सलामत ते फिर आए हैं,
संगात अपने उस नार कूँ लाए हैं।

जो शह दूर ते देखे मा बाप कूँ,
नज़ीक आए मिल मुश्तरी नार सूँ।

---

१ डेरे २ चीज़, वस्तु।

पड़े पाँव मा बाप के शह नवल,
के है बहिश्त मा बाप के पाँव तल ।

वो मा बाप कूं शह गले ला लिए,
जो निर्जीव हुए थे सो फिर जीव दिए ।

खिले फूल उम्मीद होर आस के,
पड़ी पाँव बहू ससर होर सास के ।

मिले आज यक ठार बिछड़े सगे,
अपस में अपै पाँव पड़ने लगे ।

गौहर वारे चौफेर ते शह उपर,
के मोतियाँ केरा मेंह पड्या धरत पर ।

तमाशा देखन आए चौंफेर सब,
ग़नी हो गया आज कूं शहर सब ।

के सरहद पकड़ शाह के घर तलक,
सुखा गोद भर-भर लिया दान जग ।

बिखेरे कई आज चौंफेर गुहर,
के निकले रतन भुंई में के फूट कर ।

दिए दान यूँ जग कूँ शह सीम[1] ज़र[2],
के रखने कूँ कई ठार नई धरत पर ।

येते कुछ गुहर शाह बख़शीश करे,
के बादल उचाले समद सत भरे ¶ ।

"तेरा दान मशहूर हुआ शह यता,
के परवा सख्या समद सा सान्त का $ ।

१ चाँदी २ सोना ।
पाठान्तर है :—¶ "न देख ठार खुशकी समद जा भरे"
$ "के आवे क़लम में न कहने किता ।"

न देखा किने दान इस धात का,
के झड़ लाइ मुझे की बरसाँत का।"

वो मा बाप दोनों पकड़ बर मने,
ले कर आए इस शाह कूँ घर मने।

नगर में जा आया कुतुबशाह नवल,
लगे बजने चौंवर खुशियाँ के तबल।

शहर में मों ईद आज लोगाँ किए,
घर घर अनन्द काज लोगाँ किए।

लगे हाल अहवाल सब पूछने,
जो शह देखे थे सो कहे उन कने।

सो मा बाप शह धन हो कर एक दिल,
यो चारों रहे सुख सूँ यक टार मिल।

## दादन इब्राहीम कुतुबशाह बादशाही खुद ब मुहम्मद कुली कुतुबशाह[1]

ब्राहीम कुतुबशाह पर दुख भंजन,
के ल्याया जिने ज़ब्त में सब दखन।

किया शाह वो पादशाही अजब,
अमलमाँ हुआ यो तलंगाना सब।

सखावत में धन दान हातिम मुजान,
अदल में सो है ज्यूं के नौ शेर वाँ।

मुर्या पान माव रुमाल होर छतर,
तख्त ताज सब साज मुस्नद कर।

तख्त जियूं गगन गुन में मग़ूर है,
के झिल्यां सूँ करता छतर नूर है।§

देख्या फ़ाल मुस्हफ़[2] की आयात में,
दिनाया सिका शाह के हात में।

सवार्या जोत छब सूं शाह सब शहर,
नजूम्यां कूँ साअत साद पूछ कर।

दिया शाही अपनी कुतुबशाह कूँ,
के "बूढ़ा हुआ मैं कर अब राज तूं।

कुतुबशाह कूँ शाही मुक़र्रर हुई,
के बाप होर बेटे में नहीं कुछ दुई।

किते पादशाही किया नई है यूँ,
के करता अहै अब कुतुबशाह ज्यूं।

बस्या शह के इन्साफ़ ते यूँ दखन,
के बसता है पानी ते ज्यूँ फूल बन।

---

१ इब्राहीम कुतुबशाह का अपनी बादशाही मुहम्मद कुली कुतुबशाह को देना २ कुरान। पाठान्तर है :—§ झलम बा जवाहर छतर नूर है।"

सो यूँ अदल अब शाह करता अहै,
के कोले[1] कूँ देख बाग डरता अहै।

जो शाहाँ अपस कूँ ग्वोते अहैं,
ग्वड़े ग्वान सब डरते ग्वाते अहैं।

शही ज्यूँ किए शाहे आली जनाब,
न दारा किया वो न अफरासियाब।

जो अचते तो अचते तेरे दार जम,
सिकन्दर फरीदूँ ज़हाक जिस्म।

शहंशाह ग़ाज़ी कुतुबशाह तूँ,
शहाँ सब सितारे के है माह तूँ।

अजब नाविश है तुज मुक नूर कूँ,
के ताकत नहीं देखने सूर कूँ।

ग्वड़ग[2] बीच तुज ग्यान मावे सहाब,
तुरंग आसमान होर नेज़ा[3] शहाब।

बुजे आग जलती तेरे हाक ते,
जंगल पकड़े बागाँ तेरी धाक ते।

तेरा अदल ऐसा है ए जग अधार,
के आग होर पानी अछे एक ठार।

तेरा अदल इन्साफ़ है जग उपर,
अगन नीर नित मिल रहे मद भितर।

मुहम्मद कुतुबशाह तुज नाँवे है,
हुमा सो तेरे पाँवे का छाँव है।

तूँ दानी तूँ ज्ञानी तूँ दातार है,
तूँ फ़ाज़िल तूँ कामिल तूँ औतार है।

१ सिंह २ तलवार ३ भाला।

तूँ ऐसा सखी है के तुज धर्म ते,[†]
दरिया ल्याय कफ़ मूँ उपर शर्म ते।

तूँ दरकश है हर एक सरकश उपर,
के ग़ालिब है ज्यूँ आग आतिश उपर।

तूँ ज्यूँ नूह[1] पाताल जल खा रहे,
धरत भाज़ अम्बर सो औज़ार है।

पौन[2] डोल अमोलक है लक साज़ का (?)
भौन लंगर इस बेब्दल भाज़ का।

जो भमकाय शह तूँ गुहर लाज ते,
अजब क्या जो समदर मुके लाज ते।

कहे हुदहुदाँ जा सुलेमान कूँ,
के शहदार आवे मंगन दान कूँ।

के शहदार ते गर जुकुछ दान पाय,
जनम पेट अपने हश्म सान खाय।

दिरम[3] सूर खोटा चले न कहीं,
के सिक्का कुतुबशाह का उस नहीं।

चतुर शाह गुनवन्त ज्ञानी है तूँ,
के हिकमत में लुक़मान सानी है तूँ।

अंगूठी सुलेमा की तुझ [illegible] में,
के तासीर [illegible] की तुझ [illegible] में।

हर यक इल्म है शाह तूँ म[illegible] [illegible]ब,
छुपया राज़ [illegible] अगे ज़ाहर [illegible]ब।

१ एक पौराणिक प्राणी २ हवा ३ तत्कालीन मुद्रा।
पाठान्तर है :—"† तुज ऐसा सखी कोन है धर्म ते।"

## बुरदन मुहम्मद कुली कुतुबशाह बिकारत मुश्तरी[1]

रतन ला मंवारे मुकल महल,
सो मिरीख[2] याकूत नीलम जुहल[3]।

अगन आसमाँ होर बादल सो फर्श,
के मँडवा सो कुर्सी छजा ज्यूँ है अर्श।

मुरस्सा[4] चड़या तख़्त वाँ ल्याय कर,
सो उस तख़्त पर शाह कूँ बिसलाय कर।

मिले दोस्ताँ आज चौंधेर ते,
अनन्द ऐश करते हैं भई सेर ते।

सो जलवा लगे देने सब शाह कूँ,
मुलक्ख्वन सर्को मुश्तरी माह सूँ।

ज़रीना किए सूर का क़ुरस[5] तोड़,
पिनाए रतन धन के तबले कूँ फोड़।

मशात्ता हो हूर आए जन्नत ते भुल,
के परदा है अस्मान तारे सो फल।

सो अस्मान कई दर सूँ यूँ जगमगे,
के फूलाँ के मंड़व्याँ[6] कूँ तारे लगे।

मिले कुतुब होर मुश्तरी एक ठार,
हुआ आज जग में अनन्द बेशुमार।

सो जिब्रेल क़ाज़ी हो वाँ आय कर,
फ़रिश्त्याँ कूँ महमान सब ल्याय कर।

बन्दया मेहर उस नार नादान का,
सो हासिल जमीन होर अस्मान का।

---

१ कुमारी मुश्तरी को मुहम्मद कुली कुतुबशाह का ले जाना २ एक ग्रह, नक्षत्र ३ एक ग्रह ४ जड़ाऊ ५ मंडल ६ मंडप।

ज़मीं थी सो हुई आज ज्यूँ आसमाँ,
के है कुतुब होर मुश्तरी का क़िराँ।

अपस दिल कूँ सब दोस्त शादी दिए,
सो शह कूँ मुबारकबादी दिए।

सो शर शोर ग़ुल ग़ाल हुआ सब तमाम,
के जलवे केरा काम हुआ सब तमाम।

गए शाह आरूस[1] ख़िलवत मने,
लगे दोनो ऐश होर इशरत मने।

सो धन कूँ गले शाह लाने लगे,
यकस सूँ सो यक लट पटाने लगे।

घुँघट खोल बोसे लिए ज़ौक़[2] सूँ,
सो चोली के बन्द तोड़ सब सटे शौक़ सूँ।

कधें हात मूँ पर धरे लाज ते,
कधें कइ न कर सूँ इश्क़ आज ते।

कधें कइ नको आज छोड़ो सुबा[3],
कधें कइ के यो क्या तुमारा वज़ा।

लज्ज़त ऐने कामाँ की वो पाई नईं,
कधें ऐसे दावाँ में वो आई नईं।

वो इस काम कूँ भोत कचवाती[4] थी,
सहेल्याँ मने न्हाट[5] कर जाती थी।

जो रहती लज्जत कुछ सकी पाएगी,
तो शह कूँ उने खींच कर लाएगी।

फिराने अथे हात शह ठार-ठार,
के थी शोख़ चंचल उत्तम ज़ात नार।

१ दुल्हन २ आनन्द ३ मालिक ४ शरमाती ५ भाग कर।

येता तन अथा पाक साफ़ होर हनवार,
के हाताँ फिसलते थे बे अख़्तियार।

क क़िरमज़ी[1] रेशम त अंग नर्म था,
वख़्त बेशर्म ख़्याल सो गर्म था।

कधें गुड़[2] देवे गोद में बेस कर,
कधें लेट जावे सितम बेस कर।

कधें पर्दे के आसरे जा लुपे,
कधें शह को सतमें पकड़ ले आये।

कधें शोर करती कधें ग़लबला,
कधें कइ अख़राड हो कधें सो कला।

कधें कइ के सरदी त तन सर्द है,
कधें लेवे माला के सिर दर्द है।

कधें दिल के गज़ाँ कहे खोल कर,
कधें कई के किस्से उठे बोल कर।

कधें शह कू टुक लाये बाताँ मने,
कधें हात दे शह के हाताँ मने।

कधें देती गाल्याँ कधें दोस्ती,
हुई बेअदब शाह के फोस्ती।

ग़ुस्सा नार का यूं है इस नार में,
के ज्यूं आग अछूती है अंगार में।

लगी शाह कूं तल तल तपाने सकी,
के नईं देती टुक हात लाने सकी।

के इस काम कूं भोत कच्चाए हैं,
सहेल्याँ मने न्हाट कर आए हैं।

१ एक रंग २ चुम्बन।

सकी* कूँ भोत छन्द सूँ सँपड़ाय कर,
दोरानां[1] की ब्रन्दिश मने उस जकड़ ।

जो शह केली दबटे कुफ्ल ले तलार,
खुले धन के तबले सो लाल आए भार ।

मुखड़ शह सूँ संग्राम धन की अहै,
के याकूत दामन में भर ली अहै ।

शहंशा मुधन सेज पर आई थी,
सिराना जो था सो हुआ पाई न थी ।

मुहात थे शह धन सूँ इस वक्त यूँ,
के हरनी कूँ ले बैटता बाग ज्यूँ ।

चल्या तंग कूँचे में शह का तुरंग,
हुआ सुस्त आखिर के था टार तंग ।

लगी ठेस उस ठार हुआ लंग[2] पाय,
किया तंग कूचे मने आय जाय ।

खिल्या फूल तन+ का मदन बाव ते,
के खुश है वो संभोक के चाव ते ।

चंचल चुलबुला जो उठा शोर कर,
सिराना चल्या पायँती के उधर ।

पिरत का झुटन शह झुटे इस सूँ जब,
बिछाना हुआ घाँघराघोल सब ।

किए रात भो घात धन सात यकंग,
बजर के वो पाए बजर का पलंग ।

मुधन कूँ हिला कर प्रेम मद पिलाय,
भोत घात समजा उसे हात लाय ।

---

१ बड़प्पन (तेलुगु के दोरा से) २ लँगड़ा ।
पाठान्तर :—* मुधन + धन ।

रही दोस्तन यूँ वो उस दोस्त सूँ,
के ज्यूँ मग़ज़ मिल कर अछे पोस्त मूँ।

सुहाती है धन शाह ख़ुश फ़ाम सूँ,
के ग़ुमर्ता है सीना मगर गम मूँ।

## दुआ ख़्वास्तन मुहम्मद कुली कुतुबशाह[1]

इलाही मुंजे दे तेरा ध्यान तूं,
सो दौलत हयात[2] होर ईमान तूँ

इलाही गुन्हा ते झटक बार दे,
निराधार हूँ मुंज आधार दे।

इलाही तूँ हिस[3] दे हरेक काम में,
मेरा नाँवँ कर ख़ास होर आम में।

इलाही तूं खुशहाल रख मुंज जम[4],
दफ़ा कर बला दुख दरद होर ग़म।

इलाही तूं दुश्मन कूँ तलपट[5] कर,
बुर्यां कूं दुनिया में ते सब चट कर।

तू दायम मुज शाद रख,
बलायाँ के बन्दाँ ते आज़ाद रख।

इलाही मेरा मर्त्तबा कर बुलन्द,
सदा दे मुंजे ऐश इशरत अनन्द।

इलाही मददगार तूं है मुंजे,
मददगार हर ठार तूँ है मुंजे।

इलाही कुतुबशाह तेरा दास है,
कुतुबशाह बन्दे कूँ तुज आस है।

१ मुहम्मद कुली कुतुबशाह का प्रार्थना करना २ जीवन ३ जानकारी ४ सदा ५ नाश कर

## खातमा[1]

कुतुब मुश्तरी मैं जो बोल्या किताब,
सो हुई जग में रौशन के ज्यूँ आफ़ताब।

अवल होर आखिर के कामाँ पछान,
दुनिया में रख्या हूँ मैं अपना निशान।

निशानी रखे बाज़ चारा नहीं,
के दायम कोई रहनहारा नहीं।

सुनार हो के मुख के लफ्ज़ाँ गढ़्या,
तिन मानी चुन-चुन उनन पर ज़ड़्या।

कता हूँ के यो खोल मक़सूद सब,
मेना मैं मशक्क़त किया इस सबब।

के पढ़ कर इसे मुज करें याद सब,
सदा काल मुंज ते अछे शाद सब।

जिने शेर बोल्या उसे क्या है ग़म,
के जीता अहै नाँवें इस जग में जम।

तमाम इस किया दीस बारा मने,
सन यक हज़ार होर अठारा मने।

1. समाप्ति।

**डाक्टर अब्दुल हक़ की अपनी प्रति के आधार पर प्रकाशित, पृष्ठ १०४ के आगे का प्रक्षिप्त या अतिरिक्त अंश।**

## रुस्तन शाहज़ादा अज़ तहलुके दरया[1]

ख़ुदा के करम सूँ जो निकल्या बहार,
ख़िज़ाँ थे अलंग[2] जूँ निकल्या पहाड़।

······कूँ हूप अगल ······हुआ,
सो राहत सूँ ग़म सब मुबदल हुआ।

जो देख्या के यक झाड़ है ख़ुश हवा,
न देखा सो मेवा दिस्या वाँ नवा।

···   ···   ··   ···
···   ···   ···   ···

······ तख़्ते पे भूकों सूँ ख़ाने तपे,
चले इशतहा[5] साथ खाया अपे।

किया जूँ की ······ ······
··· सब ज़फ़ायाँ[6] फ़रामोश तूँ।

भोतेक दिन जो गुज़रे थे जाँ कन्द में,
सो इस झाड़ तल जामता नन्द में।

······ ······वहा सोय कर,
आसूदा देख्या हुश्यार होय कर।

जहाज़ येक आता है कड़क्या[7] कूँ लग,
रह्या मुंतज़र ख़ुश हो आये तलग।

लंगर दे के जूँ लोग निकले तमाम,
किया शाहज़ादा अंग हो सलाम।

---

१ दरया के तूफ़ान से शाहज़ादे का छुटकारा पाना २ अलग ३ बदलना ४ भूख ५ भूख ६ जख्म ७ किनारे।

अथा यक बड़ा उन मने की सतें,
जवाब उन दिया फिर अले[1] की सतें।

महरबान हो पीर पूछा हवाल,
"तूँ कोन है तेरा क्यूँ गुज़रता है हाल।

तुजे खाना पानी मिलता है क्यूँ,
यकेला गुमे क्यूँ तूँ कह है सो त्यूँ।"

कह्या "हाल मेरा अगर तुम सुने,
इसी तिल में मरदूद कर मुज कने।

ये वाखाना[2] सोस्या[3] है कई इन्स व जिन[4],
मशक्क़त[5] सूँ दरया में······आठ दिन।

मेरा बाप ताजिर[6] अथा महतशम[7],
न देख्या अछे कोइ दुनिया में कम।

के माल होर मता[8] उस कूँ बेहद अथा,
सौ कइ लाख तो ज़रबफ़त[9] का···अथा।

जवाहर खज़ीने में फ़ाज़िल अछे,
······ ······ ······ ······अछे।

जो कश्ती में आते थे कइ लोक······,
न फ़हमे थे त्यूँ ज़यां······।

यकायक क़ज़ा[10] आसमानी हुआ,
बला येक किश्ती तूफ़ानी हुआ।

के फुट भाज़ सब लोक वाँ डुब के गये,
यकेले हमी येक तख़्ते पै रहे।

सो माँ-बाप होर माल सब जाय को,
रह्या मैं दिगर[11] सूँ ये दुख पाय को।

---

१ 'तुम पर', सलाम के जवाब में कहना २ हाल ३ सहन किया ४ मनुष्य और भूत-प्रेत ५ मुसीबत ६ सौदागर ७ बहुत बड़ा ८ दौलत ९ ज़रीन कपड़े १० भाग्य से ११ अकेला

अलम[1] भोत खींचा दरया में यू तन,
गया ग़म निकल गुड़ जो देख्या तमन।"

कह्या हाल अपना जो इस पीर सूँ,
सुन्या पीर हैराँ हो दिलगीर सूँ।

कह्या "तुज यकेला याँ का गुमे,
अगर तू रहे तो रखेंगे हमें।"

कह्या अजिज़ सूँ फिर वो क़दमां कू चुम,
"करो मुज सरफ़राज़ मा-बाप हो तुम"।

......वह पीर उस जान कूँ टुक देख्या,
शफ़क्क़त[2] सूँ ख़िदमत में अपने रख्या।

...सूँ उस के पकड़या चरन,
लग्या खुश हो दिन रात ख़िदमत करन।

...... ...... ... मिल अथा,
हरेक बात में भोत कामिल अथा।

...... ...... ...... घर कूँ,
चल्या पीर वाँ थे अपस शहर कूँ।

... ... ... ...
के उस शहर आँग अथा रूद नील[3]

...... ...... ...... जा,
अदब सूँ था ख़िदमत में हर यक जा।

अंगूठी थी यक शाहज़ादे कने,
किया फ़िक्र यू क्या सबब मुज कने।

"ले जा तू सो बेच्या अंगूठी के तईं,
ख़र्च करके खाने को रोटी के तईं।"

१ रंज, दुःख २ मेहरबानी ३ मिस्र की नील नदी

वो इस धात सूँ खुश धरे चाकरी,
अपस का अपै खा करे चाकरी।

कधीं खूब मेवा जो पाता अछे,
के आमिल[1] के तईं बल्के ल्याता अछे।

था उस धात दो साल हो कर बन्दा,
के आमिल था उस बाब थीं शर्मिन्दा।

कुच यू मर्द हमाग तो खाता नहीं,
यूँ उपकार उसका मैं तोड़ूँ कभी।

अगर कुच्छ आमिल जो देने को जाय,
शहज़ादा तो पाँवों उपर हात लाय।

के "बिलफ़ेल[2] तो कुछ नहीं अहतियाज[3],
मँगूँ तुज कने ····· ······ ···।

यू भाने सत कुच लेवे न वो,
के यक दिन····· ······ ···।

के इस धात खिदमत मने चुफत[4] अछे,
··· ···· ··· ····।

सो तक़दीर चन्द रोज़ तो यू गख्या,
क़ज़ा··· ······ ······।

मँगे जिस कूँ अपड़ाय मक़सूद कूँ,
वही ······ ······· ······।

शहज़ादा हो दिलगीर यक रोज़ सख़्त,
गया रूद[5] कड़के गुमाने बख़्त।

बुज़ुर्गी नदी देख्या दिल पो फ़हम,
तो यकबारगी दिल पै आया यू वहम।

---

१ मालिक २ इस वक्त ३ आवश्यकता ४ चालाक ५ नदी।

के या रब, कहाँ का ये पानी अहै,
मगर जग में अमान[1] सानी अहै।

यू चौड़ान डूँगाई यकसाँ दिखाय,
के इस शान अज़मत सूँ यू काँ थे आय।

बुज़ुर्गी यां हक़ ने हवेदा[2] किया,
वले किस ज़मीं पर यो पैदा किया।

के तौफ़ीक़[3] हक़ सात मुस्तैद हो,
सो जा देखना काँ थे नीचा है यो।

थे ...... ...... अगर राज़ में,
दो जग में अछूँ तो मर अफ़राज़[4] में।

यूँ विस्वास आया जो उस दिल उपर,
उठ्या वाँ ते रुख घर के मंजिल उपर।

रज़ा लेने आमिल के आया नज़ीक,
कह्या "मैं मँगूँ तुज कने ययक भीक।

गुजरता है मुज़ दिल पे ये फ़मल नक़ल,
के देखू के इस रूद का काँ है अमल?

रज़ा पाऊँ तो जाऊँ है मद्दुआ[5],
हरेक जा पे करता अछूँ तुज दुआ।"

सुन्या जूँ यो आमिल सो हैराँ हुआ,
बहुत हैफ़[6] खा कर पशेमाँ हुआ।

कह्या "तेरे दिल पर यू क्या खयाल,
न ले सर पे सितमी यू अमर[7] महाल[8]।

के तुज सीने कू ता दराज़ी है गाह,
के मुश्किल मशक़्क़त के सख़्त बद है राह।

---

१ एक राजा का नाम जो दर्या में बह गया था २ ज़ाहर ३ इरादा ४ सेवा में ५ इरादा ६ अफ़सोस ७ काम ८ मुश्किल।

तूँ काँ जाय मग़रिब अक़्ल खाम है,
वाँ आदम तूँ जाने का नईं काम है।"

कह्या शाहज़ादा के "चारा नहीं,
यू दिल का तलब फिरन हारा नहीं।

के ना चार तुम मुज कूँ देना रज़ा,
न जानूं के मुज सर पै क्या है क़ज़ा।

क़ज़ा तो फिरन हार नईं है कधीं,
बग़ैर रज़ा बिन चारा नहीं।

अगर होय रज़ा तो यू दिल शाद अछे,
नहीं तो मेरे दिल पे सो दाग़ अछे।

हरेक अज़ा कहता यू जीव जावना,
भला है जो तेरा रज़ा पावना।"

सो आमिल कह्या "है यो हिकमत अला[1],
जिधर मन मंगे जाव तुम बिस्मिल्ला[2]।

वो हिकमत ख़ुदा का वो आपें तुजे,
के सहत सलामत ले जावे तुजे।

करूँ क्या मैं उपकार तेरे उपर,
तूँ लई हक्क धरता है मेरे उपर।"

यूँ कह कर मँगाया सन्दूक आपना,
सो हिकमत सते खोल कर ढाँपना[3]।

१ ईश्वर २ शुरू करता हूं नाम अल्ला का ले कर ३ ढंकन

## रज़ा गिरफ़तन शाहज़ादा अज़ आमिल बा हवस दीदन असल (रूद)[1]

तवक्कल[2] करा बाँद तोशा व ज़ाद[3],
रज़ा ले चल्या वो शाहज़ाद।

नदी के किनारे च जाता अछे,
मिले फल फुलाली सो खाता अछे।

इसी धात सूँ जूँ चल्या चन्द रोज़,
न गुज़र्या सफ़र ······ ······ ।

सो इतने में जा येक घर में पड़्या,
न देख्या ····· पानी ······ ।

मिले घाँस भी खाने मँगता अथा,
इसी आस ······· ······ ··· ।

जो ऐसे में जा यक पड़्या देग में,
कह्या जीव जावेगा याँ वेग में।

न सकता था भूकों अंग डग धरन,
लग्या हक़ के दरगाह में नालिश करन।

मुनाजात[4] कीता ऐ परवरदिगार,
अगर मौत है मुज तो बेगी सूँ मार।

जो चन्द रोज़ बाक़ी अगर है हयात,
तो जाँ कुन्दनी[5] थे मुझे दे नजात।

के जूँ जूँ अज़ावाँ यो सहता अछे,
बते अजज़[6] सतें सो कहता अछे।

सो रहमाँ कूँ यूँ अजज़ जब फ़हम हुआ,
उसी तल में राहिम कर अरहम[7] हुआ।

---

१ नदी की असलियत देखने के लिए शाहज़ादे का अपने मालिक से छुट्टी लेना २ ईश्वर पर विश्वास कर ३ सामान ४ ईश्वर से प्रार्थना करना ५ जान पर तकलीफ़ होना ६ आजिज़ी से ७ रहम।

कह्या शाहज़ादा अपस दिल में आन,
बहर हाल देखूं यू चड़ कर ठिकान।

चड़्या जूं वो ठीकान अत चाव सूं,
मशक्कत भोत पाके बनवास मूं।

उपर चड हरेक घिर नज़र जब करे,
लगे दूर दिसने दरख़्ताँ हरे।

वो देख्या सो ख़ुश हो के दिल यूँ हिल्या,
के प्यासे कूं जूं आब-हैवान मिल्या।

रह्या था जो निर्जीव जीव फोड़ कर,
वो देख्या सो जीव पा चल्या दौड़ कर।

नज़ीक जाके देख्या सो जूं बहिश्त था,
जो कुच जग में होना सो सब किश्त[1] था।

हरेक क़िस्म के वाँ थे मेवे लगे,
यता चुन के खाया जो जीव ना भगे।

वो मेवे तरज़[2] खा के पानी पिया,
मुक आराम पा कर हुआ ख़ुश जिया।

के मक़सूद[3] पाकर वो सन्तोस का,
लग्या सेर करने वो फिरदोस[4] का।

के यूं सैर करता चल्या बाग़ सब,
ख्याने कूं अपड़्या सो देख्या अजब।

यक क़ता ज़मीं में जो आता नज़र,
है मुन्ने के झाड़ां को जौहर का बर।

दरख़्ताँ दो मुन्ने के जोती दिसे,
के ख़ से उसे लाल मोती दिसे।

१ खेती २ ख़ूब ३ विचार कर ४ फलों का बाग़।

खरीत्याँ[1] में जौहर किए थे जतन,
भितर थे झमकते थे सूरज नमन।

वो खू से जौहर येक पर नूर था,
नैन देखने उस कूँ माज़ूर था।

सो देख दिल मने भोत अचम्भा किया,
बर तोड़ देखूँ के आँखें गया।

के जूँ हत पसार्या वो यक तोड़ने,
नज़िक था जो यू काँप जीव छोड़ने।

भोत ज़ोर से आके उस गुदगुदी[2],
बसू घेरी सूं बेताब होकर तर्दा[3]।

पड़्या वाँ जो इस धात बेसुद हो,
घड़े जो मलोल आपना बुद खो।

वहाँ थे हुश्यार हो के इस शर सतें,
किनारे गया था सो कर डर सतें।

के या रब, कह्या "क्या है यो मुअ़ाज़िज़ा[4]"
सो पाया था में नागहानी सज़ा।

किया शुक्र भोतेक बाँच्या के जान,
बहर-हाल फिरने लग्या गुलिस्तान।

जो वैसे में ग़ोग़ा उठा येक धीर,
के आता था यक बादशाह बा वज़ीर।

देख्या शहज़ादा जब वो दबदबा,
सो जा छुप के मार्या झरप में दबा।

फ़राशाँ कूँ गोया रज़ा शह दिये,
हवा देख यक जा बिछाना किये।

---

१ थैलियों २ कंप कँपी ३ उसी वक़्त ४ गुप्त बात का जाहर होना।

वहाँ शाह उतर्या अदिक ज़ौक़ सूँ,
वज़ीराँ वां मजलिस किए शौक़ सूँ।

लगे बात करने मो हर येक बात,
जो इतने मने शाह बोल्या यो बात।

के "लई दिन थे तुमना कूँ मैं पूछता,
के क्या हाल है करना मैं बूजता।

यू सुन्ने के भाड़ाँ यहाँ की हुये?
यू खूशे जवाहर के काँ थे हुये।

के मुंज दिल में लइ दिन थे यो वहम है,
न तुमना किसी कूँ तो यू फ़हम है।

के आया अहे मेरे दिल में सो आज,
न छोडूंगा तुमना यू फ़रमाए बाज।

वगर नईं तो मारूँ फ़रंग हात में,
के हर सात गरदन कूँ यक सात में।"

यू सुन कर वज़ीराँ गए हड़बड़ा,
था पुख्ता यक इन में हुआ वो खड़ा।

के हुरमत[1] सूँ दायम जिया था उने,
बड़याँ की जो खिदमत किया था उने।

अधे हो किया शाह तईं वो अरज़,
"न था आज लग यो फ़हमने ग़रज़।

था तुज बाप दादे की खिदमत में जब,
तधाँ थे[2] यही भाड़ है यूँ च सब।

वले काई आक़िल मैं पूछा नहीं,
के यू पूछना किस कूँ सूजा नहीं।

१ इज्जत २ तब से

समजने यू तुज दिल पै आया है मौज[1],
रज़ा दे जो ढूंढें उसे चन्द रोज़।

यहाँ थे हमें सात मिल जाएँगे,
हरेक जा यू ढुंड कर खबर पाएंगे।

खबर पाएँ गर यूज़ है भाग हमन,
वगर नई तो संपड़े हैं फ़र्ज़न्द व ज़न।"

के यू बात सुन शाह देता जवाब,
"खबर ल्याव तुम रास्ती सूँ शताब[2]।

अगर जाएँ तुम न्हाट ने की सबील[3],
सटूँ सब के नहनवाद घाने में पेल[4]।"

उठ्या सब कूँ इस धात दे कर नहीब,
मंगा कर हवा सार तेज़ी रकीब।

गुसे सूँ चल्या शाह वई ऊठ कर,
वज़ीराँ रहे वाँच सब रूठ कर।

फ़िक्र वन्द हो कर बिचारे सू मिल,
कहे शह बुराई पे रख्या है दिल।

नहीं फ़हमता बात यू खाम है,
पस इस सात जाने का क्या काम है?

यह कह कर खड़े ग्ये वो सातो वज़ीर,
चले वाँ थे राज़ी हो सब येक धीर।

जूँ आंधे हुआ इन का दो डग गुज़र,
देखे छुप के बैठा यक आदम बशर।

सो पूछे के तूं कौन है ऐ जवाँ?
रहे क्यूँ तूँ क्या काम करता है याँ?

१ इरादा २ जल्द ३ पयत्न ४ बालक।

## बाज़ गश्तन वज़ीराँ व रफ़तन शाहज़ादा पेश्तर[1]

के सातो वज़ीराँ तो इस जान कूँ,
दुआ भोत कर कर सो अस्मान कूँ।

हरेक बात का सब वो पा कर मुदा[2],
कते शाहज़ादे कूँ सातों विदा[3]।

वज़ीराँ फिरे पाके मक़सूद तो,
चल्या शाहज़ादा पकड़ रूद[4] तो।

चल्या जाय यकेला नदी के किनार,
अछे दश्त वीराँ अगर कोहसार।

के चले रूद कड़का इसी राह था,
निगहदार[5] हरेक ठार करतार था।

अगर कईं मिले गावँ तो पाय आश,
वगर नईं तो था घाँस पात च मुआश[6]।

ज़माने सतें भोत छुटने लग्या,
सो इस धात सूँ वाट कटने लग्या।

मशक्क़त जफ़ा वाट में भोत खेंच,
केतक दिन कूँ यक शहर देख्या सो वेंच।

चल्या ज़ौक़ सूँ देख कर वो नगर,
जूँ भूके कूँ नेमत मिल्या है मगर।

हुआ खुश भोत दिन के परदेस में,
पटा बिस्मिल्ला कह के उस बेस[7] में।

अजब इस शहर का सो मुरब्बस वस्या,
खड़ा एक जवान खूबसूरत दिस्या।

---

१ वज़ीरों का पलटना और शाहज़ादे का आगे जाना २ प्रशंसा ३ बिदा ४ नदी ५ निगाह रखनेवाला ६ जिन्दगी का सहारा ७ दरवाज़ा।

देख्या मुख उपर नूर जूँ सीम उस,
अंधे हो किया आके तसलीम उस।

मुसाफ़िर यू है कर मुहब्बत सूँ देक,
सो खुश खल्क़[1] सेती किया वो अलेक[2]।

कह्या तूं यां चन्द रोज़ महमान हो,
लिया महर सूँ हात में हात वो।

शहज़ादे मने देक हया होर शरम,
लग्या अन मुहब्बत सूँ यारी करम।

लेजा चाव सेती उने बैसला,
सो महरम किया घर भितर पैसला।

तो पूछ्या के "क्यों को किए हैं के गश्त,"
लग्या बोलने यो अपस सरगुज़श्त।

"निकल बाप मांडागरी तीन सौ मर[3],
उनो सब मुए तो हुआ मुज ये क़हर[4]।

मा भी आठ में मात बाक़ी देख्या,
सो आठ आठ दिन के जो फ़ाक़े देख्या।

मेरा दुःख होर कष्ट कह्या ना जाय,

न जानूं फ़लक का किता रूस था,
जो अभूं ज़फ़ायाँ फिरूँ सोसता।"

यू सुन हाल देख तलमलाया उसे,
बुरे खान पानी खिलाया उसे।

के जूँ खाना खा कर हुआ बातचीत,
देख्या सामने एक गुलवाड़ी[5] रीत।

१ स्वाभाविक, फितरतन २ सलाम करना ३ मर्द, जबर्दस्ती ४ आफत ५ रथ (?)

अँदे थे दो उस में जनावर दलैल,
के था येक गिदड़ा व दुसरा सो बैल।

वो दोनो मनें हम ज़वानी हुआ,
देख्या शाहज़ादा तमाशा नवा।

यूँ गिदड़ा कता था जो उस बैल नैं,
के दायम मलूल[1] हो के अछता हूँ मैं।

कह्या वो "मेरा हाल ना पूछ तूँ,
मगर अक्ल धरता नहीं कुच तूं।

के तेरे हज़ूरी च पाते हैं घांस,
ना भर पेट अदा यूँ निकाल्या है सांस।

जो उस हाल सेतीं भी नित लग जाएँ,
सो मांद ये खांद भाला गर लगाएँ।

ख़लासी नहीं उम्र में येक दिन,
सो मुज हाल पर ग़म गुज़रता कठिन।"

सुन्या यूँ के अहवाल यू सब वो ख़र,
कह्या सीक मैं सिकलाऊगाँ, यक हुनर।

नको खा तूँ कुच्च घांस का जिन्स आज,
तो फ़रहंगा तुज दर्द कर ला इलाज।

के साहब यू सुन ना लेजावो कहे,
दो चार दिन तूँ आसूदा रहे।

हुआ बैल ख़ुश जो हुनरहित चड़्या,
यू सुन शाहज़ादा समज हँस पड़्या।

जो घर का यू औरत ने हँसना सुन्या,
कनी क्या जो तूँ मुज पै एसा चुन्या।

[1] ग़मगीन, दुःखी।

कह्या शाहज़ादा ख़ुदा की तो सूँ[1],
भूटें, क्या सबब मैं तुमन पर हँसूँ।

हँस्या घर की बात येक याद आके मुज,
तुमे तो नवाज़े बुला लाके मुज।

यू सुन चुप रहे मर्द औरत तदी[2],
सुबा हुई पै यू ल्या खबर गावदी[3]।

लिया बैल नईं घाँस निस मुख मने,
मगर दर्द कुच आके है दुख मने।

के साहब यूँ सुन कर हुआ अत चकोर,
कह्या पेरना बीज आज है ज़रूर।

हमारे फ़लाँ यार कन जाव तुम,
यो गिदड़ा लेजा कर मंगो गाव तुम।

कहो बैल बदलें तो गिदड़ा अहै,
सो दोने को दो बराबर अहै।

यू गिदड़ा लेजा देव लादेगा वो,
सो वो बैल लाकर तुमे नागर करो।

के इस दिन था बीज पेरन फ़रज़,
जो साहब कह्या यूँ चलाई अरज़।

दिया गाव जिन ने के नफ़राँ कूँ इन,
फुकट का है गिदड़ा सो लादो दुगन।

सो भेजे फिरा बैल कर ले धंधा,
लिया गिदड़ कूँ पागा में अपने बँदा।

देख्या बैल कोठे में आया जो खर,
सो पूछ्या के तुज तईं ले गए थे किधर।

१ क़सम, सौगन्द २ जब ३ जानवरों की देखरेख करनेवाला।

वो गिदड़ा सो इस थी मशक़्क़त यो सुस,
के धरता अथा बैल पर भोत उस।

बिचार्या अपस दिल मने फ़िक्र कर,
कह्या इस दग़ा देवूँ यो ज़िक्र कर।

कह्या मुंज ले गए याँ थे वाँ बे गुज़न्द[1],
न था काम तो कुच के था ख़ुश अनन्द।

लेजा मुज यूँ छोड़ हरयाली भितर,
के खा खा जूँ लेड़ता था निहाली उपर।

उनों का सो जूँ बैल ल्या आँपड़ाय,
बजाँ इस हरियाली थे मुंज भार भाय।

सो तब बैल पूछा के मुंज बाब में,
धनी कुच कह्या ज़याँ होर लाब में।

सो गिदड़ा कह्या हुए मैं यू सुन्या,
के तुज बाब में अकल वो यूँ बुल्या।

दिया गावदी कूँ वो साहब जवाब,
तूँ दुबला मलालत थे ना होय ब्याब।

सुबा घाँस खा बल खूब होय भला,
अगर नईं तो परसूँ जो काटे गला।

अगर कोई क़स्साब[2] मांगे तो देव,
अगर नईं तो आँत्याँ सूँ बीच बैल लेव।

यू सुन कर हो आजिज़ पड्या इस के पाँवँ,
कह्या कुच सिका अब जो जीने का टाँवँ।

सो गिदड़ा कह्या गर तूँ मँगता है ख़ैर,
सुबा लग न रख घांस रसंड़[3] बग़ैर।

---

१ बिना कष्ट के २ बैल काटनेवाला ३ छोड़े बिना ;

जो देख्या धनी घाँस जब तूँ चरे,
गया दर्द कर काटने तुज डरे।

यू सुन शाहज़ादे की बुद सब उठी,
सो हैरान हो हंसने लग्या मसकरी[1]।

हँसना देक होय मर्द औरत तो ज़ार,
बले यू तो हँसता था बेअख़्तयार।

गुस्से सूँ हुआ रंगा दुनो का ज़र्द,
कहे "क्या काम हंसता हमन पर यूँ मर्द ?"

कह्या शाहज़ादा खाला[2] खाने[3] सवाँ (?)
नईं हंसता तुमन पर ना हो बदगुमाँ।

सो घर का धनी यूँ मोत ज़ट[4] हो,
तुम क्या सबब पस हंस-खोल को।

कह्या शाहज़ादा उसे हो बज़ीद[5],
के यू खोल कहना नहीं कुच मुफ़ीद।

तो इस शर्त सूँ तुज फ़हमाऊँ (में) लिक,
ना कह तूँ गर औरत जतारे[6] अलिक[7]।

किया शर्त औरत सूँ रखने मुभम[8],
मँग्या शाहज़ादा दवात होर क़लम।

न था इस के घर में क़लम होर दवात,
मँग्या सो होर कई थे औरत के हात।

वो ल्याने कूँ उठ कर जो मँगने चले,
जो रोटी पड़ी गोद में थे तले।

यू दौड़ी जो हमसाये कन जा मँगे,
वो रोटी पड़ी जा कुत्ते के अँग।

---

१ स्त्रियाँ २ खाला-मौसी ३ खाना (?) ४ बुरा होना, शट ५ मजबूर करना ६ जानना
७ बल्के, यद्यपि ८ अस्पष्ट शब्दों में किसी बात को कहना।

सो कुत्ता जो बैठा अथा अक मोंच,
तो इतने में मुर्ग़ा सख्या आके चांच।

कुता देक हुश्यार हो के उठे तलक,
मुर्ग़ लेके रोटी गया वाँ थे तलक।

······रुट हो के कुत्ता यूँ कह्या,
न देख्या ऐसा मुर्ग़ मैं बेहया।

यू ककलूत सूँ क्यूँ सख्या आके मूँ,
बेशर्मी देखो इसकी किस हद लगूँ।

दिया जाब[1] फिर मुर्ग़ के सग नजिस[2],
है बेशर्म तूँ होर नमक खाय जिस।

अवल थे किते तुज ना पाक सग,
वले तेरे साहब में तेरी है रग।

तूँ कुत्ता अहै कुच नहीं तूज फ़ाम,
है साहब जो तेरा सो तुज थे है खाम।

पूछ्या सग[3] के साहब मेरा क्यूँ है खार[4],
सो मुर्ग़ा कह्या सुन अपैं हर्ज़ कार।

के कम अक़ल पन कई नमर्दी भले,
यू सुन बात औरत की पड़ते गले।

मुसाफ़िर मरे घर कने खोल राज़,
तो इस खून······ ······होय दराज़।

यू सुन शाहज़ादे कूँ खन्दा[5] लग्या,
फिर उस जान के दिल कूँ दंदा लग्या।

हँस्या की तूँ सच कह बहाने यूँ छोड़,
सो औरत कूँ याँ थे दिया हूँ की दौड़ ?

---

१ जवाब, उत्तर २ बुरा, गंदा, अपवित्र ३ कुत्ता ४ जलील ५ हंसी

देख्या शाहज़ादा जूँ इसका तलाश,
दिया इसकू सौगन्द न करना के फ़ाश ।

कह्या येक दारू हुआ मुँज कूँ दस्त,
के थी वह सुलेमाँ ख़ज़ीने[1] की बस्त ।

वो दारू मैं खाया सो ख़ुश तन हुआ,
ज़बाँ सब जनावर का रोशन हुआ ।

कह्या बैल गिदड़ा किए यूँ बिचार,
सो इसके बदल में हँस्या था दो बार ।

वहाँ थे कुत्ते कूँ उठ्या मुर्ग़ बोल,
सो क्यूँ ना हँसूँ बात सुन यू अमोल ।

के मुर्ग़ा होर कुत्ता होर बैल होर ख़र[2],
कह्या इनके अहवाल[3] सब सरबसर ।

······पशेमाँ हुआ मर्द अत,
समज मुज न था कर मंग्या माज़िरत[4] ।

ख़ुशहाली सूँ बैठे समज कर दो तन,
सो इतने मने ल्याय औरत लखन ।

न था बात का कुच उसे यो समज,
मर्द तीन सौ लख देव कर लाई दहज ।

कह्या मर्द ना पड़ गले रह तूँ चुप,
बजिद[5] देख उठ वो लिया खप-खप ।

जो देख्या के बैठी ग़ोग़ा[6] समेत,
सो शान्याँ में दस पाँच खिंचा जो बेत ।

कही जब वो चुरके लगे ख़ूब दस,
बलागी न बोल्या तो इतना च बस ।

१ ख़ज़ाना २ गधा ३ हाल का बहुवचन ४ क्षमा मांगना ५ मजबूरी से ६ समूह ।

देख्या शाहज़ादा अपड़ती है लत,
छुड़ाया जो आ दरमियां कर मिनत।

हरेक बात औरत की ना सुन अज़ीज़,
के उस अक्ल में नईं है अक्सर तमीज़।

चले मर्द औरत के घर के मनें,
जो नुक़सान अछे उसके जम पैं मनें।

न सुन बात औरत की बद हैं बरी,
अगर ख़ूब अछे बी शुक्र की छड़ी।

······ ······ था शाहज़ादा वहाँ,
किया ख़ूब हिमानी[1] भर फिर वो जवाँ।

वहाँ थे गया शाहज़ादा तना,
कह्या अब मवाफ़िक़ नहीं याँ रहना।

ल्या चा खें दिन सो उन थे रज़ा,
देखो काँ थे काँ लग ··· ···।

१ थैली।

## रफ्तन शाहज़ादा पैश आबिद व राह नमूदन ऊ[1]

चल्या शाहज़ादा वहाँ थे जो उट,
नदी के किनारे जो मारग थी टुट[2]।

के दिन रात चलता अछे बाट वो,
हरेक जा उलंगता[3] क़त्अ घाट वो।

पड़्या जा कुबल यक जंगल मने,
न था पान बन भूक कूँ बल मने।

सो इस धात मुश्किल अथा चार माह,
मशक्क़त सूँ हर वज़ा चलता था राह।

फ़लक थे भोत सोसा महनत जफ़ा,
देख्या यक बयाबाँ के था बासफ़ा[4]।

दिस्या उस में यक कोह नादिर निछल,
लगे झाड़ मेवे के हर जिन्स फल।

अथा कोह पर येक कुदरत सो ताक़,
किया उस मने येक आबिद विसाक़[5]।

सो वो देख कर शाहज़ादे का मन,
दुख्या के नमन था सो पकड़्या अमन।

बहुत अजिज़[6] सूँ जाके पकड़्या क़दम,
कह्या "देख दीदार[7] पाया हूँ दम।"

दुखिया शाहज़ादे कूँ आबिद अपैं,
नवाज़िश सूँ पूछा वो नाँवँ अपैं।

के "तूँ कौन होर काँ ते आया है कह,
सो मुज आँख तल तूँ दिसे नस्ल[8] शाह।"

१ शहज़ादे का आबिद से रास्ता पूछना २ किनारा ३ पार होना ४ साफ, पाक ५ रहता था, आश्रय था ६ आजिज़ी से ७ दर्शन करके ८ सन्तान।

कह्या शाहज़ादा "हुआ अब फ़क़ीर,
के मुज बाप था सख़्त ताजिर कबीर[1]।

उनो सब कूँ मार्या व रब[2] जलील,
व मुज दिल में बाया[3] देखूँ अस्ल नील।"

सुन्या शाहज़ादे ते आबिद यू हर्फ़,
कह्या "तूँ किया उम्र ग़ुर्बत में सर्फ़।

नको झूट कह तू मेरा पन्द है,
तूँ मशरिक़ केरे शह का फ़र्ज़न्द है।

दिया मुज हरेक बात का हक़ शरफ़[4],
भई तुज बिन न आवेगा कोई इस तरफ़।

देख्या जो करामात का है धनी,
पकड़ पाँव बोला "ए मुनअम[5] ग़नी[6]।

ख़ुदा तुज कूँ देता हरेक कशफ़[7] राज़,
मुजे बाट दिखला के कर सरफ़राज़[8]।"

सो आबिद कह्या हक़ देवे तेरी दाद,
वले मुन कहे त्यूँ तूँ पावे मुराद।

यहाँ लग ज़मी ते सो आसान आय,
है अंग दरया क्यूँ के जाने कूँ पाय।

अगर तूँ मँग जाय दरया अलंग,
तो इस रूद कड़के[9] पै अछते कुलंग।

सो हरेक का है ऊँट के नाद[10] धड़,
तूँ ग़फ्लत सूँ जा उसके पाँवँ पकड़।

......पाँवँ पकड़ेगा उसके तो खींच,
चले लेते दरया उपर तुज कूँ बीच[11]।

---

१ बहुत बड़ा २ ईश्वर ३ विचार किया ४ इज्जत का मिलना ५ धनी ६ सम्पन्न ७ जाहर करना ८ अहसान कर ९ किनारा १० तरह ११ वहाँ।

वहाँ होय यू दरया का पानी कमीं,
सो पैलाड़[1] पौलाद[2] की है ज़मीं।

वहाँ थे बमहनत सूँ जावे हज़ार,
दिसे तुज रूपे की ज़मीं होर झाड़।

वहाँ थे भी ना छोड़ अंगे[3] होना,
के जाँ लग अछे भुँई[4] झाड़ा सोना।

वो झाड़ाँ पै धरतें यूँ मुर्ग़ आशियाँ[5],
अपस तें वाँ यूँ सट जो होना होय ज़ियाँ।

जूँ उलंगे[6] तूँ इतने मलालत[7] सेतीं,
शुक्र कर के अँपड़या सलामत सेतीं।

दिसे टोक नादिर वाँ मैदाँ तुजे,
ख़ुशी होय हासिल बेपायाँ[8] तुजे।

वो मैदाँ में है येक गुम्बद बेनज़ीर,
के जिसमें थे बहता है कुदरत सूँ नीर।

तुरत जा नज़ीक जूँ के गुम्बज़ दिसे,
जैसे आरसी सफ्क़[9] देवाँ[10] उसे।

के है इस मने येक कुबे[11] ज़रब,
यू चार नदियाँ जिसते काड़या[12] है रब।

जो यक रूद नील होर दुसरा फ़ुरात[13],
सेयुम[14] दजल[15] चारुम सो जैहूँ[16] नपात।

नज़र जो पड़े वाँ के यू भेद तुज,
सो हासिल हुआ जान उम्मीद तुज।

१ परे २ लोहा अर्थात् लोहे की तरह सख़्त ३ आगे ४ भूमि ५ घोंसला ६ उलाँघ कर, बड़े ७ कष्टों के बाद ८ अनन्त ९ छत १० बना ११ गुम्बद १२ निकाला है १३ एक नदी १४ तीसरी १५ एक नदी १६ एक नदी।

...... ...... ...... ......
...... ...... ...... ......

...... ...... ...... ......
...... ...... ...... ......

...... ...... ...... ......
......सूँ कर मुज कफ़न होर दफ़न।

......ज़ौक़ सूँ आप राह,
जिधर मन मँग जा ख़ुदा की पनाह।

अगर ल्याय यू सब वसियत बजा,
तेरा होय हासिल नीयत बजा"।

सो आबिद कह्या सब उसे खोल यूँ,
लग्या शाहज़ादे कूँ माकूल यूँ।

हुनर बाट जाने का पाया वुने,
सो आबिद कने ख़ुश मुसराया[1] वुने।

के जिस वज़ा सूँ पन्द आबिद किया,
इसी पन्द सेती वहाँ लग गया।

अजब येक गुम्बज़ दिस्या अक तल,
जिसूँ चार तक़सीम हो बहता है जल।

दिस्या इस मने येक क़ुबा नफ़ीस,
किया फ़िक्र भतगँ[2] जाने कूँ पेश।

जो इसके भितर जब सख्या येक डग,
सो हातिफ़ कह्या याँ ते गर्दान पग।

यहाँ लग तूँ आया सो दिल नहीं भग्या,
जो क़ुब्बे[3] कने जावँ कर के लग्या।

१ मुस्कुराया २ बहुत ३ गुम्बद।

यू आसमान के चर्ख़ का याँ है कल,
तूँ जाने थे अलबत होएगा ख़लल।

······ख़ुश ल्या होर हुआ······,
······ ······ ······ ······।

किया पाक उस टार कपड़े वो अंग,
दो रकात[1] किया ··· ··· ।

किया दाग़ नाख़ाँ ख़ूशे में इस,
तो आविद शरीक होय तोशे में इस।

इसी क़स्द सूँ आ किया वाँ मुक़ाम,
जे झाड़ाँ पै रई टो जनावर मदाम।

देख्या यक जनावर कूँ महकम क़वी[2],
वफ़्त फ़हम जाने का पकड्या तवी।

इधर मुर्ग़ चारे के तईं जो उड़्या,
के इस पाँवँ काँक हो कर चड़्या।

सलामत सूँ आया कर इतना गुज़र,
मगर था यू आबिद ज़बाँ का असर।

जूँ अंगे हुआ पाँच यू आसब[3] थें,
मिल्या येक बूढ़ा शेख़ वाँ ग़ैब थें।

कह्या यू सूँ [चुम] शाह के हात कूँ,
"भेज्या तुज कन आबिद मुलाक़ात कूँ।

दिया है यदी मेव तुज देव कर,
सूख्या बेग दी रख नको लेव कर।

सख्या मुख में वो सेब ना फ़हम केट,
बग़ल थे वो ख़ुशा[4] हुआ तब नापैद[5]।

१ नमाज पढ़ना २ मोटा-ताजा ३ जादू ४ गुच्छा ५ शैतान।

कह्या हँस के क़हक़हे मैं इबलीस[1] हूँ,
सो जन्नत थे आदम कूँ काड्या देकूँ।

के तुज हात अंगूर था भिश्त का,
यूँ देना दग़ा काम है मुझ ज़श्त का।

दग़ा इस थे देता हूँ मालूम अछो,
तुमें खायँ होर मैं सो महरूम अछो।

किया शाहज़ादा सो लानत बजाँ,
चल्या वाँ थे आबिद का मंजिल था जाँ।

देख्या बात सब सच है इस मौत का,
तो ल्याया वसीला बजा फ़ोत का।

सो इस क़बर का वाँ इमारत किया,
के रह तीन दिन इसकी ज़ियारत किया।

---

१ शैतान।

## बाज़ गश्तन शाहज़ादा अज़ मग़रिब व सवार शुदन ब कश्ती[१]

दिया था जो तौफ़ीक़ उसे दादगर,
फिर्या शाहज़ादा तो इतना सफ़र।

कह्या अब कतारें बियाबान में,
हरेक हाल जाना अबादान[२] में।

इसी क़स्द दरया बँधारे चल्या,
नये कान नाचड़ तलारे चल्या।

सो तिस खाना पानी की शादी न थी,
कधीं इस पै मंज़िल की वादी न थी।

वहाँ के सो फिरते थे······नाग,
थे बकर्यां के कलबां नमन रींच[३] बाग[४]।

हुँडें[५] बोरबच्चे[६] तो वाँ बेहिसाब,
हिरन दूज तईं मारते थे······।

देख्या शाहज़ादा हराँ (?) गुदाज़[७],
मनाजात[८] केता के ऐ बेनियाज़[९]।

बलायाँ कब्ल में पड़्या हूँ सम्भाल,
मुजे इस बड़े शर थे बेगी निकाल।

सो कर क़स्द उस डरते बाहर हुआ,
वले जा यक ऐसा वाँ ज़ाहिर हुआ।

वाँ खाने न था कुच हरयाली बग़ैर,
कधीं झाड़ के पात सूँ होय सैर।

कधीं सई[१०] करने पै मछली मिले,
सो खुश होय नेमत जो सचली मिले।

---

१ शहज़ादे का मग़रिब से वापिस हो कर किश्ती में सवार होना २ आबादी में ३ रीछ ४ शेर ५ घूमे ६ चीता ७ डर जाना (?) ८ दुआ करना ९ ईश्वर के लिए, अर्थात् जिसे किसी चीज़ की ज़रूरत न हो १० प्रयत्न।

कधीं भूक सूँ जीव होता खफ़ा,
सो इस धात यक माह सोस्या[1] जफ़ा[2]।

जब इस हाल पर रहम कीता करीम,
भया लुत्फ़ का उस उपर तो नसीम[3]।

सो मुश्किल जंगल था सो वाँ थे सर्या,
किनारा आ लग्या दीखने कूँ दर्या।

जब इस का थण्डा बाव आने लग्या,
सो कड़के पै बैठा निभाने[4] लग्या।

के था खुश तमाशा वहाँ मौज कूँ,
हरेक जाके गोया लगे ओज कूँ।

यकायक वो मौजाँ में किश्ती दिस्या,
कह्या खुश हो अब मैं बहिश्ती दिस्या।

वले यक हिकमत सूँ करना है फ़न,
ता हर क्यूँ खबरदार होएँ अनन[5]।

बंबू यक पैदा वाँ सारा किया,
सो चादर उसे बँद फरारा किया।

जो देखा के जाता जहज़ ज़ोर सूँ,
उचा यू हिलाने लग्या शोर सूँ।

जहज़ में थे यक शख़्स दिख्या यू ढ़ाल,
सो बाज्याँ सो बोल्या यू क्या है मजाल?

के ऐसे जंगल से देखो कोन अछे,
याँ क्यूँ ल्या सख्या इस कूँ गर दूँ[6] उसे।

बहुत घाबरे हो के देखो सभीं,
भेजे कोन है देखो संबक[7] पतीं।

---

१ गुजरना, बीतना २ कष्ट ३ प्रातः कालीन पवन ४ झाँकना ५ प्रसन्न ६ भाग्य
७ छोटी किश्ती, नाव।

संबक दौड़ आया जूँ कड़के उपर,
नज़ीक आ किये रहम लड़के उपर।

कहे कूँ है तूँ जो इस सीन में,
यकेला है ऐसे जंगल बीच मे।

कह्या शाहज़ादा "इलाही मुजे,
फिरता यूँ खाही नखाही[1] मुजे।

वो क़ादर बग़ैर कौन कुदरत सके,
के मशरिक़ ते मुज ल्या मग़रिब रखे।

छुप्या कर अपन पादशाही नसब[2],
कह्या खोल काम काज गुज़रा सो सब।

मशक्क़त दर्या का जे था बाह में,
जूँ सोस्या[3] जफ़ायाँ[4] जंगल घाट में।"

वो यारॉ सुने जूँ के चुन हाल उसे,
चले लेके संबक में तो घाल उसे।

हुए महरबाँ देक सुन व साज़ पर,
इज़्ज़त से चढ़ाये उसे झाज़ पर।

सब उसमें थे सौदागराँ मुहतशम[5],
उनो जब सुने उसका महनत अलम।

कहे यू "खुदा का है हिकमत सगल,
के इस सीन[6] में यूँ फिरे कोई निकल।

महर आके सब दस्तगीरी करे,
सब बख़्शीश की खातिर नफ़ीरी[7] करे।

अपस में अपै किए हरेक का मता,
दिने छ हिसा[8] उस जेता होय वेता।

१ बेकार ही, फिज़ूल २ बाप दादा की परम्परा को बताना ३ गुजरा, बीता ४ मुसीबतें ५ बड़े-बड़े; धनी ६ वाक़यात ७ चाकरी ८ हिस्सा।

के जिस क़िस्म का जिन्स था जिस कने,
छे तक़्सीम गुन येक देवे विने।

किय शाह वो सब अपस सिलक में,
तो सार्यो थे फ़ाज़िल हुए मिल्क में।

यता माल हुआ ना सके कोई गिने,
सो घोड़े आरक़ी दिया हर कने।

के वो माल घोड़े सब अपने कर्या,
वो हुजरे[1] दिए थे सो उसमें धर्या।

सो हासिल हुआ कर अपस मद्दुआ,
था दिन-रात इन सब कूँ करता दुआ।

के चन्द रोज़ मिल यूँ इनमें गुम्या,
जूँ खीश इनों का उनों में जम्या।

खुश्याँ सात यक माह करते अनन्द,
जो थे शाहज़ादे सूँ मिल सूद मन्द।

क़ज़ा आवाँ करने मंग्या आप बल,
हुआ चर्ख़ गरदिश सो सब पर कबल;

के यक रोज़ थे भाज़ में सब ये यार,
जो दोपहर के वक्त हुआ अन्दकार।

मेहूँ बाव सूँ मिलके चौफेर राद,
सो तूफ़ान अवल मौत था इसके बाद।

भोत ज़ोर सेतीं यूँ किश्ती उड़ी,
चली बाव पर जूँ के उड़ती गड़ी।

इसी भात सूँ सात दिन था अज़ाब,
फटा आठवें दिन जूँ किश्ती हुबाब।

1 मकान का एक हिस्सा

दरया पै उड़्या था मू शीशे के नाद[1],
फटा फिर कूँ लग शीशे के नाद।

अजल का जो किश्ती कूँ तीर आ लग्या,
तो यक तिल ने कई लाख आलम डुब्या।

सभी खल्क कूँ मौत मार्या गंडल,
वले शाहज़ादे की नईं थी अजल।

जहज़ फट डुबे सब किधर का किधर,
के दो चार गोतें खा झाड़्या जो सर।

नज़िक था जो दम दाट करना फिरें,
जो इतने में देख्या यो घोड़े तिरें।

बहुत हात पग मार कीता ज़हत,
सट्या आके तो बेग घोड़े पै हत।

उमस सूं चड़्या पीट पर इस लपक,
सो घोड़ा चल्या रुख़ जज़ीरे पै रक।

ले आया पहड़ पर खुदा के हुकूम,
दो घोड़ अपैं आए बाज़े हो गूम।

के धरता है कुदरत वही ज़लजलाल[2],
जो हर यक बला थे रखे बेज़लाल[3]।

सके तल मने पादशाही बख़श,
रखे खुश यकस कूँ के माही बख़श।

कभी आदमी तें दे माही खुराक,
कभी होय माही सूँ आदम हलाक।

कज़ा कूँ फिर आने सकत नईं किसे,
के मछल्याँ कूदे सब कूँ काड़्या इसे।

१ समान २ ईश्वर ३ अवनतिराहित।

पहड़ पर चड्या शाहज़ादा खुश हो,
कह्या जी ऊन लग अब ये किश्ती नको।

कम कुल्ल अछे सार होय जो कोई,
मलग मौत की इस कह्या जाए डेई।

न जागा है कहीं न्हाटने दो क़दम,
कधीं अब न बैठूँ के खाया क़सम।

## सवार शुदन शहज़ादा ब कोह के दुख़तर पादशाह मग़रिब बूद

शफ़ख़त[1] सूँ जो उसकूँ देख्या अला,
बला सब गुज़र वक्त आया भला।

नज़ीक जा कर देख्या है जूँ कोह काफ़,
है उस पर जनावर कूं चढ़ना मुआफ़।

चल्या क़स्द[2] कर जूँ कमरगाह लग,
के दस जा पै बैठ्या हर सू माँदा हो पग।

वाँ जागा दिस्या यक सफ़ा टार ख़ुश,
थे हर जिन्स के झाड़ पर बार[3] ख़ुश।

वो झाड़ाँ का मेवा सो खाया पेट भर,
कह्या "मैं याँ चन्द रोज़ हूँ ज़ौक़[4] कर।"

बहरहाल उस टार गुमता अछे,
न कोई यार था उस जो हेता अछे।

पहड़[5] के किनारे तो दिन रात वो,
चलाता था मेवे पै औक़ात वो।

के जो रात होवे तो भोती च डरे,
मबादा[6] जनावर कोई ज़ाए[7] करे।

नमाशम[8] चढ़े देक ऊँचा दरख़्त,
बँदे डाल सूँ अपसें खोल सख़्त।

के चन्द रोज़ इस धात सूँ वाँ टिक्या,
सो मेवे खाने थे जीव उसका भाग्या[9]।

कहाँ लग यू मेवा सो खाना हिबे,
सो क्यूँ ना करूँ एक घोड़ा ज़िबे[10]।

१ महरबानी २ इरादा ३ फल ४ इच्छा से ५ पहाड़ ६ सन्देह, शायद ७ मारे, हमला करे ८ सायंकाल ९ थक गया १० जबा करना, काटना।

पकड़ यक घोड़े कूँ काट्या पछाड़,
कबाबाँ किया सब वो हीड़े[1] कूँ काड़।

के पत्थरयाँ उपर सब वो भून्या कबाब,
सो जो जीव मंगे तो वो खावे शिताब।

कधीं फल-फलाली कधीं खा हड़ा,
रहे फाड़ पर इस वज़ा सूँ पड़ा।

कह्या ऐ ज़माने अजूँ क्या है हट,
हूँ तनाही थे हो मुकद्दर निपट।

अपस में अपें कलकला[2] यूँ उठ्या,
के सुन जनावर का सीना फट्या।

यू बिल्क्याँ[3] जफ़ा अपने कारी उपर,
किया रहम हक़ इसकी ज़ारी उपर।

यू ना हो के मदत कूँ थोड़ाच था,
यू मग़रिब की बेटी का जो रात्र था।

तो इस दिल में आया जो उपर चढूँ,
हरेक धर नज़र कर अक़ल कुच करूँ।

उपर के ये मुज तईं पड़गा नज़र,
भोत दूर सूँ झाड़ जावे जिधर।

चड्या दिल मने रक यू उमीद व आस,
चल्या मुश्तरी रास जुहरे के पास।

मशक्क़त सेतीं जाके अपराल[4] अप,
कह्या क्या है देखूँ परे याँ मैं छुप।

रौशन देक याँ का मुंजे आय बीम,
यो जाग पे अलबत्त है कुछ तो अज़ीम।

१ गोश्त, मांस २ शोर ३ चतुरता से ४ उपर की तरफ़।

यू कह कर वंड़ झाड़ के पेड़ कन,
सो हैरान हो बैठ्या के क्यूँ रहे जून।

के मग़रिब की बेटी कूँ ... ... ...,
रख्या सीमुर्ग़ था ... ... ...।

वो हैवाँ जनावर क़ज़ा सूँ छुटे,
सितम लाके तक़दीर उसे याँ सँटे।

अन्देशे में था यू के क्यूँ होय नसीब,
सो इतने में ऊपर थे सट दी वो ऐब।

के जूँ सेब आ कर पड़्या गोद में,
सो यूघा बरा हो लग्या सूदने।

कह्या झाड़ यू तो नहीं सेब का,
पड़्या क्यूँ यू ख़ुशा अजब ग़ैब का।

लग्या देखने झाड़ उपर रुख़ बाँद,
के डाल्याँ में यूँ थी अबर में (जूँ) चाँद।

सो इस माह रुख़ पर नज़र जब किया,
के निर्जीव था जीव आ तब जिया।

तो वो सेब ले कर उठ्या ऐश सूँ,
लग्या बात करने अपन ख़ीश सूँ।

ख़बर सीमुर्ग़ सुन्या जूँ यूँ जान,
कह्या "बोल किया ऐ नादाँ वाँ।

दीवानी तूँ आप कूँ वो नेकी किये,
के सीमुर्ग़ के आदमी त्यूँ जिये।

तूं बालिग़[1] अहै पन नहीं तुज अक़ल,
है मुज नाद नूँ आदमी का नगल।

[1] जवान युवक।

सुन अन्देश कर देख वज़ा आपका,
मुज कुच न निस्बत है इस बाब का।"

सुनी शाहज़ादी ज्यूँ उसका बचन,
कही "तूँ कहे सुन न फ़ाम होय हमन।

नहीं जानती हूँ मैं आदमी सू कह्या,
ये तीन फ़ाम होता मुज तूं कह्या।

मेरा अक़्ल इस बिन सो बूजा नहीं,
के सीमुर्ग़ तें जगमें दूजा नहीं।

जकुच तूँ कता सो दिसे झूट वो,
न हुई बात जो फ़हम है फूट वो।

मैं तुज तूँ सीमुर्ग़ की बिपता[1] नहीं,

तो सुन शाहज़ादा कह्या यूं फिरा,
तुज ख़ब समज्यावता हूँ थिरा।

.........जान सूरत है तूच,
बेजाने के तुमन अपस तईं न बूज।

कह्या एक भी सिकलाऊँगा तूज पन्द,
के ताख़ूब मालूम हो उसका चमन्द।

सो पूछ्या के सच बोल ऐ मुन्धरी,
है हूर बहिश्त या इरम की परी।

कह तूँ कौन होर यां रहे क्यूँ सदा,
मगर तुज सख्या धन उपर थ ख़ुदा।

नको तूँ छुपा (मुझ) सेती बात कुच,
मुरादें ब दिल ले करो मुंज लुच।

[1] विपत्ति।

सुनी बात यू सब अपै हूज़ाद,
कही कौन है तूँ पूछे क्या मुराद।

के सेमुर्ग़ की मैं हूँ बेटी अमोल,
के तूँ कौन हौर यॉं की आया है बोल ?

के सेमुर्ग़ आकर दुखावे तुजे,
छुपे ना अगर यॉं तो खावे तुजे।

ख़बर सेमुर्ग़ का सुन्या जूँ यो जान,
कह्या बोल क्या ऐ नादान दान।

दीवानी हो तूँ आप कूँ इसकी गिने,
के "सेमुर्ग़ कई आदमी त्यूँ जने।

तूँ बालिग़ अहै पन नहीं तुज अक़ल,
है मुज नाद तूँ आदमी का नसल।

सो अन्देश कर देख वज़ा आप का,
तुजे कुच न निस्बत है उस बाब का।"

सुनी शाहज़ादी जूँ इसके बचन,
कही "तूँ कहे सो न फ़ाम होय हमन।

नहीं जानती हूँ मैं अदमी सो क्या,
के नई फ़ाम होता मुजे तूँ दिखा।

मेरा अक्ल इस बिन सो बूजा नहीं,
के सेमुर्ग़ थें जग में दूजा नहीं।

जो कुच तूँ कता सो दिसे झूट वो,
न होय बात जे फ़हम है फूट वो।

न निपजी तूँ सेमुर्ग़ के पेट थें,
न निकले कंचन कई लोहे कीट थें।

तो सुन शहज़ादा कह्या यूँ फिरा,
तुजे खूब समज्यावता हूँ धिरा

मेरे सार की जान सूरत है तूज,
बेगाने के नमने अपस तें न बूज।

कह्या यक भी सिकलावूँगा तूज पन्द,
के ताख़ब मालूम होय इसका छन्द।

जो सेमुर्ग़ आवे तो दिलगीर अछ,
नज़ीक आ जो बैठे तो नक़शेर अछ।

सो कह तूं अछी लग रही ज्यूँ ख़ुशहाल,
नमा गये पे यो जीव पाता मलाल।

के तनाही मैं जीव संग ना रही
रहम सें मुजे ल्या दे एक आरसी

ता सूरत अपस का निहारती अछूं,
वक़्त आप हर कूं गुमानी अछूं।

यू माने सेती तो मंगा आपना
के तू बात देख बूं यो सच आपना,

वो ल्यावेगा जो आरसी तुज पास,
यू हम जिन्स का तो तूं पावेगी वास।

कही आरसी क्या सो जानूँ न मैं,
मंगा क्यों के जिस तईं पछानूं न मैं।

कह्या शाहज़ादा के तूं चुप भंग,
तुजे ल्या के देने न करसी दरंग।

भई पूछा के सेमुर्ग़ आता है को
के वाजिब है छिपना वो आने के तो

कहीं "आवता है वो पहली घड़ी
अछे यक पहर मार तो लग दड़ी।

के यक पहर कूं जो वो फिर जायगा,
तूं ख़श फिरता दूसरी सबा अयगा।"

सुन्या शाहज़ादा जूँ यो सब बिचार,
वक्त फ़ह्म करवाँ ते उतर्या तलार।

रह्या आके अव्वल जाँ जागा अथा,
वले इश्क़ इस धन का ··· ···।

वहाँ शाहज़ादी में था इज्तराब,
के को आप मुज मुर्ग़ पाँऊँ जवाब।

थी इस फ़िक्र सेमुर्ग़ आया जो दौड़,
सुलेमान की चाकरी थें बहोड़[1]।

दिया मेवा हर जिन्स ल्या पेश सट,
वले यू कही त्यूँ थी दिलगी रज़ट।

जो देख्या के बैठी है मखमूल यो,
लग्या पूछने मुद अपस भूल वो।

के किस बात थे तू यू ग़मागीन है,
तूँ अलहक़ मुज ईमान होर दीन है।

अगर कुच तेरे दिल पे गुज़र्या है कह,
मुजे खुश न लगता नको यूँ तू रह।

कही शाहज़ादी मुजे याँ सो तुम,
यकेली सटे तो करे ग़म हुजम।

तुमे गये पै तनाही सूँ मैं मरूँ,
इसी थे यक आरदास[2] तुम सूँ करूँ।

मुजे ल्याके यक आरसी देव बस,
गुमे वक्त ता देकती रहूँ अपस।"

कह्या अगर तूँ मँगतीहै अलबत्ता सच,
इसी तिल में ल्या देऊँ खुशहाल अछ।

यू कह कर गया वाँ थे परवाज़ तो,
सो शहराँ धुँड्या फिर के कइ लाग गो।

१ लौटना, वापिस होना २ प्रार्थना।

# शब्द-सूची

अक्द=निश्चय
अक़रब=वृश्चिक
अछता=रहता है
अछसी=रहेगा
अजज़=आजिज़ी
अजल=सृष्टि; मौत
अजाँ=पश्चात्; बाद
अज़ीज़=प्रिय
अज़ीम=श्रेष्ठतम
अजूँ=अभी तक
अंझू=आंसू
अडनाँव=दूसरे नाम से
अता=अब, इतना
अताल=अभी
अथियाँ=थीं
अदल=न्याय
अंग=आगे
अनन=प्रसन्न
अनीदार=बिछाने की चादर
अपड़ावने=पहुँचाने, पकड़ाने
अपराल=ऊपर की तरफ़
अफ़आल=क्रिया
अबद=प्रलय
अबलक़=मिश्री
अबलोच=मिश्री
अबादान=आबादी
अम्बार=भरना
अम्बारियाँ=हाथी पर बाँधे जानेवाली अम्बारी
अमद=ईश्वर
अमर=काम
अमल=अच्छे काम
अमान=एक राजा का नाम जो नदी में बह गया था
अभाल=बादल
अमोलक अमूल्य
अयाँ=प्रकट
अरज़ाँ=रास्ता
अरड़ावता=तड़कता, पुकारता
अरवाह=आत्मा: रूह का बहुवचन
अर्श=ईश्वर का निवास स्थान
अरहम=रहम, कृपा
अलम=रंज, दुःख
अलमास=हीरा
अलहम्दुलिल्लाह=सब तारीफ़ अल्ला के लिए है
अला=ईश्वर
अली=उन्नतिशील
अलीम=जानकार
अलेक=सलाम
अलोनूर=बहुत ज्यादा प्रकाशवाला
अवखनी=अच्छी लगती
अवलीच=अव्वल ही
असीर=क़ैदी, शिकार
असील=शीलवान
अहतयाज=आवश्यकता
अहमीर=लाल
अहल=अच्छा
अहवाल=हाल का बहुवचन
आजिज़ आजिज़ी
आयत=कुरान की आयत
आमिल=आचरण करनेवाला
आमेज़=मिलना
आर=बेकार

अरदास=प्रार्थना
अरूस=दुल्हन
आँव=आम
आशियाँ=घोंसला
आसेब=जादू
इताब=क्रोध
इबलीस=शैतान
इमाम=तसबी के समय फेरनेवाली माला के अन्त का एक लम्बा दाना
इरम=स्वर्ग
इल्हान=ध्वनि
इशतहा=भूख
इशरत=आनन्द
इस्म=नाम
उचालें=उठावें
उलंगता=पार होता
उलंगे=लांघ कर
उलाले=छाले, उत्साह
ऐन=आँख
ऐसी=एक पैगम्बर जिन्हें रूहे अल्ला भी कहते हैं
कऊँवा=कहलवा कर
ककर=कह कर
कचवार्ती=शरमाती
कज़ह=इन्द्र धनुष
कज़ा=तक़दीर, भाग्य
कड़कया=किनारा
कता=कहता
क़दर=भाग्य
कधन=अग्नि
कन=हर तरफ़
कन=से
कने=से
कब्ल=एक पक्षी
क़वी=शक्तिशाली
कबीर=बहुत बड़ा
क़य्यूम=क़ायम रहनेवाला
करतार=ईश्वर
करदन=करना
करम=कृपा
करम=मंडल
क़रार=चैन
करीम=दाता, कृपालू
कल=बुद्धि
कलकला=शोर
कल्लाश=फ़क़ीर
कशफ़=प्रकट होना
क़स्द=इरादा
क़स्साब=बैल काटनेवाला
कह्हार=गालिब, सब से बढ़ कर क्रोधी
क़हर=क्रोध
कहकशा=आकाशगंगा
क़ादिर=बनानेवाला
क़ाफ़=एक पहाड़
क़ाबिज़=परेशान करनेवाला
कामिल=अकलमन्द
कार=काम
कालब=नाले
कितल=थोड़ी देर में
किने=किसे
किरमज़ी=एक रंग
किश्त=खेती
की=क्यों, कहीं
कुनरी=हूर, अफसरा
कुदनी=परी, अफ़सरा
कुद्दूस-पवित्र
कुन्दनी=कष्ट होना
कुफ़्फ़ार=क़ाफ़िर का बहुवचन

कुबे=गुम्बद
कुमाश=स्वभाव के प्रकार
कुल=मिला कर
कुलंग=एक पक्षी
कुलाबरे-जंज़ीर
कुहतूर=तूर नामक पहाड़
कूँ=को
कूत=भोजन
केरे=के पास
कोट=दीवार
कोले-गीदड़
खज़ीने=खज़ाना
खन्दा=हँसी
खन=खण्ड, पृथ्वी
खबीर=खबर रखनेवाला
खर=गधा
खरीत्याँ=थैलियाँ
खल्क=जनता
खलक़=खुदा की पैदा की हुई चीज़ें
खसलत=स्वभाव
खलासी=छुटकारा
खलील=मित्र
स्वान्दन=पढ़ना
खसलत=चरित्र
खात्मा=समाप्त
खामाँ=युवक का बहुवचन
खार=दुःखी; ज़लील
खारी=बदनामी
खाला=मौसी
खिंग=घोड़ा
खिज़र=सिकन्दर की फौज का एक सिपाही
खिज़ाँ=पतझड़
खिलवत=एकान्त स्थान
खीमे=डेरे
खीश=आत्मीय
खुम=बहुत
खुमार=नशा
खुर्रम=आनन्दित
खुरश=दुःखी होना, गोली
खुरसान=एक स्थान
खुसरवी=बादशाही
खुये=वीरता
खूरेज़=खून करनेवाला
खूशा-गुच्छा
खूसे=समूह
गज=हाथी
गज़ब=क्रोध
गंज=खज़ाना
ग़नी=सम्पन्न
गफ्फार=बख्शनेवाला
ग़फ़ूर=बख़्शनेवाला
गम्ज़ा=नखरे दिखाना
ग़र्क़=डूबा हुआ
गज़वन्द=याचक
गर्बे=उद्विग्न
गँवार=भूला
गाँडे=गन्ना
गाब=गर्भ
गाल=गड़बड़
ग़ालिब=किसी को वश में करना
गावदी=गँवार
ग़ाशा=कालीन
गुजन्द=बिना कष्ट के
गुड़=चुम्बन
गुदाज=डर जाना
गुफ़तन=कहना
गुल=फूल

गुलवाड़ी=रथ
गुश्तन=मुठभेड़
गुहर=मोती
गूँद=विचार करके
गैब=गुप्त
गो=गेंद, गोला
ग़ोगा=शोर
गोहराँ=मोती
चक=ज़रा-सा
चिकल=दबा कर
चितार=उतार कर, चित्रित करके
चितारी=चित्रकार
चीला=तीर
चुक=थोड़ा
चुन=गिन कर
चुफत=चालाक
चुरगते=बोलते
चूक=त्रुटि
चौफेर=चारों तरफ़
चौसार=हुश्यार
छन्द=धोखा, फरेब
छुर=छल
बट=शठ, बुरा
जड़त=जड़ाऊ
जतारे=जानना
जपै=छिपे
जफ़ायाँ=जुल्म
जब्बार=सख्ती करनेवाला
जम=जामे जम, जमशीद
जन=सदा
ज़म-ज़म=मक्का के एक कुएँ का पवित्र पानी
जय्यद=नेक, मनमोहक
ज़र=सोना
ज़रगरों=सुनार
ज़रतीख़=ज़रीदार
जरबफ़त=जरीन कपड़ा
जलज़लाल=ईश्वर
जलाजल=एक मन्त्र
जलील=ईश्वर
जस=यश, कीर्ति
ज़हरा=एक नक्षत्र, एक गायिका का नाम
जहाँगीर=संसार भर का विजेता
जाँ=जान
जाए=मारे, हमला किए
ज़ाद=सामान
ज़ाफरां=केसर
जाब=उत्तर, जवाब
जामे=जमा करनेवाला
ज़ार=कष्टदायक
जामी=जाएगा
जिबराल=एक फरिश्ता
ज़िबे=ज़बा करना, काटना
जिश्त=खराब
जुज़=पुस्तक
जुज़मा=मज़बूत
जुल्फ़क़ार=हज़रत अली की दो धारा तलवार
जुहल=एक ग्रह, नक्षत्र
ज़ुबां=जीभ
जेर दस्त=अधिकार में
जोड़ने=कड़ी
जोता=योजना
जोना=रेगिस्तान
ज़ौक़=आनन्द
ज़ौक़=इच्छा, शौक़ से
झल=आग

झुंझलाना=क्रोधित
झूटना=झूठ बोलना
झोरने=झेलने
टुट=किनारा
तक़वा=भरोसा
तक़वे=परहेज़गारी
तक़सीर=अपराध
तग़य्युर=बदल गया
तग़ाफ़ल=अनजान बन कर
तजल्ली=चमकनेवाला
तर्दा=तत्काल
तथाँ=तब से
तन्हाच=अकेला ही
तफ़लों=ढोल
तफ़ावत=फ़र्क़
तबक़=तब खण्ड
तबच=तश्तरी, किश्ती
तमा=तृष्णा
तर्ब=गाना
तलपट=नष्ट करना
तलासे=तलाश किए
तव्वाब=पश्चात्ताप को स्वीकार करनेवाला
तवक्कुल=ईश्वर पर विश्वास करना
तवाफ़=चक्कर करना
ताऊत=ताईद में
ताख़ीर=देरी
ताजिर=सौदागरी
ताज़ीम=ख़ातिर तवाज़ो
तालीमख़ाना=मल्लशाला
तासीर=गुण
तूल=ज़ोर से
तेग़=तलवार
तौफ़ीक़=मदद, इरादा
थाँब=स्तंभ
दज्जाल=प्रलय के पूर्व आनेवाला प्राणी विशेष
दबीर=कातिब; लिपिक
दंद=शत्रु
दंदी=शत्रु
दर=द्वार
दश्त=जंगल
दस्त=हाथ
दहन=मुख
दहलीज=चौखट
दाऊद=एक पैगम्बर
दाट=जल्दी
दाद=इन्साफ़
दायम=सदा
दिगर=अकेला
दिरम=कुतुबशाही वंश की तत्कालीन मुद्रा
दिलबन्द=स्नेही
दिश्ट=नज़र
दीदार=दर्शन
दीस=दिन
दुम्बाल=पीछे पीछे
दुराही=हुकूमत, दुहाई, डौंडी
दुलदुल=हज़रतअली का घोड़ा
दूक=दुःख
देवा=बड़ा
दोनीम=टुकड़े
दोराना=बड़प्पन
धतर=फरेब
धनक=चमकना
धरत=पृथ्वी
धात=प्रकार
धांव=तरीक़ा

न्हाट=दौड़ कर
न्हास=दौड़ कर
नई=नहीं
नख़्श=क्षमा करना
नख़ाही=बेकार ही
नग्ज़=खूब
नजिस=गंदा, अपवित्र
नदीम=मुसाहब, मित्र
नफ़र=सिपाही, सेवक
नफ़स=मित्र
नफ़ीरी=चाकरी
नमाशम=सायंकाल
नयाज़=नाज़ नखरे
नवाज़ूंगी=कृपा करूंगी
नस्ल=संतान
नसब=पारिवारिक परम्परा को बनाना
नसीम=प्रातःकालीन हवा
नहनयाद=बालक
नाज़िल=देना
नातवानी=कमज़ोर
नाँद=तरह
नादनुक=प्यार से पालना
नाल=जूते के बराबर
नालबन्दी=कर देते हुए
नासिहाँ=नसीहत करनेवाला
निकबती=हिकमती
निकस=निशक
निगहदार=निगाह रखनेवाला
निभाने=झाँकने
निदा=आवाज़
निपज=पैदाइश
निफ़ा=गौर से
निफ़ाक़=जुदाई
नियत=शोभायमान

निहाँ=गुप्त
नुक=थोड़ा सा
नूर=चमकदार
नूराँ=चमकनेवाला
नूह=आदम के बाद का दूसरा पैगम्बर
नेज़ा=भाला
नौखनी=नौ आसमान
नौखेज़=नया, नवीन
पखवे=गोद में
पत्या=भूतकाल की बातें
पत्यारा=विश्वास किया
पितयारा=विश्वास किया
पंजतन=पाँच
अली, महम्मद, फ़ातिमा, हसन और हुसैन
पंत=पूरा
पंद=शिक्षा, नसीहत
पलटी=बदली
पशेमान=दुःखी
पा=हवा की तरह तेज़
पाड़=डाल कर
पातरीं=वैश्याएँ
पामाल=खराब चीज़ों को समाप्त कर देना
पिनाहाँ=गुप्त
पीक=उपज
पीरी=बुढ़ापा
पुंगर्डा=बच्चा
पैलाड़=परे
पौलाद=स्टील
फ़ड़े=पहाड़, पर्वत
फ़ज़ीहत=बुराई करना
फ़त्ताह=प्रकट करने वाला
फरंग=तलवार

फरह=शुभ
फ़हम=नया, शक
फहीम=जानकारी
फ़ाम=समझ, ज्ञान
फ़ाश=गुप्त बात का प्रकट होना
फाँसें=किरण
फितनी=उत्पत्ति
फेरोज=बहमनी शासक फेरोज़शाह
बक़ा=अमर
बख़्त=भाग्य
बख्शायें=क्षमा करें
बज़्म=महफ़िल
बजकार=धृष्टता
बजिद=मजबूरन
बजो=उस वक़्त
बर्दा=आविष्कारक
बनी=जाति
बक़ल=वस्त्रों के प्रकार
बर्क़=बिजली
बर्ग=पत्ता
बर=पृथ्वी
बरस=अमूल्य
बलिक=यद्यपि
बशारत=खुश ख़बरी
बसर=आदमी
बसर=सिलसिले में
बसीर=देखनेवाला
बहर=दरया
बहरी=एक पक्षी
बहोड़=लौटना
बाई=बड़ा कुआ
बाज=तेरे सिवा, बिना
बातिन=गुप्त
बातिलुस्सिहर=मन्त्र को तोड़ना

बाद=हवा
बाब=द्वार
बाया=विचार किया
बार=फल
बाग=हवा
बालिग=युवक
बाव=बावर्ती, पगली
बाव=हवा
बासफ़ा=पाक, पवित्र
बाज़िल=अन्नदाता
बिथर=बड़ा
बिर=चमकना
बिलक्या=चतुरता में
बिलफ़ेल=इस वक़्त
बिस्मिल्ला=प्रारंभ अल्ला के नाम से
बुढ़्पन=बुढ़ापा
बुर्ज=घर, क्षेत्र
बुराक=घोड़े और ऊँट की शक्ल का एक पशु जो बहुत तेज़ जाता है
बुलहवस=लालची
बेकम=मूर्ख
बेमतन=बिना अभ्यास के
बेयात=कई प्रकार के
बेज़वाल=अवनति रहित
बेनियाज़ी=किसी के आगे हाथ न फैलानेवाला ईश्वर
बेपायां=अनन्त
बेस=दरवाज़ा, द्वार
बैट=बैठ
ब्याव=विवाह
भग्यौं=थक गया
भतरौं=बहुत
भान=बहन
भाव=चीज़, वस्तु

भिरकाने=फेंकने
भुईं=भूमि
भुली=भोली
भूमान=मर्यादा
मक़बात=प्रशंसा करना
मकर=ढोंग
मक़्सूद=विचार करके; इच्छा से
मग़म=दुःखी ( अरबी के मग़रम शब्द से)
मज़ाज़=मिज़ाज़ी; साधन
मज़ीद=ऊँचा ज्ञान वाला
मतलूब=इच्छित वस्तु
मता=दौलत
मर्ता=दृढ़
मद्दुआ=इच्छा
मन्धिर=[illegible]
मनाजात=दुआ करना
मबही=[illegible]
मबादा=शायद; सम्भवतः
मया=प्रेम, प्यार, माया
मर्ग=मौत
मर=मर्द
मरज़ान=एक पेड़
मलक फ़रिश्ता
मलालत=कष्टों के बाद
मलायक=फ़रिश्ता
मलून=शैतान
मलूल=दुःखी
मश्ताक=इच्छुक
मशक्क़त=मुसीबत
महतर=श्रेष्ठ
महतशम=बहुत बड़ा
महद=प्रशंसा
महर=प्रेम
महरम=जानकार, जिस से कोई बात गुप्त न हो
महशर=प्रलय
महाबत=धनी
महाल=मुश्किल, कठिन
माजिद=श्रेष्ठतम
माजिरत=क्षमा मांगना
मांदगी=बीमारी
मानी=बगदाद का प्रसिद्ध चित्रकार
माने=मना करनेवाला
माबूद=पैदा करनेवाला
मामूर=अपने काम में नियुक्त
मायावत=माया, ममता रखनेवाला
मारड्या=बाज़ार
मारिफ़त=इल्म, ज्ञान
माह=चाँद
माही=मछली
मिर्रीख़=मंगल तारा
मिश्क़=कस्तूरी
मिसकी=शान्त स्वभाव
मिहर=ममता
मुअख़्ख़र=अनन्त
मुजिज़ा=गुप्त बात
मुअम्मा=गुप्त
मुअल्ला=निराधार
मुअल्लिहनम=गुरु
मुआश=जीवन का सहारा
मुइज़=इज्ज़त देनेवाला
मुए=मरे
मुसहफ़=कुरान
मुक्क़दम=अनादि
मुक़रब=इज्ज़तवाले
मुक्क़मित=ताकतवर
मुक़्सिम=बटवारा करनेवाला

मुग़नी=निश्चिन्त
मुज़िल=ज़लील करनेवाला
मुजीब=दुआ को स्वीकार करने वाला
मुतरिब=गवैये
मुतीब=अमर
मुदा=प्रशंसा
मुदाम=सदा
मुनइम=नेकी देनेवाला
मुनअम=धनी
मुनाजात=ईश्वर से प्रार्थना करना
मुबदल=बदलना
मुबम=अस्पष्ट शब्दों में कहना
मुमीत=मारने वाला
मुलम्मा=सोने का पानी
मुलाने=मुल्ला
मुर्दे=मृत
मुशारे=तरखा
मुस्तईद=तैयार
मुस्ताक़ी=आकांक्षा रखना
मुस्तेज़ाब=स्वीकृत होना
मुसल्लम=पूरा
मुसल्ला=नमाज़ पढ़ने की दरी
मुहतशम=धनी
मुहरफ=आनन्दमयी
मुहसी=गिननेवाला
मुहामिन=नज़र रखनेवाला
मुही=जीवित करनेवाला
मेराज़=सीढ़ी
मेंहू=इत्र
मैख्वार=शराबी
मोकला=खाली
मोद=तैयारी
मौज=लहरें
मौज=इरादा

मौतक़द=श्रद्धालू
यता=इतना
याफ़तन=पाना
युसुफ=मिश्र के एक पैगम्बर
रकात=नमाज़ पढ़ना
रगत=खून
रज़ा=इच्छा
रज़ाक़=अन्नदाता
रंजानता=रंजीदा करता
रब्त=सालीक़
रब=पालनहार
रमाल=ज्योतिष
रशीद=नेक राह पर चलने वाला
रां=को
राजबट=राज पथ
राजोट=हुकुमत
राद=बिजली
राफ़े=उन्नति करने वाला
रास्त=सत्य
रिज़्क़=रोज़ी
रीच्छ=रीछ
रीज़=मैदान
रुकन=स्तम्भ
रुक़ा=कागज़
रुच=इच्छा
रुस्तम=ईरान का एक वीर योद्धा
रुसवाई=बदनामी
रूद=नदी
रूफ=मेहरबान
रेज़ा=कण, तिनका
ल्या=ले आया
लहंब=तलवार
लइ=बहुत
लई=चांद के चारों ओर का घेरा

लक़ा=ऊँचा
लग=एक
लतीफ=दूरदर्शी
लंग=लँगड़ा
लाफ़=झूठी प्रशंसा, अभिमान
लाले=एक फूल
ली=बहुत
लुक़मान=एक सर्वज्ञानी पैगम्बर
लुच=नगा
लुब्धाय=लुब्ध किया, मोहित करना
लोह=तख़्ती, स्लेट
वक़द=अवस्था
वकद=ताकीद करना
वदूद=मित्र
वरद=खुश तबियत
वला=अच्छा फल लाएगा
वली=सहायक
वस्ल=मिलन
वसली=एक प्रकार का चिकना काग़ज़
वसाक=साथ
वहहाब=दाता
वही=ईश्वर की दी हुई जानकारी
वाख्वाना=हाल
वारिस=परम्परा को बनाए रखने वाला
वाहिद=एक
विपान=चिपनी
विसाक़=आश्रित
वीन्त=वहीं
शफ़क़=प्राप्त होनी
शफ़क़कत=महरबानी
शताब=जल्द
शदन=होना
शदीद=सब से ज्यादा करनेवाला
शफाअत=ईश्वर की सिफारिश करने-वाला
शबाब=जवानी
शबिस्तान=संसार
शर्क=उत्तर दिशा
शर्जा=सिंह
शरजा=सिंह
शरफ़=इज्ज़त
शहबाज=बादशाह की तरह
शहाब=टूटता हुआ तारा
शाकिर=संबाददाता
शाद=प्रसन्न
शाब=चमकनेवाला, (अरबी के शहाब शब्द से)
शाम=सीरिया देश
शिकम=पेट
शिताब=जल्दी
शिताल=जल्दी
शीर=दूध
शुश्राजत=वीरता
शुकूर=गुरु बुज़ुर्गों की इज्ज़त करने-वाला
शुजाअत=वीरता
सई=प्रयत्न
सँधर=फंसना
सकसी=सकेगा
सज़ावर=लायक़
सग=कुत्ता
सगट=एक साथ
सटती=फेंकती
सता=प्रशंसा
सत्तार=अपराध क्षमा करनेवाला
सद=प्रेम
संबक=छोटी किश्ती, नाव

सफ़्क़=छत्त
सफ=जमात, गिरोह
सबील=प्रयत्न
सम=सम्मुख
समद=समुद्र
समा=आकाश
समी=श्रोता
समो=ताल देना
सरक=ज्ञाल
सरनविश्त=भाग्य का लिखा
सरअफ़राज=सेवा में
सरफ़राज़=दान; अहसान
सरु=सरोवर, सरु का वृक्ष
सरोदा=गायन
सलाम=रक्षक
सलासत=सुन्दर पद
सलीमी=नेकी
सबा=सौगन्ध
सहरा=रेगिस्तान
साकिन=निवास
साद=शुभ
सारने=अहसान मानना ज़रूरी है
सालिम=सब
सिफतें=गुण
सिफरील=एक फरिश्ता
सियासत=न्याय करके
सीन=घटनाएँ
सीम=चाँद
सुकिया=सुखी
सुखनगो=बात कहनेवाला
सुन्ना=सोना
सुंबला=एक नक्षत्र
सुम्बुल=एक फूल
सुम्बुलिस्तान=फूलों का बाग़
सुम=उदाहरण
सुल्स=उदाहरण (?) अच्छा
सुलेमान=एक पैगम्बर
सुरुरु=खुश रहना
सूं=सौगन्ध, क़सम
सूसन=पाना, प्राप्त करना
सेयुम=तीसरा
सोस्या=सीतना
सोसने=सोगने
सोसे=सहन किए
हई=अमर
हक़=ज़ाहिर बातिन की खबर रखने
वाला
हकीम=हुकुम करनेवाला
हज़=स्वाद
हंड=दुःख
हफ्त=सात
हक़नो=नया
हक़ीज़=नज़र रखनेवाला
हबीब=मित्र
हम=मुक़ाबले
हयात=जीवन
हरम=मकान का ज़नानी भाग
हलीम=ऊँची ज़ातवाला
हलीमी=कृपा
हवैदा=ज़ाहर
हश्म=क़िला; सेवक
हाजत=आवश्यकता
हातिफ़=एक फरिश्ता जो गुप्त स्थान से
आवाज़ देता है
हादी=मार्गदर्शक
हाफ़िज़=देखनेवाला
हाल=क्रोध
हिमानी=थैली

हिर्स=स्वार्थ
हिल्म=शान्ति
हिलम=दया
हिस=जानकारी
हीडे=मांस, गोश्त
हुत्र=एक पक्षी
हुजरे=मकान का एक हिस्सा
हुमा=एक पक्षी
हुरमत=इज़्ज़त, प्रतिष्ठा
हैफ़=अफसोस
हैफी=अफसोस
होले=ओले